महाबंध

के

त्रुटित अंश

संशोधक

डॉ. उज्ज्वला दि. शहा

एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच., डी.जी.पी.

संपादक

पं. दिनेशभाई शहा

एम.ए., एल.एल.बी.

मुद्रक

श्री. विनोद सावला

मेरी बात

ॐ नम: सिद्धेभ्य:

तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की दिव्यध्वनि को ग्रहण कर गणधरदेव ने द्वादशांग वाणी की रचना की। बारह अंग और अंगबाह्य चौदह प्रकीर्णकों की यह रचना मौखिक परंपरारूप में विशेष ज्ञानी मुनीन्द्रों की चमत्कारिणी स्मृति के रूप में विद्यमान थी जो कालांतर में हीन होती गयी। अंगों और पूर्वों के एकदेश ज्ञाता धरसेनाचार्य के ख्याल में यह बात आ गयी कि अब यह ज्ञानधारा भी लुप्त होने की विकट स्थिति आ गयी है। उन्होंने दो पात्र शिष्यों को इनका ज्ञान कराया, वे थे मुनिराज पुष्पदंत आचार्य और भूतबलि आचार्य। इन दोनों मुनिवरों ने षट्खण्डागम की रचना की जो श्रुतपंचमी के दिन पूर्ण हुयी थी। षट्खण्डागम हमारा प्रथम श्रुतस्कंध है। हर साल श्रुतपंचमी के दिन हम धरसेनाचार्य की दूरदृष्टिता एवं ज्ञान को तथा पुष्पदंत आचार्य और भूतबलि आचार्य की बुद्धि की विचक्षणता को जरूर याद करते हैं, उनके द्वारा रचित तथा परंपरा से रचित द्रव्यश्रुत की पूजन करते हैं।

नाम के अनुसार षट्खण्डागम के छह खण्ड हैं - (१) जीवस्थान (२) खुद्दाबंध (क्षुद्रकबंध) (३) बंधस्वामित्व (४) वेदनाखण्ड (५) वर्गणाखण्ड (६) महाबंध। जीवस्थान में आठ अधिकार हैं - (१) सत्प्ररूपणा (२) द्रव्यप्रमाणानुगम (३) क्षेत्रानुगम (४) स्पर्शनानुगम (५) कालानुगम (६) अंतरानुगम (७) भावानुगम (८) अल्पबहुत्वानुगम। इन्हींको आठ अनुयोगद्वार यानी विशिष्ट विषय के अधिकार कहते हैं। अनुगम का अर्थ है यथार्थ ज्ञान। इनमें से सत्प्ररूपणा की रचना पुष्पदंत आचार्यकृत है। जीवस्थान के शेष सात अधिकार और शेष पांच खण्डों की रचना भूतबलि आचार्यकृत है।

पुष्पदंत आचार्य ने १७७ सूत्रों की रचना की, जिसे 'विंशति' सूत्र कहते हैं क्योंकि इसमें जीव की बीस प्ररूपणाओं का कथन किया है। वे इस प्रकार हैं - गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, १४ मार्गणा और उपयोग। इसीको सत्प्ररूपणा कहते हैं। पुष्पदंत आचार्य ने जिनपालित मुनी को यह पढ़ाया और इन सूत्रों को लिखितरूप से जिनपालित मुनी द्वारा भूतबलि आचार्य के पास भेजा। भूतबलि आचार्य ने शेष जीवस्थान और शेष पांचों खण्डों को लिपिबद्ध कराया -

ग्रंथरूप रचना की। ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन भूतबलि आचार्य ने अंकलेश्वर में चतुर्विध संघ के साथ इस द्रव्यश्रुत की पूजन की।

षट्खण्डागम के छह खण्डों में से पांच खण्डों पर आचार्य वीरसेनस्वामी ने 'धवल' नाम की टीका लिखी जो 'धवला' नाम से भी जानी जाती है। इसकी १६ पुस्तकें हैं पहला खण्ड जीवस्थान है, उसके प्रथम अधिकार सत्प्ररूपणा पर धवला पुस्तक १ और पुस्तक २ बनी है। दूसरा अधिकार है द्रव्यप्रमाणानुगम अर्थात् संख्याप्ररूपणा जिसकी टीका के रूप में धवला पुस्तक ३ बनी है। तीसरा, चौथा और पांचवां अधिकार है क्षेत्रानुगम, स्पर्शनानुगम और कालानुगम; धवला पुस्तक ४ में इनकी टीका है। धवला पुस्तक ५ में अंतरानुगम, भावानुगम और अल्पबहुत्वानुगम इन तीन अधिकारों पर टीका है। धवला पुस्तक ६ चूलिका के रूप में है। अभी तक जो विषय आये हैं तथा उनसे संबंधित अन्य विषयों को अधिक स्पष्ट करने के लिये आचार्य वीरसेनस्वामी ने इसकी रचना की है।

षट्खण्डागम का दूसरा खण्ड है खुद्दाबंध अर्थात् क्षुद्रकबंध। इसकी टीका के रूप में धवला पुस्तक ७वीं की रचना हुयी है। तीसरे खण्ड का नाम है बंधस्वामित्व और उसकी टीका है धवला पुस्तक ८ जिसका नाम है बंधस्वामित्वविचय। चौथे खण्ड का नाम है वेदनाखण्ड और उसकी टीका है धवला पुस्तक ९, १०, ११ और १२। पांचवें खण्ड का नाम है वर्गणाखण्ड और उसकी टीका है धवला पुस्तक १३, १४, १५ और १६। छठे खण्ड का नाम है महाबंध जिसकी कोई टीका उपलब्ध नहीं है। यह संपूर्ण मूल रचना भूतबलि आचार्य की है। इसीका दूसरा नाम महाधवल है।

धवलग्रंथ या धवला की १६ पुस्तकें षट्खण्डागम के पांच खण्डों की टीका है। जयधवल भी आचार्य वीरसेनस्वामी कृत टीका है जो गुणधर आचार्यकृत कषायपाहुड और यतिवृषभाचार्यकृत चूर्णिसूत्र की टीका है। उसकी भी १६ पुस्तकें हैं। उनमें मात्र मोहनीय कर्म की बहुत विस्तृत चर्चा है।

धवल, जयधवल और महाबंध (महाधवल) हमारे सिद्धांत ग्रंथ हैं। १६ + १६ + ७ = ३९ ग्रंथ करणानुयोग के महान ग्रंथ हैं। इन षट्खण्डागम के विशेष ज्ञानी को सिद्धांत चक्रवर्ती कहते हैं। इन्हीं के आधार से आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती ने गोम्मटसार-जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, लब्धिसार-क्षपणासार ग्रंथों की रचना की है।

पंडित टोडरमलजी ने इन्हीं ग्रंथो के आधार से ढूंढ़ारी भाषा में २५०-३०० वर्ष पहले की हिन्दी भाषा में उनकी टीका लिखी है जो सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, लब्धिसार-क्षपणासार नाम से प्रसिद्ध है।

हमारा - मेरा और मेरे पति (पंडित दिनेशभाई शहा) का करणानुयोग के अभ्यास में प्रवेश इन्हीं ढूंढ़ारी ग्रंथों से हुआ। इ.स. १९७५ में हम जैन तत्त्वज्ञान से सही अर्थ में परिचित हुये। पूज्य श्री कानजीस्वामी तथा उनके शिष्य - अनेक विद्वत्गण के संपर्क में हम आये और सच्चे धर्म का स्वरूप ख्याल में आया। हम दोनों ने अनेक शिबिरों एवं व्याख्यानमालाओं के द्वारा अध्ययन चालू रखा। १ अगस्त १९९२ से हम दोनों ने अपने-अपने व्यवसायों से पूर्ण निवृत्ति लेकर प्रतिदिन आठ - साढ़े आठ घंटे पढ़ना प्रारंभ किया। हम दोनों मिलकर स्वाध्याय करते थे। इसीके साथ पंडित दिनेशजी ने सामूहिक स्वाध्याय प्रारंभ किया।

इ.स. १९९३ में हमने सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड पढ़ना प्रारंभ किया। शुरुआत में कठिन तो लगा मगर मेरे हठ के कारण पंडित दिनेशजी ने भी साथ दिया और हमने तीनों ग्रंथ आद्योपांत पढ़े। उसके पश्चात् हमारे घर पर ही मैंने रोज डेढ़ घंटे सामूहिक स्वाध्याय में भी पढ़ाये। ब्र. विमलाबहनजी से हमें तीनों ग्रंथों के 'अर्थसंदृष्टि अधिकार' प्राप्त हुये, उसके झेरोक्स करके बाइंडिंग कराके हमने २२ सेट्स बनाये और उनका भी सामूहिक स्वाध्याय किया।

इ.स. २००३ के नवम्बर महीने में हमने 'धवला' पर स्वाध्याय करना निश्चित किया। केवल उनका नाम ही सुना था, ना ग्रंथ को सुना था ना ही पढ़ा था। उसके भी १६-१७ सेट्स मंगवाकर स्वाध्याय शुरू किया। मैंने भी पहले पढ़ा नहीं था मगर सीधा पढ़ाना प्रारंभ किया। कैसा सहज योग बनता है कि धवला स्वाध्याय शुरू होनेवाला है सुनकर डॉ. विसारिया पति-पत्नि ने नया कॉम्प्यूटर लाकर हमारे घर पर रखा ताकि धवला प्रवचनों की रेकॉर्डिंग हो सके। हम उसमें बिलकुल अनभिज्ञ थे मगर उनके लड़के - जय ने आकर मुझे सब सिखाया।

इ.स. २००३ से इ.स. २०१४ तक ११ साल में हम सब स्वाध्यायियों ने धवल की १६ पुस्तकें, जयधवला की १६ पुस्तकें और महाबंध के ७ पुस्तकों का आद्योपांत स्वाध्याय किया। हां, इस दौरान हर साल तीन महीने हम अमरिका में प्रवचनार्थ जाते थे। वहां १०-१० सेंटर्स में ८-८ दिन हम दोनों मिलकर प्रतिदिन ६-६ घंटे

प्रवचन करते थे। इ.स. २००६ में मैंने सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड एवं अर्थसंदृष्टि का ढूंढ़ारी से हिन्दी में अनुवाद किया। उसके बाद कर्मकाण्ड और लब्धिसार का भी अनुवाद करके इन सभी ग्रंथों की प्रूफ रीडिंग, प्रकाशन, वितरण आदि का काम हम दोनों ने बड़े उल्लास के साथ किया।

इन हिन्दी सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका के तीनों ग्रंथों को एवं उनकी अर्थसंदृष्टि अधिकारों को मैंने हमारे शाम के स्वाध्याय में सिखाया, सुबह डेढ़ घंटे तो धवलादि का स्वाध्याय चलता ही था। शाम को पंडित दिनेशजी दो घंटे द्रव्यानुयोग के ग्रंथ पढ़ाते हैं, उन स्वाध्यायियों के लिये मैंने इन ग्रंथों को पढ़ाया। इसतरह इन ग्रंथों को ४-४ बार मैंने आद्योपांत पढ़ाया। इतना ही नहीं, इन ग्रंथों पर तथा उनके एक-एक विषय पर मैंने देवलाली में २५-३० शिबिर लिये। इन सबका मुझे धवलादि ग्रंथों के जटिल विषय को समझने में बहुत लाभ हुआ।

हम तो भाग्यवान हैं कि हमें ऐसे समर्पित स्वाध्यायी मिले कि उनके साथ चारों अनुयोगों के बड़े-बड़े ग्रंथों का हमारे यहां आद्योपांत स्वाध्याय हो चुका। जब हमने महाबंध का स्वाध्याय शुरू किया था तब पहली पुस्तक की शुरुआत ही त्रुटित अंश से हुयी। जहां त्रुटित अंश आता, वहां चालू विषय छोड़कर आगे बढ़ना पडता। अनेकों बार ऐसा होता गया। तीसरी पुस्तक और छठवीं पुस्तक में भी अनेक बार त्रुटित अंश आये। कहीं कहीं तो अनेक अनुयोगद्वार (अधिकार) नष्ट हो गये हैं।

करणानुयोग के इन सिद्धांत ग्रंथों की एक परिपाटी होती है, एक शैली होती है, किसी भी विषय को विवक्षित क्रम से समझाया जाता है। उसमें भी २४-२४ अनुयोगद्वार होते हैं। उसमें 'ओघ से' अर्थात् सामान्य से कथन और 'आदेश से' अर्थात् मार्गणाओं की अपेक्षा से कथन आता है। उसमें प्रथम सभी अधिकार मूलप्रकृतियों पर समझाये गये हैं और बाद में वे उत्तरप्रकृतियों पर समझाये गये हैं।

जब हम छठवीं पुस्तक के एक त्रुटित अंश तक पहुंचे तब मुझे विकल्प आया और ऐसा विश्वास हुआ कि इस त्रुटित अंश पर विचार करके और सामूहिकरूप से चर्चा करके इसे लिखें। हमारे सभी स्वाध्यायी भी तत्परता से इसमें सहभागी हुये। एक-एक वाक्य पर शंका-समाधान चलता, मैं कहीं मूलप्रकृतियों के आधार से, कहीं पूर्व पुस्तकों के आधार से इसका समाधान करके एक-एक वाक्य बोलती थी, मैं लिखती थी और अन्य सभी स्वाध्यायी भी लिखते थे।

जैसे जैसे आगे पढ़ते गये वैसे वैसे उस-उस विषय संबंधी पूर्व में छूटे हुये त्रुटित अंश ढूंढ़ निकालते गये। यह एक सुंदर अनुभव था, बुद्धि को चुनौति थी, सहाध्यायियों के प्रश्नों के समाधान के लिये 'महाबंध' के पूर्वपठित पुस्तकों का बारंबार अवलोकन होता था। इस विषय की सूक्ष्मता एवं गहनता समझनेवाले हम आठ-दस स्वाध्यायी इस पर चर्चा कर सकते थे।

इस पद्धति से छठवीं, सातवीं, तीसरी और आखिर में पहली पुस्तक के त्रुटित अंश ढूंढ़ते हुये इ.स. २०१४ में हमारा महाबंध का प्रथम बार स्वाध्याय संपन्न हुआ।

अब इनको सुचारुरूप से क्रम से लिखने की आवश्यकता थी। इनका डीटीपी - टाईप सेटिंग का महत्वपूर्ण कार्य हमेशा की तरह जिनवाणी के लिये समर्पित मुमुक्षु श्री विनोदभाई सावला ने अत्यंत मेहनत से किया। उसकी दो-दो बार प्रूफ रीडिंग भी हुयी।

इस दौरान मैंने अनेक विद्वानों-त्यागियों के यहां पूछताछ की, ताकि इसे कोई ठीक तरह से जांचे, इसमें कोई त्रुटियां हो उसे ठीक करावें। परंतु कहीं कहीं इन ग्रंथों का केवल वांचन हुआ है, हमारे यहां जैसा विस्तार सहित चर्चा करके वहां ऐसा क्यों लिखा है इसकी कारणमीमांसा होती है, वैसा कोई हमें नहीं मिला। मैंने ही मूल ग्रंथों का इन त्रुटित अंशों सहित दुबारा अध्ययन किया क्योंकि अब विषय पढ़कर १०-१२ महीने बीत चुके थे।

कहीं कहीं मुझे ही कुछ सुधार-सुझाव आवश्यक लगे, विनोदभाई सावला ने भी उन्हें यथास्थान दुरुस्त किया है। इतनी कोशिश के बाद भी मेरी अल्पबुद्धि-असावधानी के कारण कुछ त्रुटियां रह गयी हो और विशेष ज्ञानी (अभ्यासी) के ख्याल में आये तो अवश्य बता देना।

इ.स. २०१४ से २०१८ तक हमने द्वितीय बार धवला की १६ पुस्तकों का आद्योपांत सामूहिक स्वाध्याय किया। इ.स. २०१८ में हमने महाबंध यानी महाधवला का द्वितीय बार सामूहिक स्वाध्याय प्रारंभ किया। इस बार हमारे सबके हाथ में त्रुटित अंश के A4 साइझ के २०७ पृष्ठों की बाइंडिंग की हुयी पुस्तकें थी। उस कारण अब किसी रुकावट बिना अखंड धारा से स्वाध्याय चला। उस समय त्रुटित

अंशों को भी दुबारा अच्छी तरह से जांचा गया। आवश्यक लगा वहां और भी मॅटर लिखकर जोड़ा गया।

कोरोना महामारी के कारण हमारा सामूहिक स्वाध्याय बंद पड़ गया। महाबंध के त्रुटित अंशों को वेबसाइट पर डालने की बात भी रह गयी - अन्य गतिविधियों में भूल गयी। क्योंकि कोरोना के इस काल में निशा शेठ के निर्देशन में हमारी स्क्राइब टीम ने जैन सिद्धान्त (पृष्ठ ११००) और यू.एस की टीम सहित निशा की टीम ने पंचपरावर्तन (पृष्ठ ७२८) पुस्तकों का मॅटर तैयार किया। उन्हें पुन: हिन्दी में डीटीपी कराके हम दोनों ने इनके प्रूफ रीडिंग, प्रिंटिंग, प्रकाशन एवं नि:शुल्क वितरण का काम सम्हाला।

मई २०२३ में महाबंध के त्रुटित अंशों को PDF के रूप में वेबसाइट पर अपलोड करने का निर्धार किया। श्री विनोदभाई सावला ने अत्यंत शीघ्रता से डीटीपी का काम करके आवश्यक सुधार करके २१९ पृष्ठों की पीडीएफ बनाकर दी। उनके जितने आभार मानेंगे उतने कम ही है।

पहले तो मैंने दो पृष्ठों में ही 'मेरी बात' लिखी थी। निशा शेठ के आग्रह से उसे विस्तार से लिखा, उसका दुबारा डीटीपी व पीडीएफ का काम भी निशा ने ही सम्हाला है।

स्वाध्याय से लेकर प्रूफ रीडिंग तक, अनेक बातों का व्यवस्थापन एवं दूरदृष्टिता के लिये पंडित दिनेशजी का अनमोल सहकार्य मुझे हमेशा मिलता रहा है। पुस्तकों का लिखना, अनुवाद करना, शिबिर लेना इन बातों के लिये मुझे हमेशा प्रोत्साहित करते हैं। शिबिरों की व्यवस्था, पुस्तकों की प्रूफ रीडिंग, प्रिंटिंग, प्रकाशन, वितरण आदि में उनकी कार्यकुशलता एवं उल्लास युवाओं को भी लज्जित करा देवे ऐसा है।

मैं तो अपना भाग्य समझती हूं कि हमें ऐसे स्वाध्यायी मिले जो अनेक सालों से प्रतिदिन हमारे साथ स्वाध्याय करते रहे। चेंबूर के श्री अरविंद दोशी, अश्विनभाई शहा, प्रेरणाबेन, उनकी बहू तेजल, मयंक गांधी, लक्ष्मी शहा, विनोदभाई सावला, प्रतिभा अष्टीकर, मंदा मेहता, जे. पी. दोशी, स्वातीबहन, स्वयं दिनेशजी तथा और भी अनेक लोगों ने अनेक सालों से हमें साथ दिया है। हमारे सायंकालीन

स्वाध्यायियों की नामावली तो बहुत बड़ी है। मैं उन सबकी आभारी हूं कि अत्यंत कठिन विषयों की चर्चा में उन्होंने बड़े उत्साह और लगन के साथ भाग लिया है। महाबंध के त्रुटित अंश की चर्चा में इन सहाध्यायियों का बहुत बड़ा योगदान है।

अब दुबारा इसका अवलोकन करती हूं तो आश्चर्य लगता है कि यह जटिल, अविश्वसनीय कार्य कैसे सम्पन्न हुआ ? तब अमृतचन्द्राचार्य के शब्द कानों में गूंजते हैं कि, "अरे, यह तो शब्दों की रचना - अक्षर और पदों की रचना उनकी स्वयं की योग्यता से हुयी है। तू मोह में मत नाच !"

डॉ उज्ज्वला शहा

श्रुतपंचमी, विक्रम संवत २०८० (२४ मई २०२३)

❖

विषय-सूची

महाबंध पुस्तक	**पृष्ठ**
पुस्तक १ पृष्ठ २५	१
पुस्तक १ पृष्ठ ४९	१ से ८
पुस्तक १ पृष्ठ ५५	९ से ११
पुस्तक ३ पृष्ठ १३९	११
पुस्तक ३ पृष्ठ ४७३	११ से ३३
पुस्तक ३ पृष्ठ ४७४	३४
पुस्तक ३ पृष्ठ ४९४	३४ से ४०
पुस्तक ६ पृष्ठ ४८	४० से ७४
पुस्तक ६ पृष्ठ ८२	७५ से १०२
पुस्तक ६ पृष्ठ १५४	१०२ से १८३
पुस्तक ६ पृष्ठ १८२	१८३ से १९६
पुस्तक ७ पृष्ठ १५०	१९६ से २१५

महाबंध पुस्तक १, पृष्ठ २५ त्रुटित अंश के बाद –

अवधिज्ञानावरण के अधूरे निरूपण से प्रारंभ होता है । इस प्रकरण का नाम है 'प्रकृतिसमुत्कीर्तननिरूपणा' ।

यहां पाठकों के सुविधा के लिए सम्पादक महोदयजी ने ज्ञानावरण की शेष प्रकृतियों का भी यहां वर्णन किया है ।

धवला पुस्तक ६ में भूतबली आचार्यकृत ही पहली चूलिका भी 'प्रकृतिसमुत्कीर्तन चूलिका' है । वह पूर्ण ही यहां पठनीय है । वहां प्रथम आठ मूलप्रकृतियों के नाम व स्वरूप का वर्णन किया है (धवला पुस्तक ६, पृष्ठ ५ से १४, सूत्र ३ से १२) ।

पश्चात् उत्तरप्रकृतियों का कथन करने के लिए लिखते हैं, ''मेधावी जीवों के अनुग्रहार्थ संग्रहनय का अवलंबन ले प्रकृतिसमुत्कीर्तन करके अब मन्दबुद्धि जनों का अनुग्रह करने के लिए व्यवहारनयरूप पर्याय से परिणत आचार्य उत्तरसूत्र कहते हैं ।''

आगे सूत्र १३ से सूत्र ४६ तक अर्थात् धवला पुस्तक ६ के पृष्ठ १४ से पृष्ठ ७८ तक सभी उत्तरप्रकृतियों की प्ररूपणा की हुयी है, जो वहां से मूल में पठनीय है ।

–०–

प्रकृतिसमुत्कीर्तन के पश्चात् महाबंध पुस्तक १ में पृष्ठ ३७ पर बंधस्वामित्वविचयप्ररूपणा प्रारंभ होती है । धवला पुस्तक ८ जो षट्खण्डागम का तृतीय खण्ड है वह भी बंधस्वामित्वविचय है । ये ही सूत्र वहां पाये जाते हैं । पृष्ठ ४६ पर ओघ से कथन करनेपर पृष्ठ ४७ से आदेश से नारकियों में बताया है, पृष्ठ ४८, ४९ पर तिर्यंचों में बताया है ।

पंचेंद्रिय तिर्यंच अपर्याप्तों में बताकर पृ.४९ से त्रुटित अंश प्रारंभ होता है ।

सम्पादक महोदयजी के द्वारा पृष्ठ ५० से ५४ तक विशेषार्थ के रूप में

इसपर प्रकाश डाला गया है । पृष्ठ ५५ से एक जीव की अपेक्षा 'कालप्ररूपणा' के प्रकरण में आदेश से नारकियों की प्ररूपणा लिखी हुयी है, जिसमें शुरुकी ओघ प्ररूपणा त्रुटित अंश में चली गयी है । अर्थात् त्रुटित अंश है बंधस्वामित्वविचय मनुष्यगति से लेकर शेष मार्गणाओं में तथा कालप्ररूपणा ओघ से । चूंकि विशेषार्थ में गोम्मटसार कर्मकाण्ड के आधार से कहां कितनी प्रकृतियां बंधती हैं इसपर प्रकाश डाला है परंतु मैं यहां 'बंधस्वामित्वविचय' की पद्धति से शेष मार्गणाओं में लिख रही हूँ –आधार और संदर्भ है धवला पुस्तक ८ – बंधस्वामित्वविचय। तथा कालप्ररूपणा भी ओघ से लिखूंगी ।

बंधस्वामित्वविचय

मनुष्यों में मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में तीर्थंकर प्रकृति तक ओघ के समान भंग है । विशेषता इतनी है कि द्विस्थानिक (पहले दो गुणस्थानों में बंधनेवाली) प्रकृतियों और अप्रत्याख्यानावरण की प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के समान है । मनुष्य अपर्याप्तों की प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तों के समान है ।

देवगति में देवों में ज्ञानावरणादि, स्त्यानगृद्धि आदि, तीर्थंकर, मनुष्यायु का भंग प्रथम नरक के नारकी के समान है । मिथ्यात्व दण्डक भी इसीप्रकार है, विशेषता यह है कि उसमें एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप प्रकृतियों को कहना चाहिए।

सौधर्म–ईशान में इसीप्रकार भंग है । भवनत्रिक में तीर्थंकर बिना इसीप्रकार भंग है । सनत्कुमारादि सहस्रार तक प्रथम नरक के नारकी के समान भंग है।

आनतादि में तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचायु, उद्योत बिना शेष भंग इसीप्रकार है । अनुदिश, अनुत्तर में केवल चौथा ही गुणस्थान है वहां ज्ञानावरणादि दण्डक कहना चाहिए ।

सर्व एकेन्द्रिय, सर्व विकलेन्द्रिय, सर्व स्थावरकायिक जीवों की प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धिअपर्याप्तकों के समान है । इतना विशेष है कि तेजकायिक और वायुकायिकों में मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र प्रकृतियां नहीं हैं।

पंचेन्द्रियद्विक तथा त्रसद्विक का भंग ओघ के समान है ।

योगमार्गणानुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, काययोगियों में ओघ के समान भंग है । विशेषता यह है कि सातावेदनीय का अबंधक नहीं है । (क्योंकि

ओघ में अयोगकेवली को अबंधक कहा था, यहां योग सयोगकेवली तक ही है ।)

औदारिक काययोगियों में मनुष्यों के समान भंग है ।

सातावेदनीय का भंग मनोयोगियों के समान है ।

औदारिकमिश्र काययोगियों में १ ला, २ रा, ४ था और १३ वां गुणस्थान है । ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, मिथ्यात्व दण्डक, औदारिक काययोगी के समान है । विशेषता यह है कि तिर्यंचायु, मनुष्यायु का बंध मात्र पहले गुणस्थान में मिथ्यात्व दण्डक के साथ कहना चाहिए, मिथ्यात्व दण्डक में नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरकायु बिना कहना चाहिए । देवगतिचतुष्क और तीर्थंकर प्रकृति के असंयत सम्यग्दृष्टि ही बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

वैक्रियिक काययोगियों की प्ररूपणा देवगति के समान है । वैक्रियिकमिश्र काययोगियों की प्ररूपणा देवगति के समान है, इतनी विशेषता है कि यहां मनुष्यायु, तिर्यंचायु का बंध नहीं है और गुणस्थान १ ला, २ रा तथा ४ था है ।

आहारक काययोगी, आहारकमिश्र काययोगी जीवों में प्रमत्तसंयत बंधक हैं, शेष जीव अबंधक हैं । यहां प्रकृतियां जानकर कहना चाहिए ।

कार्माण काययोगियों में १ ला, २ रा, ४ था गुणस्थान है । यहां आयु का बंध नहीं है । देवगति में जो ज्ञानावरणादि का भंग बताया उसके बंधक १ ले, २ रे, ४ थे गुणस्थानवर्ती हैं । स्त्यानगृद्धि दण्डक का भंग (तिर्यंचायु बिना) देवगति के समान है । मिथ्यात्व दण्डक (नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरकायु बिना) मनुष्य-तिर्यंचों के समान है ।

देवगतिपंचक (देवगतिद्विक, वैक्रियिकद्विक, तीर्थंकर) के असंयत सम्यग्दृष्टि (मनुष्य) बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

सातावेदनीय के मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, असंयत सम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

वेदमार्गणानुसार स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी जीवों में ओघ के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, सातावेदनीय, ४ संज्वलन,

पुरुषवेद, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र, ५ अंतराय के मिथ्यादृष्टि से अनिवृत्तिकरण उपशमक, क्षपक तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

अपगतवेदियों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र और ५ अंतराय के अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं । सातावेदनीय के अनिवृत्तिकरण से सयोगकेवली तक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं । ४ संज्वलन के अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

कषायमार्गणा में क्रोधकषायी जीवों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, सातावेदनीय, ४ संज्वलन, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र, ५ अंतराय के मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के उपशमक, क्षपक तक बंधक हैं, अबंधक कोई नहीं हैं । शेष सभी प्रकृतियों की प्ररूपणा ओघ के समान है ।

मानकषायी और मायाकषायी जीवों में इसीप्रकार हैं, इतनी विशेषता है कि यहां क्रमशः ३ संज्वलन और २ संज्वलन कहना चाहिए ।

लोभकषायी जीवों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, सातावेदनीय, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र, और ५ अंतराय के मिथ्यादृष्टि से लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक और क्षपक तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं । शेष प्ररूपणा ओघ के समान है ।

अकषायी जीवों में सातावेदनीय के उपशांतकषाय, क्षीणकषाय और सयोगकेवली बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

ज्ञानमार्गणा में मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवों में ५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, साता-असातावेदनीय, १६ कषाय, ८ नोकषाय, तीन आयु, तीन गति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक-वैक्रियिक-तेजस-कार्माण शरीर, ५ संस्थान, औदारिक-वैक्रियिक आंगोपांग, ५ संहनन, वर्णचतुष्क, तीन गत्यानुपूर्वी, अगुरुलघुचतुष्क, दो विहायोगतियां, त्रसचतुष्क, स्थिरादि छह युगल, निर्माण, नीचगोत्र, उच्चगोत्र और ५ अंतराय के मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

एकस्थानिक प्रकृतियों (मिथ्यात्व दण्डक) की प्ररूपणा ओघ के समान है।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में ओघ के एकस्थानिक और द्विस्थानिक प्रकृतियों का बंध नहीं है । शेष प्ररूपणा ओघ के समान है,

इतनी विशेषता है कि 'असंयतसम्यग्दृष्टि से' कहना चाहिए । इतनी विशेषता और है कि सातावेदनीय के असंयतसम्यग्दृष्टि से क्षीणकषाय तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

मनःपर्ययज्ञानियों में प्रमत्तसंयत से क्षीणकषाय तक गुणस्थान हैं । ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र, ५ अंतराय के प्रमत्तसंयत से सूक्ष्मसाम्पराय उपशमक, क्षपक तक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं । सातावेदनीय के सभी बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं । असातावेदनीय दण्डक के प्रमत्तसंयत बंधक हैं, शेष अबंधक हैं । तीर्थंकर प्रकृति के छठवें से आठवें गुणस्थान तक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं । शेष प्ररूपणा ओघ के समान है, सर्वत्र प्रमत्तसंयत से कहना चाहिए । केवलज्ञानियों में सातावेदनीय के सयोगकेवली बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

संयममार्गणा में संयतों में मनःपर्ययज्ञानियों के समान प्ररूपणा है, इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय के सयोगकेवली तक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

सामायिक-छेदोपस्थापनासंयतों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, सातावेदनीय, लोभसंज्वलन, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र, ५ अंतराय के प्रमत्तसंयत से लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं । ३ संज्वलन में उनकी बंधव्युच्छित्ति के बाद अबंधक हैं ।

शेष प्ररूपणा मनःपर्ययज्ञानियों के समान है ।

परिहारविशुद्धिसंयतों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, सातावेदनीय, ४ संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक-तेजस-कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वैक्रियिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और ५ अंतराय के प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ, अयशस्कीर्ति के प्रमत्तसंयत बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

आहारकशरीर, आहारक आंगोपांग के अप्रमत्तसंयत बंधक हैं, शेष अबंधक हैं।

सूक्ष्मसाम्परायसंयतों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, सातावेदनीय, यशस्कीर्ति,

उच्चगोत्र और ५ अंतराय के सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक और क्षपक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

यथाख्यातसंयतों में सातावेदनीय के उपशांतकषाय, क्षीणकषाय और सयोगकेवली बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

संयतासंयतों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, साता-असातावेदनीय, ८ कषाय, ७ नोकषाय, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तेजस व कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वैक्रियिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और ५ अंतराय के संयतासंयत बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

असंयतों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, साता व असातावेदनीय, १२ कषाय, ७ नोकषाय, दो गति (मनुष्य, देव), पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, वैक्रियिक, तेजस व कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, दो आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, वर्णचतुष्क, दो गत्यानुपूर्वी, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और ५ अंतराय के मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

एकस्थानिक और द्विस्थानिक प्ररूपणा ओघ के समान हैं । मनुष्यायु और देवायु के मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

तीर्थंकर प्रकृति के असंयत सम्यग्दृष्टि बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

दर्शनमार्गणा में चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवों की प्ररूपणा ओघ के समान है; इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय के मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

अवधिदर्शनी की प्ररूपणा अवधिज्ञानियों के समान हैं ।

केवलदर्शनी की प्ररूपणा केवलज्ञानियों के समान हैं ।

लेश्यामार्गणा में कृष्ण, नील, कापोत लेश्यावाले जीवों की प्ररूपणा असंयतों के समान है ।

तेजो और पद्मलेश्यावाले जीवों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, सातावेदनीय, ४ संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तेजस व कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वैक्रियिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और ५ अंतराय के मिथ्यादृष्टि से लेकर अप्रमत्तसंयत तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

तेजोलेश्या में मिथ्यात्वदण्डक की प्ररूपणा देवों के समान है, पद्मलेश्या में नारकी के समान है ।

आहारक शरीर और आहारक आंगोपांग के अप्रमत्तसंयत बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

तीर्थंकर प्रकृति के असंयत सम्यग्दृष्टि से लेकर अप्रमत्तसंयत तक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

शेष प्ररूपणा ओघ के समान है ।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में ओघ के समान प्ररूपणा है । इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय की प्ररूपणा मनोयोगियों के समान है तथा द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियों की प्ररूपणा आनतादि देवों के समान है ।

भव्यमार्गणा में भव्य जीवों की प्ररूपणा ओघ के समान है । अभव्यों में मिथ्यात्व में बंधयोग्य ११७ प्रकृतियों के सभी बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं।

सम्यक्त्वमार्गणा में सम्यग्दृष्टि और क्षायिक सम्यग्दृष्टि की प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानी के समान है । इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय के असंयत सम्यग्दृष्टि से लेकर सयोगकेवली तक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

वेदक सम्यग्दृष्टियों में ५ ज्ञानावरण आदि पीत, पद्मलेश्या में कही हुयी प्रकृतियों के तथा देवायु के असंयत सम्यग्दृष्टि से लेकर अप्रमत्तसंयत तक बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं ।

असातावेदनीय दण्डक के असंयत सम्यग्दृष्टि से प्रमत्तसंयत तक बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

अप्रत्याख्यानावरण दण्डक के असंयत सम्यग्दृष्टि बंधक हैं, शेष अबंधक हैं।

प्रत्याख्यानावरण ४ के असंयत सम्यग्दृष्टि और संयतासंयत बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

आहारक शरीर और आहारक आंगोपांग के अप्रमत्तसंयत बंधक हैं, शेष अबंधक हैं ।

उपशम सम्यग्दृष्टि में सर्व प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानी के समान है, इतनी विशेषता है कि जहां उपशमक व क्षपक कहा है, वहां उपशमक जानना चाहिए तथा सातावेदनीय के उपशांतकषाय तक बंधक कहना चाहिए । इतनी विशेषता और है कि इनके आयु का बंध नहीं हैं ।

सासादन सम्यग्दृष्टियों की प्ररूपणा मत्यज्ञानियों के समान है । यहां एकस्थानिक प्रकृतियां नहीं हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियों की प्ररूपणा असंयत के समान है ।

मिथ्यादृष्टि की प्ररूपणा अभव्य के समान है ।

संज्ञीमार्गणा में संज्ञी जीवों में ओघ के समान प्ररूपणा है, इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय की प्ररूपणा चक्षुदर्शनी के समान है ।

असंज्ञी जीवों में अभव्य के समान प्ररूपणा है ।

आहारमार्गणा में आहारक में ओघ के समान प्ररूपणा है, इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय के सभी बंधक हैं, अबंधक नहीं हैं । अनाहारक में कार्माण काययोगी के समान प्ररूपणा है । (१४ वें गुणस्थान को लेना ।)

बंधस्वामित्वविचय समाप्त होता है ।

–0–

त्रुटित अंश पुस्तक १ पृष्ठ ५५ –

प्रकृतिबंध में कालप्ररूपणा (एक जीव की अपेक्षा)

(प्रकृतिबंध में एक जीव की अपेक्षा)

कालानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से ध्रुवबंधी प्रकृतियों के तीन भंग हैं – अनादिअनंत, अनादिसांत और सादिसांत । यहां सादिसांत काल का कथन है ।

५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, १६ कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, ५ अंतराय का जघन्य बंधकाल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बंधकाल अर्धपुद्गलपरावर्तन है ।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, ४ जाति, आहारकद्विक, ५ संस्थान, ५ संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावरादि ४ (स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त), स्थिरादि ३ युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति), दुर्भग, दुस्वर, अनादेय का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय का उत्कृष्ट बंधकाल कुछ कम एक पूर्व कोटि है ।

पुरुषवेद का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल साधिक दो छासठ सागर (अंतर्मुहूर्त + दो छासठ सागर + पूर्वकोटी (क्षायिक के साथ)) है ।

तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी और नीचगोत्र का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल असंख्यातलोक है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, वज्रवृषभनाराच संहनन का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल ३३ सागर है ।

देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल साधिक ३ पल्य है (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य – क्षायिक सम्यग्दृष्टि)।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क का जघन्य बंधकाल एक

समय और उत्कृष्ट बंधकाल १८५ (२२+६६+६६+३१=१८५) सागर है ।

औदारिक शरीर का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल (अनंतकाल) है । औदारिक आंगोपांग का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल साधिक ३३ सागर (७वां नरक + पश्चात् १ अंतर्मुहूर्त) ।

समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल कुछ कम ३ पल्य अधिक दो छयासठ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति का जघन्य बंधकाल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बंधकाल साधिक ३३ सागर (कुछ कम १ पूर्वकोटी + ३३ सागर + कुछ कम १ पूर्वकोटी)।

४ आयु का जघन्य और उत्कृष्ट बंधकाल अंतर्मुहूर्त है ।

आदेश से नारकियों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, १२ कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, ५ अंतराय का जघन्य बंधकाल १०००० वर्ष और उत्कृष्ट बंधकाल ३३ सागर है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, अनंतानुबंधी ४, तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, नीचगोत्र का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल ३३ सागर है ।

मिथ्यात्व का जघन्य बंधकाल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बंधकाल ३३ सागर है ।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, ५ संस्थान, ५ संहनन, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि ३ युगल, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल अंतर्मुहूर्त है । दो आयु (तिर्यंच, मनुष्य) का भंग ओघ के समान है ।

पुरुषवेद, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र का जघन्य बंधकाल एक समय और उत्कृष्ट बंधकाल कुछ कम ३३ सागर है ।

यहां से आगे का कथन मूल पुस्तक में पृष्ठ ५५ पर है ।

–0–

महाबंध पु. ३ में जघन्य स्वस्थानबंधसन्निकर्ष प्ररूपणा में पृ. १३९ पर प्राकृत दूसरी पंक्ति में त्रुटित अंश ऐसा होना चाहिए – ।''एवं'' हिंदी में उसका अर्थ – पृ. १३९ पंक्ति ७वी – अधिक स्थिति का बंधक होता है । ''जिनका नियम से तंतुरूप से बंधक होता है '' तथा जिनका कदाचित् तंतुरूप से बंधक होता है उनका उसीप्रकार ''सन्निकर्ष जानना चाहिए ।''

महाबंध पुस्तक ३ में पृ. १३९ पर प्राकृत में ७वी पंक्ति में त्रुटित अंश ऐसा होना चाहिए ''पंचिदियतिरिक्ख अपज्जत्ता णिरयोघं'' –हिंदी में पैरेग्राफ २९३ में १२ वी पंक्ति में जानना चाहिए । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों का भंग सामान्य नारकियों के समान है ।

–0–

महाबंध पुस्तक ३ में उत्तरप्रकृति स्थितिबंध के 'वृद्धिबंध' नामक प्ररूपणा में स्पर्शनानुगम का कुछ अंश, काल, अंतर, भाव तथा अल्पबहुत्व का शुरु का ओघ तथा मार्गणाओं का कुछ अंश नष्ट हुआ है – त्रुटित अंश में चला गया है । वह निम्नप्रकार है –

पुस्तक ३, पृष्ठ ४७३, पैरेग्राफ ९५६

स्पर्शन अनुयोगद्वार

(उत्तरप्रकृति स्थितिबंध के वृद्धिबंध का नौवां अनुयोगद्वार)

शुक्ललेश्यावाले जीवों में अप्रत्याख्यानावरण ४, मनुष्यगति, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, मनुष्यगत्यानुपूर्वी के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों ने कुछ कम छह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इनके शेष पदों के बंधक जीवों ने भी कुछ कम छह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । देवगतिचतुष्क के ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित के बंधक जीवों ने कुछ कम छह बटे चौदह

राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इनके अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है (लोक का असंख्यातवां भाग)। मनुष्यायु के दो पदों के बंधक जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । देवायु के दो पदों के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है । ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, पुरुषवेद, सातावेदनीय, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र और ५ अंतराय की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने कुछ कम छह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इनके असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का भंग क्षेत्र के समान है, इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय, पुरुषवेद और यशस्कीर्ति के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों ने कुछ कम छह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । शेष सभी प्रकृतियों के सभी पदों के बंधक जीवों ने कुछ कम छह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । तीर्थंकर के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है । आहारकद्विक के सभी पदों के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है ।

अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी जीवों का भंग मत्यज्ञानी जीवों के समान है। इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यात्व का अवक्तव्य पद नहीं होता । इतनी विशेषता और है कि असंज्ञी जीवों में वैक्रियिकषट्क, देवायु, नरकायु के सभी पदों के तथा औदारिक शरीर के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का स्पर्शन लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ३७८) ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों के ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू और कुछ कम बारह बटे चौदह (७+५) राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, ५ संस्थान, ५ संहनन, दो विहायोगति, सुभग, दो स्वर और आदेय की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू और कुछ कम ग्यारह बटे चौदह (६+५) राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । तिर्यंचगतिद्विक, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक

जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह और कुछ कम बारह बटे चौदह (७+५) राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

साता आदि बारह परिवर्तमान प्रकृतियां और उद्योत प्रकृति के सभी पदों के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू और कुछ कम बारह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । दो आयु (मनुष्यायु, तिर्यंचायु), मनुष्यगतिद्विक और उच्चगोत्र के सभी पदों के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । देवायु के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है (लोक का असंख्यातवां भाग) । देवगतिचतुष्क की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने कुछ कम पांच बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है (लोक का असंख्यातवां भाग) । औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू और औदारिक शरीर के बंधक जीवों ने कुछ कम बारह बटे चौदह राजू तथा औदारिक आंगोपांग के बंधक जीवों ने कुछ कम बारह बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों ने कुछ कम पांच बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । साता आदि प्रकृतियों के सभी पदों के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह राजू क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इतनी विशेषता है कि देवगतिचतुष्क के सभी पदों के बंधक जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

इसप्रकार स्पर्शन समाप्त हुआ ।

–0–

कालानुगम

(उत्तरप्रकृति स्थितिबंध के वृद्धिबंध का दसवां अनुयोगद्वार – नाना जीवों की अपेक्षा काल)

(संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ४४८, परिमाण के आधार से) तथा (पुस्तक ३, पृष्ठ ४१७, एक जीव की अपेक्षा काल) तथा (पुस्तक २ पृष्ठ २०१, मूलप्रकृति में काल) कालानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ४ संज्वलन और ५ अंतराय की असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का कितना काल है ? सब काल है । दो वृद्धियों और दो हानियों के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

सातावेदनीय, पुरुषवेद, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र के बंधक जीवों का भंग ज्ञानावरण के समान है, इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का सब काल है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानावरण ४ और औदारिक शरीर की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का भंग ज्ञानावरण के समान है । इनके अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

निद्रा, प्रचला, प्रत्याख्यानावरण ४, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्ण चतुष्क, अगुरुलघु, उपघात और निर्माण के ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

तीन आयुओं के (मनुष्य, नरक, देव) अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इनके असंख्यातभागहानि के बंधक जीवों का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है । तिर्यंचायु के दोनों पदों के बंधक जीवों का सब काल है ।

वैक्रियिकषट्क की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का सब काल है ।

आहारकद्विक की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का सब काल है ।

तीर्थंकर प्रकृति की ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का सब काल है ।

शेष प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य का भंग सातावेदनीय के समान है ।

इसीप्रकार काययोगी, औदारिक काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, अचक्षुदर्शनी, भव्य और आहारक जीवों में अपने-अपने पदों के अनुसार जानना चाहिए ।

इसीप्रकार सामान्य तिर्यंच, औदारिकमिश्र काययोगी, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, तीन अशुभ लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी जीवों में अपने-अपने पदों के अनुसार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि औदारिकमिश्र काययोगी जीवों में देवगतिपंचक की ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है तथा अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

नारकियों में मनुष्यायु के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है; उसके असंख्यातभागहानि के बंधक जीवों का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । तिर्यंचायु के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है, उसके असंख्यातभाग-हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इसकी ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

शेष सभी प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि तथा परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

इसीप्रकार सब नारकी, देव और वैक्रियिक काययोगी जीवों के (अपने संभव प्रकृतियों के संभव पदों में) जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सर्वार्थसिद्धि में सब प्रकृतियों के ३ वृद्धि, ३ हानि तथा परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में अपनी-अपनी प्रकृतियों में जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मनुष्यायु के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है तथा असंख्यातभागहानि का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार नरकायु और देवायु का भंग है । (संदर्भ -भुजगार बंध में अवक्तव्य - पुस्तक ३, पृष्ठ ३८०)।

इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, सब विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, त्रस अपर्याप्त, बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त, बादर अग्निकायिक पर्याप्त, बादर वायुकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवों में अपनी-अपनी विशेषताओं सहित जानना चाहिए ।

सामान्य मनुष्यों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ४ संज्वलन और ५ अंतराय की असंख्यातगुणवद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । ३ वृद्धि, ३ हानि का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद का काल सर्वदा है ।

सातावेदनीय, पुरुषवेद, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि के बंधक जीवों का भंग ज्ञानावरण के समान है । इनके तथा शेष परिवर्तमान प्रकृतियों के ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित तथा अवक्तव्य पदों का भंग नारकियों के समान है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानावरण ४, प्रत्याख्यानावरण ४, निद्रा, प्रचला, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण के ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

वैक्रियिकषट्क, आहारकद्विक, तीर्थंकर के ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंच के समान है ।

देवायु, नरकायु के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है तथा असंख्यातभागहानि के बंधक जीवों का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनी में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जहां जिन प्रकृतियों की ३ वृद्धि और ३ हानि का उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है वहां संख्यात समय जानना चाहिए । मनुष्यायु, तिर्यंचायु का भंग देवायु के समान है ।

एकेन्द्रिय, वनस्पतिकायिक, निगोद, पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और सब सूक्ष्म जीवों में सभी प्रकृतियों के सभी पदों के (असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, अवस्थित और परिवर्तमान के अवक्तव्य) बंधक जीवों का काल सर्वदा है । इतनी विशेषता है कि मनुष्यायु का भंग ओघ के समान है (अग्निकायिक, वायुकायिक बिना) । (अवक्तव्य – १ समय से आवली का असंख्यातवां भाग; असंख्यातभागहानि – अंतर्मुहूर्त से पल्य का असंख्यातवां भाग)

पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस पर्याप्त जीवों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, ५ अंतराय की असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद का भंग

ओघ के समान है । शेष पदों का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंच के समान है । (एक समय से संख्यात समय । ३ वृद्धि, ३ हानि, अवक्तव्य – एक समय से आवली का असंख्यातवां भाग । अवस्थित – सदाकाल ।)

सातावेदनीय, पुरुषवेद, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र के असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का भंग ज्ञानावरण के समान है । इनके शेष पदों का तथा शेष परिवर्तमान प्रकृतियों के सभी पदों का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के समान है।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानावरण ४ और औदारिक शरीर के ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

निद्रा, प्रचला, प्रत्याख्यानावरण ४, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और तीर्थंकर प्रकृति की ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इनके अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इनके अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

आहारकद्विक का भंग ओघ के समान है । (३ वृद्धि, ३ हानि, अवक्तव्य– एक समय से संख्यात समय । अवस्थित – सदाकाल ।)

४ आयु तथा शेष प्रकृतियों का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के समान है ।

इसीप्रकार मनोयोगी, वचनयोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, चक्षुदर्शनी और संज्ञी जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेदी जीवों में तीर्थंकर प्रकृति की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीवों में ध्रुवबंधी प्रकृतियों (५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, १६ कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु–चतुष्क, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण, तीर्थंकर और ५ अंतराय) की

३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ३८० भुजगार बंध में अवस्थित का काल) और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शेष (परिवर्तमान प्रकृतियां, औदारिक आंगोपांग और मिथ्यात्व) प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि, अवक्तव्य के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित का भंग ज्ञानावरण के समान है । (एक समय से पल्य का असंख्यातवां भाग ।)

आहारक काययोगी और आहारकमिश्र काययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि तथा परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद का भंग मनुष्य पर्याप्त जीवों के समान है । (एक समय से अंतर्मुहूर्त ।) अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

कार्माण काययोगी जीवों में देवगतिपंचक के सभी पदों के (३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित) बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

शेष प्रकृतियों की असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, अवस्थित और परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है । दो वृद्धि, दो हानि तथा मिथ्यात्व के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार अनाहारक जीवों में जानना चाहिए।

अपगतवेदी जीवों में (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ४०६ – वृद्धि समुत्कीर्तना) ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण और ५ अंतराय की संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । सातावेदनीय, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र की संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का भंग ज्ञानावरण के समान है (एक समय से संख्यात समय)। ४ संज्वलन की संख्यातभागवृद्धि,

संख्यातभागहानि और अवक्तव्य पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । सभी प्रकृतियों के अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में ध्रुवबंधी प्रकृतियों की तथा औदारिक शरीर की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का भंग ओघ के समान है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

४ आयु और वैक्रियिकषट्क का भंग ओघ के समान है ।

शेष प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद का भंग ओघ के समान है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, पुरुषवेद, उच्चगोत्र और ५ अंतराय की असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इनकी ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

निद्रा, प्रचला, प्रत्याख्यानावरण ४, भय, जुगुप्सा, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण और तीर्थंकर प्रकृति के सभी पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

सातावेदनीय और यशस्कीर्ति की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । उनके अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

असातावेदनीय, अप्रत्याख्यानावरण ४, ४ नोकषाय, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी,

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ और अयशस्कीर्ति की ३ वृद्धि, ३ हानि, अवक्तव्य और अवस्थित पदों का भंग सातावेदनीय के समान है ।

देवायु, आहारकद्विक का भंग ओघ के समान है ।

मनुष्यायु का भंग नारकियों के समान है ।

इसीप्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, औपशमिक सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में देवायु का भंग मनुष्यायु के समान है तथा अप्रत्याख्यानावरण ४ और मनुष्यगतिपंचक के (मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन) अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

औपशमिक सम्यग्दृष्टियों में अप्रत्याख्यानावरण ४ और मनुष्यगतिपंचक का भंग क्षायिक सम्यग्दृष्टियों के समान है । औपशमिक सम्यग्दृष्टियों में सभी प्रकृतियों के अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

विभंगज्ञानी जीवों में सभी प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और मिथ्यात्व तथा परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पदों के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है । ४ आयु का भंग पंचेन्द्रियों के समान है ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवों में सभी प्रकृतियों के अवस्थित बिना सभी पदों के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है । देवायु का भंग क्षायिक सम्यग्दृष्टियों के समान है। (अवक्तव्य पद - एक समय से संख्यात समय, असंख्यातभागहानि का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त) ।

इसीप्रकार संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सामायिकसंयत और छेदोपस्थापनासंयत जीवों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, लोभ संज्वलन, उच्चगोत्र और ५ अंतराय

का अवक्तव्य पद नहीं है । तथा परिहारविशुद्धिसंयत जीवों में ध्रुवबंधी प्रकृतियों की केवल ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद है ।

संयतासंयत जीवों में ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इनके अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है । परिवर्तमान प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

तीर्थंकर प्रकृति का भंग मनुष्यों के समान है ।

देवायु का भंग ओघ के समान है ।

पीतलेश्यावाले जीवों में प्रत्याख्यानावरण ४, देवगतिचतुष्क और तीर्थंकर प्रकृति के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इनकी तथा शेष प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानावरण ४ इनके अवक्तव्य पद का भंग परिवर्तमान प्रकृतियों के समान है ।

आहारकद्विक, देवायु और तिर्यंचायु का भंग ओघ के समान है । मनुष्यायु का भंग देवों के समान है ।

इसीप्रकार पद्मलेश्या में जानना चाहिए ।

शुक्ललेश्या में सभी प्रकृतियों का भंग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों के समान है, इतनी विशेषता है कि देवायु और मनुष्यायु के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है तथा असंख्यातभागहानि के बंधक जीवों का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में अपनी प्रकृतियों का भंग पीतलेश्यावाले जीवों

के समान जानना चाहिए ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि तथा परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवस्थित पद का जघन्य काल एक समय तथा उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है । देवायु, तिर्यंचायु का भंग ओघ के समान है, मनुष्यायु का भंग नारकियों के समान है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में इसीप्रकार (आयु बिना) जानना चाहिए।

इसप्रकार काल समाप्त हुआ ।

–0–

अंतरानुगम

(उत्तरप्रकृति स्थितिबंध के वृद्धिबंध में ग्यारहवां अनुयोगद्वार – नाना जीवों की अपेक्षा अंतर)

अंतरानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से ५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, १६ कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, ५ अंतराय की असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है ।

औदारिक शरीर के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । (संदर्भ – पुस्तक ५, पृष्ठ ३१३ – अनुभागबंध में भुजगार में अंतर, पुस्तक ३, पृष्ठ ३८० – स्थितिबंध में भुजगार बंध में अंतर।)

मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर सात दिनरात है । अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर चौदह दिनरात है । प्रत्याख्यानावरण ४ के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर पन्द्रह दिनरात है ।

५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, ५ अंतराय प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व प्रमाण है ।

इनकी दो वृद्धि और दो हानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतमुहूर्त है ।

५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ४ संज्वलन और ५ अंतराय की असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है; असंख्यातगुणहानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर छह महिना है ।

सातावेदनीय, पुरुषवेद, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है, शेष पदों (४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित) का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

वैक्रियिक छह और आहारकद्विक की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है । इसीप्रकार तीर्थंकर प्रकृति की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का भंग है । इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है । (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ३८० – भुजगार में अवक्तव्य)।

तीन आयुओं के अवक्तव्य और असंख्यातभागहानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर चौबीस मुहूर्त है । (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ३८०)। तिर्यंचायु के दोनों पदों के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है ।

शेष प्रकृतियों के असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है । दो वृद्धि और दो हानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

इसीप्रकार काययोगी, औदारिक काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, अचक्षुदर्शनी, भव्य और आहारक जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि क्रोधादि चार कषायवाले तथा नपुंसकवेदी जीवों में क्षपक प्रकृतियों की असंख्यातगुणहानि

के बंधक जीवों का उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व प्रमाण है ।

नारकियों में ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों की ३ वृद्धि और ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४ की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । इनके अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर सात दिनरात है । तीर्थंकर प्रकृति की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है, अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण अथवा वर्षपृथक्त्व है (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ३८१ – भुजगार में अंतर) ।

दो आयुओं के दोनों पदों के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर २४ मुहूर्त है ।

शेष प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है ।

इसीप्रकार सब नारकियों के जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सातवीं पृथ्वी में दो गति, दो आनुपूर्वी और दो गोत्र का भंग स्त्यानगृद्धि के समान जानना चाहिए । तथा आयु के दो पदों में उत्कृष्ट अंतर प्रथमादि पृथ्वियों में क्रमशः २४ मुहूर्त, ४८ मुहूर्त, १५ दिन, १ मास, दो मास, छह मास और १२ मास (मात्र तिर्यंचायु) है ।

इसीप्रकार देव, पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक, विभंगज्ञानी, वैक्रियिक काययोगी, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त, त्रस अपर्याप्त, विकलेन्द्रिय, बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त, बादर अग्निकायिक पर्याप्त, बादर वायुकायिक पर्याप्त, वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवों में अपनी अपनी विशेषता सहित जानना चाहिए (देवों में तीर्थंकर प्रकृति का अवक्तव्य पद नहीं है) । इतनी विशेषता है कि मनुष्य अपर्याप्तकों में ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पदों के बंधक

जीवों का तथा शेष प्रकृतियों के सभी पदों के (३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित, अवक्तव्य) बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

तिर्यंचों में अपनी प्रकृतियों की अपने पदों का भंग ओघ के समान है।

मनुष्यत्रिक में ध्रुवबंधी प्रकृतियों के ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद का अंतर नहीं है । अवक्तव्य पद का अंतर ओघ के समान है ।

क्षपक प्रकृतियों की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का भंग ओघ के समान है ।

वैक्रियिकषट्क, तीर्थंकर, आहारकद्विक का भंग ओघ के समान है ।

४ आयु तथा शेष प्रकृतियों का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक के समान है। इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय, पुरुषवेद, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का भंग ओघ के समान है ।

इसीप्रकार पंचेन्द्रियद्विक, त्रसद्विक, ५ मनोयोगी, ५ वचनयोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और चक्षुदर्शनी जीवों में जानना चाहिए ।

एकेन्द्रिय, वनस्पतिकायिक, सभी सूक्ष्म जीव, बादर पृथ्वीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीवों में सभी प्रकृतियों के सभी पदों के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है।

औदारिकमिश्र काययोगी जीवों में देवगतिचतुष्क की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर मास पृथक्त्व है (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ३८२) । तीर्थंकर प्रकृति की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है । मिथ्यात्व के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

मिथ्यात्व सहित शेष सभी प्रकृतियों की असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि,

अवस्थित तथा परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है । दो वृद्धि, दो हानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त ।

इसीप्रकार कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में जानना चाहिए ।

वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीवों में तीर्थंकर प्रकृति की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है । एकेन्द्रिय, स्थावर और आतप प्रकृतियों के सभी पदों के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर २४ मुहूर्त है । शेष प्रकृतियों के सब पदों के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर १२ मुहूर्त है, इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

आहारक काययोगी और आहारकमिश्र काययोगी जीवों में सब प्रकृतियों के सब पदों के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है ।

अपगतवेदी जीवों में ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ५ अंतराय की संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि और अवक्तव्य पद के; तथा सातावेदनीय, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र की संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अवक्तव्य पद के; तथा ४ संज्वलन की संख्यातभागवृद्धि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है । इन्हीं प्रकृतियों की इन्हीं पदों की हानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर छह महिना है ।

इसीप्रकार सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में सभी प्रकृतियों के संख्यातभागवृद्धि तथा संख्यातभागहानि पदों को जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है ।

मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में सभी प्रकृतियों के अपने संभव सभी पदों का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व के अवक्तव्य

पद का भंग औदारिकमिश्र काययोगी जीवों के समान है । इसीप्रकार मिथ्यादृष्टि, ३ अशुभ लेश्यावाले, अभव्य, असंयत, असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि असंयत, ३ अशुभ लेश्यावालों में मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४ और स्त्यानगृद्धित्रिक के अवक्तव्य पद का भंग ओघ के समान है तथा शेष (मिथ्यादृष्टि, अभव्य, असंज्ञी) में मिथ्यात्व का अवक्तव्य पद नहीं है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी जीवों में क्षपक प्रकृतियों तथा ध्रुवबंधी प्रकृतियों के सभी पदों का भंग मनुष्यों के समान है । आहारकद्विक और तीर्थंकर प्रकृति के सभी पदों का भंग ओघ के समान है ।

दो गति, दो शरीर, दो आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन और दो आनुपूर्वी की ३ वृद्धि, ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर मासपृथक्त्व है (संदर्भ – पुस्तक ३, पृष्ठ ३८३ – भुजगार में अंतरानुगम) । शेष प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । सभी प्रकृतियों के अवस्थित पद का अंतरकाल नहीं है ।

इसीप्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि (अपने पद) जीवों में जानना चाहिए । क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि दो गति, दो शरीर, दो आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, दो आनुपूर्वी के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवों में ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों का और क्षपक प्रकृतियों का भंग मनुष्यनियों के समान है । शेष प्रकृतियों का भंग अवधिज्ञानी जीवों के समान है । इसीप्रकार संयतों में और संयतासंयतों में (अपनी प्रकृतियों के अपने पदों में) जानना चाहिए । इसीप्रकार सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत जीवों में अपनी-अपनी विशेषता सहित जानना चाहिए ।

पीतलेश्यावाले जीवों में देवगतिचतुष्क की ३ वृद्धि और ३ हानि के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद के बंधक जीवों का अंतरकाल नहीं है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों

का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर मासपृथक्त्व है । औदारिक शरीर के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर ४८ मुहूर्त है (संदर्भ - पुस्तक ३, पृष्ठ ३८४ - भुजगार अंतर - मात्र सौधर्म-ईशान में उत्पन्न होनेवाले) । स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी ४ के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर सात दिनरात है । शेष प्रकृतियों का भंग मनुष्यों के समान है ।

इसीप्रकार पद्मलेश्यावाले जीवों में जानना चाहिए; इतनी विशेषता है कि औदारिक शरीर और औदारिक आंगोपांग के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर दिवस पृथक्त्व है ।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में दो गति (मनुष्यगति, देवगति), दो शरीर, दो आंगोपांग और दो आनुपूर्वी का भंग अवधिज्ञानी जीवों के समान है (अवक्तव्य का उत्कृष्ट अंतर मासपृथक्त्व है) । शेष प्रकृतियों का भंग मनुष्यों के समान है ।

औपशमिक सम्यग्दृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पदों के तथा परिवर्तमान प्रकृतियों में अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर सात दिनरात है । इतनी विशेषता है कि आहारक शरीर, आहारक आंगोपांग और तीर्थंकर प्रकृति के सभी पदों के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है। क्षपक प्रकृतियों के असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है । इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय और यशस्कीर्ति के अवक्तव्य पद का भंग शेष परिवर्तमान प्रकृतियों के समान है (एक समय से सात दिनरात) । निद्रा, प्रचला, भय, जुगुप्सा, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, अप्रत्याख्यानावरण तथा प्रत्याख्यानावरण के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है ।

सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों की ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पदों के तथा परिवर्तमान प्रकृतियों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें

भागप्रमाण है ।

इसप्रकार अंतरानुगम समाप्त हुआ ।

–0–

भावानुगम

(उत्तरप्रकृति स्थितिबंध के वृद्धिबंध में बारहवां अनुयोगद्वार)

भावानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश । ओघ से सभी प्रकृतियों के सभी पदों के बंधक जीवों का कौनसा भाव है? औदयिक भाव है । इसीप्रकार सर्वत्र अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । इसप्रकार भावानुगम समाप्त हुआ ।

–0–

अल्पबहुत्वानुगम

(उत्तरप्रकृति स्थितिबंध के वृद्धिबंध में तेरहवां अनुयोगद्वार)

(संदर्भ– पुस्तक २, पृष्ठ २०३– मूलप्रकृति स्थितिबंध के वृद्धिबंध का अल्पबहुत्व)

अल्पबहुत्वानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ४ संज्वलन और ५ अंतराय के अवक्तव्य पद का बंध करनेवाले जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे असंख्यातगुणवृद्धि का बंध करनेवाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातगुणहानि का बंध करनेवाले जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि का बंध करनेवाले जीव दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि का बंध करनेवाले जीव दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि का बंध करनेवाले जीव दोनों ही समान होकर अनंतगुणे हैं । इनसे अवस्थित पद का बंध करनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।

५ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस

शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण इन प्रकृतियों के अवक्तव्य पद का बंध करनेवाले जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि का बंध करनेवाले जीव दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणे हैं । आगे के पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

सातावेदनीय, पुरुषवेद, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र की असंख्यातगुणवृद्धि का बंध करनेवाले जीव सबसे स्तोक हैं । आगे का भंग संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि तक ज्ञानावरण के समान है, इनसे अवक्तव्य पद का बंध करनेवाले जीव अनंतगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं । इनसे अवस्थित पद के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

असातावेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, ४ नोकषाय, दो गति, ५ जाति, छह संस्थान, औदारिक आंगोपांग, छह संहनन, दो आनुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, दो विहायोगति, त्रस-स्थावरादि नौ युगल, अयशस्कीर्ति और नीचगोत्र की ३ वृद्धि, ३ हानि, अवक्तव्य और अवस्थित पदों का भंग सातावेदनीय के समान है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अवक्तव्य पद के बंधक जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे संख्यात-गुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणे हैं । इनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही समान होकर संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही समान होकर संख्यातगुणे हैं । इनसे अवस्थित पद के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

आहारकद्विक की संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि का बंध करनेवाले जीव दोनों समान होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे अवक्तव्य पद का बंध करनेवाले जीव संख्यातगुणा हैं । इनसे संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि का बंध करनेवाले जीव दोनों ही समान होकर संख्यातगुणा हैं । इनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि का बंध करनेवाले जीव दोनों ही समान होकर संख्यातगुणा हैं । इनसे अवस्थित पद का बंध करनेवाले जीव संख्यातगुणा हैं ।

वैक्रियिकषट्क की संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे अवक्तव्य पद के बंधक जीव देवगतिद्विक के संख्यातगुणे हैं और नरकगतिचतुष्क के असंख्यातगुणे हैं । (पुस्तक ३, पृष्ठ ४७९ पर स्त्रीवेदी जीवों में मनुष्यगति, तिर्यंचगति, देवगति के अवक्तव्य पद के बंधक संख्यातगुणे कहे हैं और नरकगतिद्विक के बंधक असंख्यातगुणे कहे हैं । कृष्णलेश्या में पृष्ठ ४८३ में देवगति के बंधक असंख्यातगुणा और नील-कापोत लेश्या में संख्यातगुणा कहा है । विभंगज्ञानी में पृष्ठ ४८१ देवगतिचतुष्क के अवक्तव्य स्तोक और संख्यातगुणवृद्धि-हानिवाले असंख्यातगुणे कहा है तथा शेष तीन गति के संख्यातगुणवृद्धि-हानिवाले स्तोक हैं, अवक्तव्यवाले संख्यातगुणे हैं । इसलिए हम किसी निर्णय पर नहीं आ सकते परंतु ओघ की बात होने से असंख्यातगुणा कह सकते हैं) । इनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर देवगतिद्विक के असंख्यातगुणे हैं और नरकगतिचतुष्क के संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं । इनसे अवस्थित पद के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

४ आयु के अवक्तव्य पद के बंधक जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे असंख्यातभागहानि के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

नारकियों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, १२ कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण और ५ अंतराय की संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं । इनसे अवस्थित पद के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४ के अवक्तव्य पद के बंधक जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । इनसे शेष पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । पुरुषवेद, मनुष्यगति, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, सुभग, सुस्वर,

आदेय, उच्चगोत्र इन प्रकृतियों की संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे अवक्तव्य पद के बंधक जीव संख्यातगुणे हैं । इससे आगे का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

शेष सभी परिवर्तमान प्रकृतियों की संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे अवक्तव्य पद के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं । इससे आगे का भंग ज्ञानावरण के समान है।

तीर्थंकर प्रकृति के अवक्तव्य पद के बंधक जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । इससे आगे का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

तिर्यंचों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ८ कषाय (प्रत्या.४, संज्व.४), भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और ५ अंतराय की संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे आगे का भंग ओघ के समान है।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानावरण का भंग ओघ के समान है ।

शेष सभी प्रकृतियों का भंग ओघ के समान है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में ध्रुवबंधी प्रकृतियों की संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । इनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ।

पुरुषवेद, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास ....आगे का कथन पुस्तक ३, पृष्ठ ४७३ पर है ।

–0–

पुस्तक ३, पृष्ठ ४७४ पर त्रुटित अंश –

तीर्थंकर प्रकृति के ...अवक्तव्य पद के बंधक जीव ... सबसे स्तोक हैं।

–0–

महाबंध पुस्तक ३ में पृ. ४९४ पर प्रकृतिसमुदाहार में परस्थान अल्पबहुत्व का अंश त्रुटित है । इसके लिए महाधवला पुस्तक २ में पृष्ठ २०९ से पढ़ना चाहिए । इस तीसरी पुस्तक में त्रुटित अंश निम्न प्रकार है –

प्रकृतिसमुदाहार में शेष मार्गणाओं में परस्थान अल्पबहुत्व, स्थितिसमुदाहार, श्रेणी प्ररूपणा, तीव्र–मन्दता । यहां अध्यवसानसमुदाहार समाप्त होता है । इसके पश्चात् 'जीवसमुदाहार' प्रकरण का शुरु का अंश नष्ट हुआ है । यह संपूर्ण विषय महाबंध पुस्तक २ में मूलप्रकृति में समझाया है वहां से पृष्ठ २१२ से २१८ तक पढ़ना चाहिए ।

महाबंध पुस्तक ३, पृष्ठ ४९४, पॅरेग्राफ ९९२ का त्रुटित अंश –

इनसे स्त्रीवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे नपुंसकवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । शेष प्रकृतियों का भंग सामान्य नारकियों के समान है ।

तिर्यंचों में तिर्यंचायु और मनुष्यायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे नरकायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे पुरुषवेद, हास्य, रति, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे देवगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे सातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे स्त्रीवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे मनुष्यगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे तिर्यंचगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इससे औदारिक शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे नरकगति और नीचगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे नपुंसकवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे अरति, शोक, अयशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे वैक्रियिक

शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे असातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे स्त्यानगृद्धित्रिक के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ५ अंतराय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे अनंतानुबंधी चार के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे अप्रत्याख्यानावरण चार के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं। इनसे आठ कषायों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे मिथ्यात्व के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ।

इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी जीवों में जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवों में दो आयुओं के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे पुरुषवेद, उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे यशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे सातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे स्त्रीवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे मनुष्यगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे हास्य, रति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे तिर्यंचगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे नपुंसकवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे अरति, शोक, अयशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे असातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे ५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण और ५ अंतराय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे १६ कषायों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। इनसे मिथ्यात्व के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार मनुष्य अपर्याप्त, सब विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, त्रस अपर्याप्त, सब एकेन्द्रिय और ५ स्थावरकायिक जीवों के जानना चाहिए ।

मनुष्यों में तिर्यंचायु और मनुष्यायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे नरकायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे आहारक शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान

असंख्यातगुणे हैं । इनसे देवगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे हास्य और रति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे पुरुषवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे सातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे स्त्रीवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे मनुष्यगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे तिर्यंचगति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे औदारिक शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे नरकगति और नीचगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे नपुंसकवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे अरति, शोक और अयशस्कीर्ति स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे वैक्रियिक शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे तेजस और कार्माण शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे भय और जुगुप्सा के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे आगे का भंग ओघ के समान है ।

इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में जानना चाहिए ।

देवों में पहली पृथ्वी के समान भंग जानना चाहिए । इसी प्रकार वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोगीमें जीवों में जानना चाहिए ।

औदारिककाययोगी जीवों में मनुष्यनियों के समान भंग है । औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों में दो आयुओं के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे देवगति चतुष्क के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे पुरुषवेद, उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे आगे का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त के समान है । इसीप्रकार कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में जानना चाहिए ।

आहारक काययोगी जीवों में देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं। इनसे हास्य, रति, यशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे अरति, शोक, अयशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे देवगति, वैक्रियिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा और उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे सातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान

असंख्यातगुणे हैं । इनसे असातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण और ५ अंतराय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे ४ संज्वलन के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ।

इसीप्रकार परिहारविशुद्धिसंयतों में जानना चाहिए ।

इसीप्रकार संयत, सामायिक और छेदोपस्थापनासंयत, मनःपर्ययज्ञानी जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि चार संज्वलनों का भंग ओघ के समान है ।

संयतासंयतों में भी इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि ज्ञानावरणादि से ८ कषायों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ।

स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदी जीवों में ओघ के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि प्रत्याख्यानावरण चार के स्थितिबंधाध्यवसानस्थानों से चार संज्वलनों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं ।

अपगतवेदी जीवों में संज्वलन क्रोध के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे संज्वलन मान के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे संज्वलन माया के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे संज्वलन लोभ के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, ५ अंतराय, सातावेदनीय, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं ।

सूक्ष्मसाम्परायसंयतों में सभी प्रकृतियों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान समान हैं। क्रोध, मान, माया और लोभकषायवाले जीवों में ओघ के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि ४ संज्वलनों में विशेषता जान लेनी चाहिए ।

मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में तिर्यंचायु, मनुष्यायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे नरकायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इसके आगे ओघ के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि असातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थानों से ५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, ५ अंतराय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे १६ कषायों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे मिथ्यात्व

के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार विभंगज्ञानी, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में मनुष्यायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे आहारक शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे हास्य, रति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे यशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे अरति, शोक, अयशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे मनुष्यगति, औदारिक शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे देवगति, वैक्रियिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे भय और जुगुप्सा के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे पुरुषवेद के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे सातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे असातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे निद्रा, प्रचला के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे ५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण और ५ अंतराय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे अप्रत्याख्यानावरण ४ के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे प्रत्याख्यानावरण ४ के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे आगे ४ संज्वलनों का भंग ओघ के समान है । इसीप्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि वेदक सम्यग्दृष्टि में ४ संज्वलनों का भंग समान है ।

असंयतों में तिर्यंचों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि अनंतानुबंधी ४ के स्थितिबंधाध्यवसानस्थानों से १२ कषायों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे मिथ्यात्व के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार तीन अशुभ लेश्यावाले जीवों में जानना चाहिए ।

पीतलेश्यावाले जीवों में मनुष्यायु और तिर्यंचायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे आहारक शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे आगे

के भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि स्त्यानगृद्धित्रिक के स्थितिबंधाध्यवसानस्थानों से ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ५ अंतराय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं तथा प्रत्याख्यानावरण चार के स्थितिबंधाध्यवसानस्थानों से चार संज्वलनों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे मिथ्यात्व के असंख्यातगुणे हैं।

इसीप्रकार पद्मलेश्यावाले जीवों में जानना चाहिए ।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में मनुष्यायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । शेष प्रकृतियों का भंग ओघ के समान है । इतनी विशेषता है कि यहां बंधनेवाली प्रकृतियों को जानकर समझना चाहिए ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में मनुष्यायु और तिर्यंचायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे देवायु के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इससे आगे का भंग मत्यज्ञानी के समान जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि यहां बंधनेवाली प्रकृतियों को जानकर समझना चाहिए ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में हास्य, रति और यशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं । इनसे अरति, शोक और अयशस्कीर्ति के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा और उच्चगोत्र के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे २ गति, ४ शरीर के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे सातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे असातावेदनीय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । इनसे ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण और ५ अंतराय के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । इनसे १२ कषायों के स्थितिबंधाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

इसप्रकार प्रकृतिसमुदाहार समाप्त हुआ ।

–0–

स्थितिसमुदाहार

देखिए महाबंध पु. २ पृ. २०९ से २११

–0–

तीव्रमन्दता

महाबंध पु. २ पृ. २११ से २१२

–0–

जीवसमुदाहार

महाबंध पु. २ पृ. २१२ से २१८

इसप्रकार स्थितिबंधाधिकार समाप्त हुआ ।

इसप्रकार महाबंध पुस्तक ३ के त्रुटित अंश की चर्चा समाप्त होती है।

–0–

अब महाबंध पुस्तक ६ के त्रुटित अंशों संबंधी चर्चा करते हैं –

महाबंध पुस्तक ६, पृष्ठ ३ पर मूलप्रकृतिबंध के चौबीस अनुयोगद्वार बतायें हैं । उसमें से चौदहवां अनुयोगद्वार है 'एक जीव की अपेक्षा अंतरप्ररूपणा' । पृष्ठ ४५ से यह प्रारंभ होता है । ओघ से मूलप्रकृतियों में उत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर बताने के बाद आदेश से नारकियों में, तिर्यंचों में और मनुष्यत्रिक में बताया है। पृष्ठ ४८ पर इसके पश्चात् त्रुटित अंश प्रारंभ होता है । शेष मार्गणाओं में तथा जघन्य प्रदेशबंध में ओघ से व आदेश से इतना चौदहवें अनुयोगद्वार का अंश उपलब्ध नहीं है ।

इसके पश्चात् उपलब्ध प्रकरण है 'नाना जीवों की अपेक्षा काल' जिसमें

उत्कृष्ट काल का प्रकरण नहीं है, पृष्ठ ४९ से जघन्य काल का प्रकरण है । यह इक्कीसवां अनुयोगद्वार है ।

यहां पृष्ठ ४८ का त्रुटित अंश निम्नप्रकार है - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में १४) 'एक जीव की अपेक्षा अंतरप्ररूपणा' अंतर्गत उत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर शेष मार्गणाओं में, जघन्य प्रदेशबंध का अंतर ओघ से तथा आदेश से १५) सन्निकर्षप्ररूपणा, १६) नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय, १७) भागाभागप्ररूपणा १८) परिमाणप्ररूपणा १९) क्षेत्रप्ररूपणा २०) स्पर्शनप्ररूपणा २१) कालप्ररूपणा में उत्कृष्ट प्रदेशबंध का काल ।

इस त्रुटित अंश को यहां लिखते हैं -

त्रुटित अंश पुस्तक ६ - मूलप्रकृति में अंतरप्ररूपणा

उत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर - मार्गणाओं में (महाबंध पुस्तक ६-पृष्ठ ४८ से आगे)

(चौदहवां अनुयोगद्वार - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में अंतर)

एकेन्द्रियों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक बाईस हजार वर्ष (२२००० वर्ष का १/३ + २२००० वर्ष) है ।

सभी मार्गणाओं में उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है। (मिश्रकाययोग, कार्माणकाययोग, अनाहारक को छोड़कर)

बादर एकेन्द्रियों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण और अनुत्कृष्ट का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण और अनुत्कृष्ट का उत्कृष्ट अंतर साधिक बाइस हजार वर्ष है ।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्षप्रमाण और अनुत्कृष्ट का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष और अनुत्कृष्ट का उत्कृष्ट अंतर साधिक बाइस हजार वर्ष है ।

वनस्पतिकायिकों में एकेन्द्रियों के समान भंग है इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दस हजार वर्षप्रमाण है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रियों में आठों कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । सात कर्मों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय, आयु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

विकलेन्द्रियों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर द्वीन्द्रियों में साधिक १२ वर्ष, त्रीन्द्रियों में साधिक ४९ दिन, चतुरिन्द्रियों में साधिक छह महिना है ।

इसीप्रकार इनके पर्याप्तकों में जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रियद्विक और त्रसद्विकों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी अपनी कायस्थितिप्रमाण अर्थात् पंचेन्द्रियों में पूर्व कोटी पृथक्त्व + १००० सागर, पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों में सौ सागर पृथक्त्व और त्रसों में साधिक २००० सागर, त्रस पर्याप्तकों में २००० सागर प्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्तप्रमाण है (उपशम श्रेणी में) । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी कायस्थितिप्रमाण और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागरप्रमाण है ।

कायमार्गणा में पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद (साधा.वन.) में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर क्रम से साधिक २२००० वर्ष, साधिक ७००० वर्ष, साधिक ३ दिनरात, साधिक ३००० वर्ष, साधिक १०००० वर्ष, अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ।

योगमार्गणा में पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी जीवों में आठों कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । इसी प्रकार वैक्रियिककाययोगी, आहारककाययोगी और क्रोधादि चार कषायवाले जीवों में जानना चाहिए । औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारकमिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी और अनाहारक जीवों में उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

काययोगी जीवों में छह कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का भी उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (काययोग पलटने के पहले उपशम श्रेणी में-११वें में-मरकर देव में बंध प्रारंभ किया) । मोहनीय कर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंत काल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (१०वें में मरकर देव में गया)। आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्षप्रमाण है ।

औदारिककाययोगी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतमुहूर्त (संज्ञी पंचेन्द्रिय में) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ७००० वर्ष है (पृथ्वीकायिक में) ।

वेदमार्गणा में स्त्रीवेदी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ पल्य पृथक्त्व प्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है। आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक पचपन पल्य है (१/३ पूर्वकोटी + ५५ पल्य)।

पुरुषवेदी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर)।

नपुंसकवेदी जीवों मे सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंत काल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय

है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर प्रमाण है।

अपगतवेदी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

ज्ञानमार्गणा में मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । अभव्यों में और मिथ्यादृष्टियों में इसी प्रकार जानना चाहिए ।

विभंगज्ञानी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर (देखिए पृ. ३३ अनुत्कृष्ट का उत्कृष्ट काल) है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागरप्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर) प्रमाण है ।

इसीप्रकार अवधिदर्शनी और सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटि प्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है। आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी प्रमाण है ।

इसी प्रकार संयममार्गणा में संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत और संयतासंयत जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि संयतों को छोड़कर शेष मार्गणाओं में सात कर्मों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

दर्शनमार्गणा में चक्षुदर्शनी जीवों में त्रस पर्याप्त जीवों के समान भंग है।

अचक्षुदर्शनी जीवों में सभी कर्मों का ओघ के समान भंग है ।

लेश्यामार्गणा में कृष्ण, नील, कापोत, पीत और पद्म लेश्या में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर क्रम से साधिक (एक अंतर्मुहूर्त-जाने के पूर्व का-अधिक) तैंतीस सागर, सत्रह सागर, सात सागर, साधिक (घातायुष्क की अपेक्षा आधा सागर अधिक)दो सागर, अठारह सागर प्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

शुक्ललेश्या में छह कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (उपशम श्रेणी में-११वें गुणस्थान में) । मोहनीय कर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक (एक अंतर्मुहूर्त अधिक) ३३ सागर प्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर एक अंतर्मुहूर्त प्रमाण है । आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है।

भव्य जीवों में सभी कर्मों का भंग ओघ के समान जानना ।

सम्यक्त्व मार्गणा में क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर प्रमाण है (कुछ कम दो पूर्वकोटी-पहले भव में ८ वर्ष कम, दूसरे भव में अंतर्मुहूर्त कम) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त प्रमाण है । आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागरप्रमाण है (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर)।

वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर प्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर प्रमाण है ।

उपशम सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट

अंतर दो समय कम छह आवली प्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

संज्ञीमार्गणा में संज्ञी जीवों में पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों के समान भंग है (कायस्थिति–सौ सागर पृथक्त्व) । असंज्ञी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंत काल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) प्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयु कर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंत काल और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक एक पूर्वकोटी प्रमाण (१/३ पूर्वकोटी + एक पूर्वकोटि में कुछ कम) है ।

आहारमार्गणा में आहारक जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त प्रमाण है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागरप्रमाण है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट अंतर समाप्त हुआ ।

–0–

जघन्य प्रदेशबंध का अंतर

(मूल प्रकृतियों में)

जघन्य का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है अथवा सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है (देखिए पुस्तक ६ पृष्ठ ३४ – अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल) । सात कर्मों

के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्तप्रमाण है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर (दो अपकर्ष के बीच) अंतर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर) है ।

आदेश से गतिमार्गणा में नारकियों में सात कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

तिर्यंचों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ओघ के समान है और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण तथा उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य)।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व प्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व प्रमाण है तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमति जीवों में इसीप्रकार जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटि पृथक्त्व और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य प्रमाण है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तों में आठों कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है। आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य

प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है । आयुकर्म के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व प्रमाण है तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य प्रमाण है । इसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक ३ पल्य (कुछ कम) और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है।

मनुष्य अपर्याप्तकों में सात कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों के समान भंग है ।

देवों में नारकियों के समान भंग है ।

इन्द्रियमार्गणा में एकेन्द्रियों में सामान्य तिर्यंचों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष प्रमाण है ।

बादर एकेन्द्रियों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष प्रमाण है ।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष, अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रियों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक

समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक अथवा जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

विकलेन्द्रियों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है। आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर द्वीन्द्रियादिकों में क्रम से साधिक १२ वर्ष, साधिक ४९ दिन, साधिक ६ महिना है ।

पंचेन्द्रियद्विक में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर क्रम से कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक हजार सागर और सौ सागर पृथक्त्व प्रमाण है । इतनी विशेषता है कि पर्याप्त जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । इतनी विशेषता है कि पर्याप्त जीवों में आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

इसीप्रकार त्रसद्विक में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर क्रम से पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक दो हजार सागर और दो हजार सागर है ।

कायमार्गणा में पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद जीवों में सामान्य तिर्यंचों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर क्रम से साधिक २२००० वर्ष, ७००० वर्ष, ३ दिनरात, ३००० वर्ष, १०००० वर्ष, अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ।

योगमार्गणा में पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी जीवों में आठों कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है; जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट

अंतर अंतर्मुहूर्त और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

काययोगी जीवों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है। सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष है ।

औदारिककाययोगी जीवों में सात कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है (क्योंकि शरीरपर्याप्ति पूर्ण होने के प्रथम समय में जघन्य प्रदेशबंध होता है) । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ७००० वर्ष है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त प्रमाण है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवों में सात कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है अथवा वैक्रियिककाययोगी जीवों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

इसीप्रकार आहारककाययोगी जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है (शरीरपर्याप्ति पूर्ण होने के समय में आयुकर्म का जघन्य प्रदेशबंध होता है ।) ।

आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में आठों कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

कार्माणकाययोगी जीवों में सात कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

वेदमार्गणा में स्त्रीवेदी जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त का एक भव) और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व प्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय; जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ५५ पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ५५ पल्य) है।

पुरुषवेदी जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व प्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय; जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर) है ।

नपुंसकवेदी जीवों में एकेन्द्रियों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

अपगतवेदी जीवों में सात कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

कषायमार्गणा में क्रोधादि चार कषायवाले जीवों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है।

ज्ञानमार्गणा में मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी और मिथ्यादृष्टि जीवों में नपुंसकवेदी जीवों के समान भंग है ।

विभंगज्ञानी जीवों में आठ कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है; सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है। आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम वर्ष पृथक्त्व प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर प्रमाण है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर प्रमाण है और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

इसीप्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवों में आठ कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी, अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी प्रमाण है । इसीप्रकार संयत जीवों में जानना चाहिए ।

संयममार्गणा में सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, संयतासंयत जीवों में आठ कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटि और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है। सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में छह कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है । असंयत जीवों में आठों कर्मों का भंग नपुंसकवेदी जीवों के समान है । इसीप्रकार अभव्यों में जानना चाहिए ।

दर्शनमार्गणा में अचक्षुदर्शनी जीवों में ओघ के समान भंग है । चक्षुदर्शनी जीवों में त्रस जीवों के समान भंग है ।

लेश्यामार्गणा में कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है (नारकियों में) ।

पीतलेश्या में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर साधिक एक

पल्य प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

पद्मलेश्या में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर दो सागर और उत्कृष्ट अंतर साधिक अठारह सागर है । शेष भंग पीतलेश्या के समान है ।

शुक्ललेश्या में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अठारह सागर और उत्कृष्ट अंतर एक समय कम ३३ सागर है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म का भंग पद्मलेश्या के समान जानना ।

भव्यमार्गणा में भव्य जीवों में ओघ के समान भंग है ।

सम्यक्त्वमार्गणा में वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में आभिनिबोधिकज्ञानी के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि साधिक ६६ सागर के स्थान में कुछ कम ६६ सागर जानना चाहिए ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम ८४००० वर्ष प्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर एक समय कम ३३ सागर प्रमाण है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर) है ।

औपशमिक सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है (देव में उपपाद में जघन्य), अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सात कर्मों का भंग मनोयोगी जीवों के समान जानना ।

संज्ञीमार्गणा में संज्ञी जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है (क्योंकि असंज्ञी से मरकर आया हुआ जीव); अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है । आयुकर्म के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

असंज्ञी जीवों में आठ कर्मों का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है, इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक पूर्वकोटी वर्ष (१/३ पूर्वकोटी + एक पूर्वकोटी कुछ कम) है ।

आहारमार्गणा में आहारक जीवों में आठ कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है । सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

अनाहारक जीवों में कार्माणकाययोगी के समान भंग है ।

इसप्रकार जघन्य प्रदेशबंध का अंतर समाप्त हुआ ।

इसप्रकार अंतर समाप्त हुआ ।

-0-

सन्निकर्ष

(पन्द्रहवां अनुयोगद्वार - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में सन्निकर्ष)

सन्निकर्ष दो प्रकार का है - जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है ।

उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश । उनमें से ओघ की अपेक्षा ज्ञानावरण कर्म के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव नियम से पांच कर्मों का बंधक होता है, जो इनके उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । इसीप्रकार शेष पांच कर्मों में से एक-एक को मुख्य करके सन्निकर्ष होता है ।

मोहनीय कर्म के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव आयु बिना शेष छह कर्मों का नियम से बंधक होता है, जो नियम से संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है ।

आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव नियम से शेष सात कर्मों का बंधक होता है, जो नियम से संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । इसीप्रकार मनुष्य, पंचेन्द्रियद्विक, त्रसद्विक, पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, काययोगी, औदारिक काययोगी, लोभकषायी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, संयत, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, शुक्ललेश्यावाले, भव्य, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, संज्ञी, आहारक जीवों में जानना चाहिए ।

आदेश से नारकियों में ज्ञानावरण कर्म के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव नियम से आयु बिना छह कर्मों का बंधक होता है, जो इनके उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । इसीप्रकार इन छह कर्मों में से एक-एक को मुख्य करके सन्निकर्ष होता है । आयुकर्म का सन्निकर्ष ओघ के समान है ।

इसीप्रकार तिर्यंच, देव, सभी एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, पांचों स्थावरकायिक, वैक्रियिक-काययोगी, आहारककाययोगी, आहारकमिश्रकाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी, क्रोध-मान-माया कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, विभंगज्ञानी, असंयत, संयतासंयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, पांच लेश्यावाले (शुक्ललेश्या बिना), अभव्य, सासादन सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि, असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

उपशम सम्यग्दृष्टि, अपगतवेदी जीवों में सात कर्मों का भंग ओघ के समान है ।

सूक्ष्मसाम्परायसंयतों में ओघ में ज्ञानावरण के समान भंग है ।

शेष मार्गणाओं (कार्माणकाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, अनाहारक) में आयुबिना सात कर्मों का सन्निकर्ष नारकियों के समान है ।

अब जघन्य सन्निकर्ष का प्रकरण है । उसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश । उनमें से ओघ की अपेक्षा ज्ञानावरण कर्म के जघन्य प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव आयु बिना शेष छह कर्मों का नियम से बंध करता है, जो नियम से इनके जघन्य प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार इन छह कर्मों में से एक-एक को मुख्य करके सन्निकर्ष होता है ।

आयुकर्म के जघन्य प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव नियम से शेष सात कर्मों का बंध करता है, जो नियम से संख्यातवां भाग अधिक अजघन्य प्रदेशों का बंध करता है ।

इसीप्रकार चारों गतियों के, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, छहों कायिक, औदारिक- मिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी (आयु बिना), वैक्रियिकमिश्रकाययोगी (आयु बिना), स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी, चारों कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षु-अचक्षु-अवधिदर्शनी, असंयत, छहों लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, वेदक सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि (आयु बिना), औपशमिक सम्यग्दृष्टि (आयु बिना), संज्ञी, असंज्ञी, आहारक, अनाहारक (आयु बिना) जीवों में जानना चाहिए ।

वैक्रियिककाययोगी और औदारिककाययोगी जीवों में इसीप्रकार जानना चाहिए। अथवा यदि घोलमान योग में जघन्य प्रदेशबंध मानेंगे तो ज्ञानावरण कर्म के जघन्य प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव नियम से शेष सात कर्मों का बंध करता है जो नियम से जघन्य प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार शेष सात कर्मों में से एक-एक को मुख्य करके सन्निकर्ष होता है ।

इसीप्रकार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, विभंगज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, संयतासंयत, संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत जीवों में जानना चाहिए। (एक का जघन्य हो तो सातों कर्मों का जघन्य होता है -घोलमान योग में आयुकर्म के साथ) ।

सूक्ष्मसाम्परायसंयतों में ज्ञानावरण कर्म के जघन्य प्रदेशों का बंध करनेवाला

जीव शेष पांच कर्मों का नियम से बंध करता है, जो नियम से जघन्य प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार इन पांचों कर्मों का सन्निकर्ष होता है ।

सन्निकर्ष समाप्त हुआ ।

-0-

नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय

(सोलहवां अनुयोगद्वार - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में भंगविचय)

नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार का है - जघन्य और उत्कृष्ट। उत्कृष्ट का प्रकरण है । उसमें यह अर्थपद है - जो जिस प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशों के बंधक होते हैं, वे उसके अनुत्कृष्ट प्रदेशों के अबंधक होते हैं । जो जिस प्रकृति के अनुत्कृष्ट प्रदेशों के बंधक होते हैं, वे उसके उत्कृष्ट प्रदेशों के अबंधक होते हैं, उनका यहां प्रकरण है, अबंधकों का प्रकरण नहीं है । इस अर्थपद की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश । उनमें से ओघ की अपेक्षा सभी मूल प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध की अपेक्षा तीन भंग प्राप्त होते हैं - १) कदाचित् सब जीव उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले नहीं होते । २) कदाचित् अनेक जीव उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले नहीं होते और एक जीव उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला होता है । ३) कदाचित् अनेक जीव उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले नहीं होते और अनेक जीव उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले होते हैं । इन छह कर्मों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध की अपेक्षा तीन भंग प्राप्त होते हैं - १) कदाचित् सब जीव अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले होते हैं । २) कदाचित् अनेक जीव अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले होते हैं और एक जीव अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला नहीं होता । ३) कदाचित् अनेक जीव अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले होते हैं और अनेक जीव अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले नहीं होते ।

आदेश से नारकियों में आयु को छोड़कर सात कर्मों के भंग ओघ के समान है । आयुकर्म की अपेक्षा उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध के आठ-आठ भंग होते हैं । इसीप्रकार सब पृथ्वियों में जानना चाहिए ।

एकेन्द्रिय, बादर और सूक्ष्म तथा बादर और सूक्ष्मों के पर्याप्त और अपर्याप्त

इनमें सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेश के बंधक जीव भी हैं और अबन्धक जीव भी है । इसीप्रकार पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक तथा इनके बादर और बादर अपर्याप्त तथा सब सूक्ष्म और इनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवों में जानना चाहिए । सब वनस्पतिकायिक और सब निगोद तथा इनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवों में तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर और उनके अपर्याप्तों में जानना चाहिए ।

अन्य जितनी मार्गणायें हैं उनमें नारकियों के समान भंग जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मनुष्य अपर्याप्त, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारककाययोगी, आहारकमिश्रकाययोगी, अपगतवेदी, सूक्ष्मसाम्परायसंयत, उपशम सम्यग्दृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सब प्रकृतियों के आठ भंग होते हैं ।

जघन्य का प्रकरण है । उसमें उत्कृष्ट के समान अर्थपद है । इसकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश । ओघ से सभी प्रकृतियों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशों के बन्धक जीव हैं और अबन्धक जीव भी हैं ।(देखिए – पुस्तक ६, पृष्ठ ३५३)

इसीप्रकार ओघ के समान सामान्य तिर्यंच, सब एकेन्द्रिय, पांचों स्थावरकायिक, काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्ण–नील–कापोत लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, आहारक और अनाहारक जीवों में जानना चाहिए ।

शेष मार्गणाओं में अपने–अपने उत्कृष्ट के समान भंग है ।

भागाभागप्ररूपणा

(सत्रहवां अनुयोगद्वार – मूलप्रकृति प्रदेशबंध में भागाभाग)

भागाभाग दो प्रकार का है – जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश । ओघ से आठों प्रकृतियों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव सब जीवों के कितने भागप्रमाण है ? अनन्तवें

भाग प्रमाण हैं । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव सब जीवों के अनंत बहुभाग प्रमाण हैं । इसीप्रकार ओघ के समान सामान्य तिर्यंच, काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्ण-नील-कापोत लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, आहारक और अनाहारक जीवों में जानना चाहिए ।

असंख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव क्रमशः असंख्यातवें भाग और असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं तथा संख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव क्रमशः संख्यातवें भाग और संख्यात बहुभाग प्रमाण हैं ।

शेष मार्गणाओं में भी (एकेन्द्रिय, उसके सभी भेद, वनस्पतिकायिक, निगोद) उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव क्रमशः असंख्यातवें भाग और असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं ।

जघन्य का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश। ओघ से सभी प्रकृतियों का जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीव सब जीवों के कितने भाग प्रमाण हैं ? असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीव सब जीवों के कितने भाग प्रमाण हैं ? असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं । इसीप्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि संख्यात संख्यावाली राशियों में वे क्रमशः संख्यातवें भाग और संख्यात बहुभाग प्रमाण है ।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

परिमाणप्ररूपणा

(अठारहवां अनुयोगद्वार - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में परिमाण)

परिमाण दो प्रकार का है - जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश । ओघ से ज्ञानावरणादि छह कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । उनका अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव अनंत हैं । मोहनीय और आयु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध

करनेवाले जीव असंख्यात हैं और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव अनंत हैं। इसीप्रकार ओघ के समान काययोगी, औदारिककाययोगी, लोभकषायवाले, अचक्षुदर्शनी, भव्य और आहारक जीवों में जानना चाहिए ।

आदेश से नारकियों में आठों कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । इसीप्रकार सब नारकी, पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, देव (सामान्य, सहस्रार तक के देव), विकलेन्द्रिय, चार स्थावरकायिक और प्रत्येक वनस्पतिकायिक, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी (सात कर्म), स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, विभंगज्ञानी, संयतासंयत, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, वेदक सम्यग्दृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

सामान्य तिर्यंचों में आठों कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव असंख्यात हैं और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव अनंत हैं । इसीप्रकार औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोध-मान-माया कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, कृष्ण-नील-कापोत लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, अनाहारक (सात कर्म) जीवों में जानना चाहिए ।

मनुष्यों में (सामान्य) आठों कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव संख्यात हैं और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव असंख्यात हैं । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस, त्रस पर्याप्त, पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनवाले, अवधिदर्शनवाले जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें मोहनीय और आयु का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव असंख्यात हैं ।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में छह कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव संख्यात हैं और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव असंख्यात हैं । मोहनीय के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव असंख्यात हैं । आयु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीव संख्यात हैं । इसीप्रकार क्षायिक सम्यग्दृष्टि और उपशम सम्यग्दृष्टि (आयु बिना) जीवों में जानना चाहिए ।

मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनी में आठों कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध

करनेवाले जीव संख्यात हैं । इसीप्रकार सर्वार्थसिद्धि के देव, आहारककाययोगी, आहारकमिश्रकाययोगी, अपगतवेदी (७ कर्म), संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्म- साम्परायसंयत (६ कर्म), मनःपर्ययज्ञानी जीवों में जानना चाहिए ।

जघन्य का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश।

ओघ से आठों कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीव अनंत हैं । इसीप्रकार ओघ के समान सामान्य तिर्यंच, एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, उनके पर्याप्त, अपर्याप्त, वनस्पतिकायिक, निगोद, काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी (सात कर्म), नपुंसकवेदी, चारों कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्ण-नील-कापोत लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, आहारक, अनाहारक (सात कर्म) जीवों में जानना चाहिए ।

आदेश से नारकियों में सभी कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीव असंख्यात हैं । इसीप्रकार असंख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि शुक्ललेश्या में आयुकर्म के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीव संख्यात हैं ।

मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनी में आठों कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीव संख्यात हैं । इसीप्रकार संख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में जानना चाहिए ।

इसप्रकार परिमाण समाप्त हुआ ।

-0-

क्षेत्रप्ररूपणा

(उन्नीसवां अनुयोगद्वार - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में क्षेत्र)

क्षेत्र दो प्रकार का है - जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है। निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश । ओघ से आठों कर्मों

के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का कितना क्षेत्र है ? लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का कितना क्षेत्र हैं? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । इसीप्रकार ओघ के समान सामान्य तिर्यंच, काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी (सात कर्म), नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्ण-नील-कापोत लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, आहारक और अनाहारक (सात कर्म) जीवों में जानना चाहिए ।

आदेश से सभी नारकियों में आठों कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का कितना क्षेत्र है ? लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय-तिर्यंचत्रिक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त, सभी मनुष्य, सभी देव, विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस, त्रस पर्याप्त, पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी (७ कर्म), आहारककाययोगी, आहारकमिश्र-काययोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, अपगतवेदी, विभंगज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, संयतासंयत, संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत, पीत-पद्म-शुक्ल लेश्यावाले, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, संज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त जीवों में सभी कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है, इतनी विशेषता है कि एकेन्द्रिय में आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का लोक के संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । बादर एकेन्द्रिय में आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का लोक के संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है ।

पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, बादर पृथ्वीकायिक, बादर जलकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । आयुकर्म के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । इसीप्रकार वायुकायिक जीवों में भी जानना चाहिए - इतनी विशेषता

है कि जहां लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है वहां लोक के संख्यातवें भागप्रमाण जानना चाहिए ।

वनस्पतिकायिकों में एकेन्द्रियों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि जहां लोक के संख्यातवें भागप्रमाण कहा है, वहां लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र कहना चाहिए ।

जघन्य का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश। ओघ से आठों कर्मों का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । उत्कृष्ट क्षेत्र संबंधी जिन मार्गणाओं में ओघ के समान क्षेत्र कहा था, उन मार्गणाओं में यहां भी जानना चाहिए ।

आदेश से - नारकियों में आठों कर्मों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । इसीप्रकार सब संख्यात और असंख्यात राशिवाली मार्गणाओं में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि बादर और बादर पर्याप्त पृथ्विकायिक, बादर जलकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर वायुकायिक, बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीवों में आयु बिना सात कर्मों के अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है ।

इसप्रकार क्षेत्र समाप्त हुआ ।

स्पर्शनप्ररूपणा

(बीसवां अनुयोगद्वार - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में स्पर्शन)

स्पर्शनानुगम दो प्रकार का है - जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश । ओघ से छह कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने कितने क्षेत्र का स्पर्शन किया है ? लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । तथा इनका अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सब लोक का स्पर्शन किया है । मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण

क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भाग, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है तथा इनके अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सब लोक का स्पर्शन किया है ।

आदेश से नारकियों में आयु बिना सात कर्मों का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार सब नारकियों का अपना अपना स्पर्शन ले जाना चाहिए ।

सामान्य तिर्यंचों में सात कर्मों का (आयु बिना) उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का (मारणांतिक में) स्पर्शन किया है तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक तथा पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धिअपर्याप्तकों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आयु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में मोहनीय बिना सात कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है। तथा आयु बिना सात कर्मों का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले और मोहनीय का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सब लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । (छह कर्म – उत्कृष्ट लोक का असंख्यातवां भाग, अनुत्कृष्ट सर्व लोक, मोहनीय – उत्कृष्ट लोक का असंख्यातवां भाग और सर्व लोक, अनुत्कृष्ट लोक का असंख्यातवां भाग और सर्व लोक, आयु – उत्कृष्ट लोक का असंख्यातवां भाग, अनुत्कृष्ट लोक का असंख्यातवां भाग) ।

मनुष्य अपर्याप्तकों में पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त के समान भंग है ।

देवों में – आयु बिना सात कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग तथा त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार भवनत्रिक और सौधर्म-ईशानवाले देवों में जानना चाहिए । सनत्कुमार से सहस्रार तक के देवों में इसीप्रकार जानना । इतनी विशेषता है कि इनमें नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र नहीं है। आनतादि देवों में यह स्पर्शन कुछ कम छह बटे चौदह है । ग्रैवेयकादि देवों में यह स्पर्शन लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

एकेन्द्रियों में सात कर्मों के (आयु बिना) उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण (वायुकायिक की अपेक्षा लोक के संख्यातवें भागप्रमाण) तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार पांच स्थावरकायिकों में जानना चाहिए । बादर एकेन्द्रियों तथा बादर पृथ्विकायिकादियों में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आयु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और बादर वायुकायिकों में लोक के संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सभी सूक्ष्म जीवों में आठों कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का सर्व लोकप्रमाण स्पर्शन है ।

विकलेन्द्रियों में पंचेन्द्रिय तिर्यंच के समान भंग है ।

पंचेन्द्रियद्विक, त्रसद्विक में मनुष्यों के समान भंग है, मोहनीय और आयु में उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण भी स्पर्शन है । इसीप्रकार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, लोभ कषायवाले, चक्षुदर्शनी, संज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

काययोगी, औदारिककाययोगी, अचक्षुदर्शनी, भव्य, आहारक जीवों में ओघ

के समान भंग है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों में आठों कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । (औदारिक मिश्रकाययोग में उत्कृष्ट प्रदेशबंध संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य, तिर्यंचों के निर्वृत्तिअपर्याप्त के अंतिम समय में होता है, जिनके मारणांतिक नहीं हो सकता ।)

वैक्रियिककाययोगी जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण तथा त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है।

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में आठों कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार अपगतवेदी, मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में अपनी अपनी प्रकृतियों में जानना चाहिए ।

कार्माणकाययोगी जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार अनाहारक जीवों में जानना चाहिए ।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवों में सात कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण

तथा त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है।

नपुंसकवेदी जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है। तथा आठ कर्मों का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । (सामान्य तिर्यंचों के समान।)

इसीप्रकार क्रोध, मान, माया कषायवाले मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, कृष्ण-नील-कापोत लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

विभंगज्ञानी जीवों में वैक्रियिककाययोगी के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि सात कर्मों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का भी स्पर्शन किया है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में छह कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । तथा इनका अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । मोहनीय, आयु का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार अवधिदर्शनी, उपशम सम्यग्दृष्टि (सात कर्म), क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

संयतासंयत जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है (तिर्यंचों का देव में मारणांतिक) । आयुकर्म का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

पीतलेश्यावाले जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है।

आयु का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

पद्मलेश्यावाले जीवों में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें त्रसनाली के कुछ कम नौ बटे चौदह भागवाला भंग नहीं होता है ।

वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में पद्मलेश्या के समान भंग है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सात कर्मों का भंग इसीप्रकार जानना चाहिए ।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में छह कर्मों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । तथा छह कर्मों का अनुत्कृष्ट और मोहनीय, आयु का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

जघन्य का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से आठों कर्मों का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार ओघ के समान सामान्य तिर्यंच, एकेन्द्रिय, पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद और सब बादर जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि बादर एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त, अपर्याप्तों में जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

तथा ओघ के समान काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्माण- काययोगी (सात कर्म), नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी,

श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्ण–नील–कापोत लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, आहारक और अनाहारक (सात कर्म) जीवों में जानना चाहिए ।

आदेश से – नारकियों में सात कर्मों का जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सब नारकियों में अपना अपना स्पर्शन ले जाना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों में सात कर्मों का जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । तथा अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

इसीप्रकार मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनि, मनुष्य अपर्याप्त, विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रियद्विक, त्रसद्विक, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, चक्षुदर्शनी, संज्ञी जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि पंचेन्द्रियद्विक, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, चक्षुदर्शनी और संज्ञी जीवों में आयु का भंग देवों के समान है ।

देवों में सात कर्मों का जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सात कर्मों का अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है। आयु का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है। इसीप्रकार सब देवों में अपना–अपना स्पर्शन ले जाना चाहिए ।

इसीप्रकार पीतलेश्यावाले जीवों में जानना चाहिए ।

वैक्रियिककाययोगी जीवों में सात कर्मों के जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों

ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवों में सात कर्मों का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है।

इसीप्रकार आहारककाययोगी, आहारकमिश्रकाययोगी, अपगतवेदी, मनःपर्ययज्ञानी,संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में (अपने-अपने सात या आठ कर्मों में) जानना चाहिए ।

पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी जीवों में आठ कर्मों का जघन्य और आयु का अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले (घोलमानयोग में आठ कर्मों का बंध) जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सात कर्मों का अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

विभंगज्ञानी जीवों में सात कर्मों का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में सात कर्मों का जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है तथा सात कर्मों का अजघन्य और आयु का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इसीप्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि और वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

संयतासंयत जीवों में आठ कर्मों का जघन्य और आयु का अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है। सात कर्मों का अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में सात कर्मों का जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सात कर्मों का अजघन्य तथा आयुकर्म का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

पद्मलेश्यावाले, औपशमिक सम्यग्दृष्टि (सात कर्म) जीवों में सामान्य देवों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि यहां नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र घटित नहीं होता ।

सासादन रुचिवाले जीवों में सात कर्मों का जघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सात कर्मों का अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण, त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है। आयु का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सात कर्मों का जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध करनेवाले जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

इसप्रकार स्पर्शन समाप्त हुआ ।

–0–

कालप्ररूपणा

(इक्कीसवां अनुयोगद्वार - मूलप्रकृति प्रदेशबंध में काल)

काल दो प्रकार का है - जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश । ओघ से छह कर्मों का (मोहनीय, आयु बिना) उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का कितना काल है ? जघन्य काल एक समय है, उत्कृष्ट काल संख्यात समय हैं । इनका अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का कितना काल है ? सर्वदा है ।

मोहनीय, आयु कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इनका अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का काल सर्वदा है ।

इसीप्रकार काययोगी, औदारिककाययोगी, लोभकषायवाले, अचक्षुदर्शनी, भव्य और आहारक जीवों में जानना चाहिए ।

आदेश से नारकियों में सात कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इनका अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का काल सर्वदा है । आयु का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण है, आयु का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार सभी नारकियों में जानना चाहिए ।

इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त, देव (सामान्य, सहस्रार तक के देव), विकलेन्द्रिय, बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त, बादर अग्निकायिक पर्याप्त, बादर वायुकायिक पर्याप्त, बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक पर्याप्त, वैक्रियिककाययोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, विभंगज्ञानी, संयतासंयत, पीत-पद्मलेश्यावाले जीवों में जानना चाहिए ।

सामान्य तिर्यंचों में सात कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण है । तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का काल सर्वदा है । आयु का

भंग ओघ के समान है । इसीप्रकार औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्माणकाययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोध-मान-माया कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, कृष्ण-नील-कापोत लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, अनाहारक जीवों में जानना चाहिए ।

मनुष्यो में आठों कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । सात कर्मों का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का काल सर्वदा है । आयु का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनियों में सामान्य मनुष्यों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि आयु का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । इसीप्रकार सर्वार्थसिद्धि के देव, मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धि- संयत, शुक्ललेश्यावाले जीवों में जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि शुक्ललेश्यावाले जीवों में मोहनीय का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

मनुष्य अपर्याप्तों में आठों कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण है तथा इनका अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि (सात कर्म) जीवों में जानना चाहिए ।

एकेन्द्रियों में तथा इसके सभी भेदों में आठों कर्मों का उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का काल सर्वदा है । इसीप्रकार वनस्पतिकायिक, निगोद, सब सूक्ष्म जीव, बादर पृथ्वीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर अपर्याप्त जीवों में जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रियद्विक में ओघ के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि आयु का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

इसीप्रकार त्रसद्विक, पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि (सात कर्म), संज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण है । तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में आठ कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में सात कर्मों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

अपगतवेदी जीवों में सात कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाले जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । इसीप्रकार सूक्ष्मसाम्पराय संयत जीवों में छह कर्मों का भंग है ।

उत्कृष्ट काल समाप्त हुआ ।

जघन्य काल का प्रकरण है ।(इसके आगे पुस्तक ६, पृष्ठ ४९ से पढ़ना।)

–0–

अब पुस्तक ६, पृष्ठ ८२ का त्रुटित अंश – पहला पैरेग्राफ, नीचे से पांचवीं पंक्ति

पदनिक्षेप

(मूलप्रकृति प्रदेशबंध के पदनिक्षेप में उत्कृष्ट स्वामित्व)

उत्कृष्ट के प्रकरण में मार्गणाओं में – पंचेन्द्रियतिर्यंचत्रिक में सात कर्मों की वृद्धि और अवस्थान का स्वामी सामान्य तिर्यंचों के समान है । उत्कृष्ट हानि का स्वामी कौन है ? सात प्रकार के कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योग से युक्त जो अन्यतर जीव मरा और असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, पर्याप्त और योनिमति जीवों में उत्पन्न हुआ वह उत्कृष्ट हानि का स्वामी है । आयु का भंग ओघ के समान है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों में पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के समान भंग है । इसीप्रकार सब अपर्याप्तकों में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि अपने अपने अपर्याप्तकों में उत्पन्न हुआ जीव उत्कृष्ट हानि का स्वामी है ।

मनुष्यत्रिक में छह कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थान ओघ के समान है । उत्कृष्ट हानि स्वस्थान में करनी चाहिए (छह कर्मों का उत्कृष्ट बंध करनेवाला उत्कृष्ट योग से युक्त जीव प्रतिभग्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान में गिरकर सात कर्मों का बंध करने लगा वह जीव उत्कृष्ट हानि का स्वामी है) । मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थान का भंग ओघ के समान है । उत्कृष्ट हानि का स्वामी कौन है ? सात कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योग से युक्त जीव मरकर क्रमशः मनुष्य अपर्याप्त, मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनी में उत्पन्न हुआ वह जीव उत्कृष्ट हानि का स्वामी है । आयु का भंग ओघ के समान है।

एकेन्द्रियों में आठों कर्मों का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है । इसीप्रकार पांच स्थावरकायिकों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि उत्कृष्ट हानि के लिए अपने-अपने कायिकों के सूक्ष्म अपर्याप्तकों में उत्पन्न कराना चाहिए । इसीप्रकार विकलेन्द्रियों में जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रियों में सभी प्रकृतियों का भंग ओघ के समान है । इतनी विशेषता है कि मोहनीय की उत्कृष्ट हानि के लिए असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवों में

उत्पन्न कराना चाहिए ।

इसीप्रकार त्रसकायिक जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि मोहनीय की उत्कृष्ट हानि के लिए द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवों में उत्पन्न कराना चाहिए।

पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी जीवों में छह कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थान ओघ के समान है और हानि स्वस्थान में उत्कृष्ट अवस्थान के पूर्व समय में होती है । मोहनीय के तीनों पद स्वस्थान में करना चाहिए । आयुकर्म का भंग ओघ के समान है । औदारिक काययोगी जीवों में इसीप्रकार जानना चाहिए (काययोगी जीवों का भंग ओघ के समान है) ।

औदारिकमिश्र काययोगी जीवों में सात कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी कौन है ? निर्वृत्ति अपर्याप्त जीव जो तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान से उत्कृष्ट योगस्थान को प्राप्त होकर अनंतर समय में शरीर पर्याप्ति को प्राप्त करेगा, वह उनकी उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी है । सात कर्मों की उत्कृष्ट हानि का स्वामी कौन है ? इनका बंध करनेवाला उत्कृष्ट योग से युक्त जो जीव मरा और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवों में उत्पन्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान को प्राप्त हुआ, वह उनकी उत्कृष्ट हानि का स्वामी है । उनके उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी कौन है ? सात कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योग से युक्त जो जीव (संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्धिअपर्याप्त) प्रतिभग्न होकर आठ कर्मों का बंध करने लगा और तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान में गिरा, वही अनंतर समय में उनके उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी है । आयु का भंग ओघ के समान है ।

वैक्रियिक काययोगी जीवों का सभी प्रकृतियों का नारकियों के समान भंग है । वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीवों में सात कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी कौन है ? इनका बंध करनेवाला तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान से उत्कृष्ट योगस्थान को प्राप्त होकर अनंतर समय में शरीरपर्याप्ति को प्राप्त करेगा वह उनकी उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी है । आहारक काययोगी जीवों में वैक्रियिक काययोगी के समान भंग है । आहारकमिश्र काययोगी जीवों में सात कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि का भंग वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीवों के समान जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि आठ कर्मों का बंध करनेवाला सात कर्मों का बंध करने लगा ऐसा ओर कहना चाहिए । आयु के वृद्धि का भंग ओघ के समान है ।

कार्माण काययोगी जीवों में सात कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी कौन है ? संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान से (पहले समय में) उत्कृष्ट योगस्थान को प्राप्त हुआ (दूसरे समय में) वह उनकी उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी है । अनाहारक जीवों में इसीप्रकार जानना चाहिए ।

वेदमार्गणा में स्त्रीवेदी जीवों में सात कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी कौन है? जो आठ प्रकार के कर्मों का बंध करनेवाला तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान से उत्कृष्ट योगस्थान को प्राप्त होकर सात प्रकार के कर्मों का बंध करने लगा, वह उनकी उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी है । उनकी उत्कृष्ट हानि का स्वामी कौन है ? सात प्रकार के कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योग से युक्त जो जीव मरा असंज्ञी पंचेन्द्रिय (पर्याप्त) स्त्रीवेदी जीवों में उत्पन्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान में गिरा, वह उनकी उत्कृष्ट हानि का स्वामी है । उनके उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी कौन है ? सात प्रकार के कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योग से युक्त जो जीव प्रतिभग्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान में गिरा और आठ प्रकार के कर्मों का बंध करने लगा, वह उनके उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी है। आयुकर्म का भंग ओघ के समान है ।

पुरुषवेदी जीवों में आठों कर्मों का भंग स्त्रीवेदी जीवों के समान है । इतनी विशेषता है कि सात कर्मों की उत्कृष्ट हानि के लिए असंज्ञी पंचेन्द्रिय पुरुषवेदी जीवों में उत्पन्न कराना चाहिए ।

नपुंसकवेदी जीवों में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सात कर्मों की उत्कृष्ट हानि के लिए सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवों में उत्पन्न कराना चाहिए ।

अपगतवेदी जीवों में छह कर्मों का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि हानि स्वस्थान में कहनी चाहिए । मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी कौन है ? सात कर्मों का बंध करनेवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान से उत्कृष्ट योगस्थान को प्राप्त होता है वह उसकी उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी है । उसकी उत्कृष्ट हानि और उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी कौन है ? सात कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योगस्थान से युक्त जो जीव प्रतिभग्न होकर

तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान को प्राप्त हुआ वह उसकी उत्कृष्ट हानि का स्वामी है और वही अनन्तर समय में उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी है ।

क्रोधादि तीन कषायवाले जीवों में सभी कर्मों का भंग नपुंसकवेदी जीवों के समान है । लोभकषायवाले जीवों में ओघ के समान भंग है ।

मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में आठों कर्मों का भंग नपुंसकवेदी जीवों के समान जानना चाहिए ।

इसीप्रकार मिथ्यादृष्टि, अभव्य, असंयत, तीन अशुभ लेश्यावाले और असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

विभंगज्ञानी जीवों में आठों कर्मों के तीनों ही पद स्वस्थान में कहने चाहिए।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में छह कर्मों का और आयु का भंग ओघ के समान है । मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थान का भंग ओघ के समान है । उत्कृष्ट हानि के लिए मरकर अन्य गति में उत्पन्न कराना चाहिए। इसीप्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि और उपशम सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में छह कर्मों का भंग पुरुषवेदी जीवों के समान है।

मनःपर्ययज्ञानी जीवों में सात कर्मों का भंग मनुष्यों के समान है । मोहनीय के तीनों पद स्वस्थान में कहने चाहिए । इसीप्रकार संयतों में जानना चाहिए।

सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, संयतासंयत जीवों में आठों कर्मों का भंग स्त्रीवेदी जीवों के समान जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि उत्कृष्ट हानि स्वस्थान में कहनी चाहिए ।

सूक्ष्मसाम्परायिकसंयत जीवों में छह कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी कौन है ? जो तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान से उत्कृष्ट योगस्थान को प्राप्त हुआ है, वह उनकी उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी है । उनकी उत्कृष्ट हानि और उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी कौन है ? जो उत्कृष्ट योगस्थान से प्रतिभग्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान में गिरा है, वह उनकी उत्कृष्ट हानि का स्वामी है तथा वही अनन्तर समय में उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी है ।

चक्षुदर्शनवाले जीवों में सात कर्मों का भंग ओघ के समान है । मोहनीय के उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थान का भंग ओघ के समान है तथा उत्कृष्ट हानि के लिए चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकों में उत्पन्न कराना चाहिए ।

पीतलेश्यावाले जीवों में सात कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी कौन है? आठ प्रकार के कर्मों का बंध करनेवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान से उत्कृष्ट योगस्थान को प्राप्त होकर सात प्रकार के कर्मों का बंध करने लगा, वह उनकी उत्कृष्ट वृद्धि का स्वामी है । उनकी उत्कृष्ट हानि का स्वामी कौन है ? सात प्रकार के कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योगस्थान से युक्त जीव मरा और देव में उत्पन्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान में गिरा, वह उनकी उत्कृष्ट हानि का स्वामी है । उनकी उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी कौन है ? सात प्रकार के कर्मों का बंध करनेवाला उत्कृष्ट योगस्थान से युक्त जीव प्रतिभग्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थान में गिरा और आठ प्रकार के कर्मों का बंध करने लगा, वह अनन्तर समय में उनके उत्कृष्ट अवस्थान का स्वामी है । आयुकर्म का भंग ओघ के समान है ।

पद्मलेश्या में भी इसीप्रकार जानना चाहिए ।

शुक्ललेश्या में छह प्रकृतियों का तथा आयु का भंग ओघ के समान है । मोहनीय कर्म के उत्कृष्ट वृद्धि और अवस्थान का भंग ओघ के समान है, उत्कृष्ट हानि के लिए मरकर देव में उत्पन्न कराना चाहिए ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में आठों कर्मों का भंग मत्यज्ञानी जीवों के समान है, इतनी विशेषता है कि सात कर्मों की उत्कृष्ट हानि के लिए मरकर एकेन्द्रियों (बादर एके. पर्याप्त) में उत्पन्न कराना चाहिए । (संदर्भ–महाबंध पु. ७ पृ. २२३)

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सात कर्मों के तीनों पद स्वस्थान में तथा सात कर्मों का बंध करनेवाले के कहना चाहिए ।

संज्ञी जीवों में आठों कर्मों का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि मोहनीय की उत्कृष्ट हानि के लिए संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकों में उत्पन्न कराना चाहिए ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

–0–

(मूलप्रकृति प्रदेशबंध के पदनिक्षेप में जघन्य स्वामित्व)

जघन्य का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से आठों कर्मों की जघन्य वृद्धि का स्वामी कौन है ? जो कोई परम्परा पर्याप्तक जीव या परम्परा अपर्याप्तक जीव जहां कहीं से अधस्तन अनन्तर योगस्थान से उपरितन अनन्तर योगस्थान को प्राप्त हुआ वह उनकी जघन्य वृद्धि का स्वामी है । उनकी जघन्य हानि का स्वामी कौन है ? जो कोई परम्परा पर्याप्तक जीव या परम्परा अपर्याप्तक जीव जहां कहीं से उपरिम अनन्तर योगस्थान से अधस्तन अनन्तर योगस्थान को प्राप्त हुआ, वह उनकी जघन्य हानि का स्वामी है । तथा इनमें से किसी एक स्थान में जघन्य अवस्थान होता है ।

इसीप्रकार ओघ के समान सभी मार्गणाओं में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्र काययोगी और आहारकमिश्र काययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों की जघन्य वृद्धि का स्वामी जिसे उस योग को प्राप्त हुए दो समय हुए हैं ऐसा अन्यतर जीव है। कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सब प्रकृतियों की जघन्य वृद्धि का स्वामी जिसे विग्रहगति को प्राप्त हुये दो समय हुये हैं ऐसा अन्यतर सूक्ष्म जीव है ।

इसप्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

इसप्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

–0–

(मूलप्रकृति प्रदेशबंध के पदनिक्षेप में) अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व दो प्रकार का है – जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश । ओघ से सातों कर्मों की उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है, उससे उत्कृष्ट अवस्थान विशेष अधिक है, उससे उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है । आयु कर्म की उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक

है, उससे उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों परस्पर में तुल्य होकर भी विशेष अधिक है । इसीप्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि मरण होनेपर जो मार्गणा बदल जाती हैं उनमें हानि और अवस्थान तुल्य होते हैं (आयु समान) तथा वैक्रियिकमिश्र काययोग, आहारकमिश्र काययोग कार्माण काययोग और अनाहारक मार्गणाओं में मात्र वृद्धि ही होती है ।

इसप्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जघन्य का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है –ओघ और आदेश। ओघ से आठों कर्मों की जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान तीनों ही तुल्य है। इसीप्रकार अनाहारक मार्गणा तक जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्र काययोगी, आहारकमिश्र काययोगी, कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में जघन्य वृद्धि है, हानि और अवस्थान नहीं है । इसप्रकार जघन्य अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

इसप्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ । इसप्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

–0–

मूलप्रकृति प्रदेशबंध में वृद्धिबंध

आगे वृद्धिबंध का प्रकरण है । उसमे ये तेरह अनुयोग द्वार होते हैं । यथा – समुत्कीर्तना, स्वामित्व, काल, अंतर, भंगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव और अल्पबहुत्व ।

वृद्धिबंधसमुत्कीर्तना

समुत्कीर्तना का निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश । ओघ से आठों कर्मों की असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद के बंधक जीव हैं ।

इसप्रकार ओघ के समान मनुष्यत्रिक, पंचेन्द्रियद्विक, त्रसद्विक, पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, काययोगी, औदारिक काययोगी, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, शुक्ललेश्यावाले, भव्य, संज्ञी और आहारक जीवों में जानना चाहिए । इसीप्रकार आभिनिबोधिकज्ञानी,

श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

नारकियों में आयु का भंग ओघ के समान है । शेष कर्मों में चार वृद्धि, चार हानि और अवस्थित पद के बंधक जीव हैं । इसीप्रकार सब नारकी, तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक, सब देव, वैक्रियिक काययोगी, असंयत, पांच लेश्यावाले, तीनों वेदवाले, क्रोधादि तीन कषायवाले, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत जीवों में जानना चाहिए ।

इसीप्रकार सभी एकेन्द्रिय, सभी विकलेन्द्रिय, सभी अपर्याप्तक, पांचों स्थावरकायिक, औदारिकमिश्र काययोगी, आहारक काययोगी, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, विभंगज्ञानी, परिहारविशुद्धि संयत, संयतासंयत, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि (सात कर्म), असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए ।

वैक्रियिकमिश्र काययोगी, आहारकमिश्र काययोगी, कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सात कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि के बंधक जीव हैं । इतनी विशेषता है कि आहारकमिश्र काययोगी जीवों में आयु कर्म के असंख्यातगुणवृद्धि और अवक्तव्य पद हैं ।

लोभकषायवाले जीवो में नारकियों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनमें मोहनीय कर्म का अवक्तव्य पद भी है ।

अपगतवेदवाले जीवों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद के बंधक जीव हैं । सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में छह कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीव हैं ।

इसप्रकार समुत्कीर्तना समाप्त हुयी ।

वृद्धिबंध में स्वामित्व

स्वामित्वानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश।

ओघ से आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित बंध का अन्यतर जीव स्वामी है । सात कर्मों के अवक्तव्य पद का स्वामी उपशमश्रेणी से गिरनेवाला अन्यतर मनुष्य और मनुष्यनी तथा प्रथम समयवर्ती देव है । आयु

के अवक्तव्य पद का स्वामी प्रथम समय में आयुबंध करनेवाला अन्यतर जीव है । इसीप्रकार मनुष्यत्रिक, पंचेन्द्रियद्विक, त्रसद्विक, ५ मनोयोगी, ५ वचनयोगी, काययोगी, औदारिक काययोगी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि, शुक्ललेश्यावाले, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, भव्य, संज्ञी और आहारक जीवों में जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि मनुष्यत्रिक, ५ मनोयोगी, ५ वचनयोगी और औदारिक काययोगी जीवों में अवक्तव्य पद का स्वामी देव है ऐसा नहीं कहना चाहिए ।

लोभकषायवाले जीवों में आठों कर्मों का भंग ओघ के समान है । इतनी विशेषता है कि ६ कर्मों के अवक्तव्य पद नहीं है (आयु और मोहनीय बिना)।

नारकियों में आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित बंध का अन्यतर जीव स्वामी है, आयु के अवक्तव्य पद का स्वामी ओघ के समान है। इसीप्रकार शेष सभी मार्गणाओं में जानना चाहिए ।

इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्र काययोगी, आहारकमिश्र काययोगी, कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सातों कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि का स्वामी अन्यतर जीव है । आहारकमिश्र काययोगी जीवों में आयुकर्म के असंख्यागुणवृद्धि का स्वामी अन्यतर जीव है तथा अवक्तव्य पद का स्वामी ओघ के समान है।

अपगतवेदी जीवों में सात कर्मों का भंग मनुष्यत्रिक के समान है । सूक्ष्मसाम्परायिक जीवों में ६ कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि, अवस्थित बंध का अन्यतर जीव स्वामी है ।

इसप्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में काल (एक जीव की अपेक्षा)

कालानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश। ओघ से आठों कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । शेष ३ वृद्धि और ३ हानि का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलि के असंख्यातवें भागप्रमाण

है । आठ कर्मों के अवस्थित बंध का जघन्य काल एक समय है, आयुकर्म के अवस्थित बंध का उत्कृष्ट काल ७ समय है तथा शेष सात कर्मों के अवस्थित बंध का उत्कृष्ट काल ११ अथवा १५ समय है। आठ कर्मों के अवक्तव्य बंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । इसीप्रकार अनाहारक मार्गणा तक जान लेना चाहिए ।

इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्र काययोगी और आहारकमिश्र काययोगी जीवों में सातों कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । आहारकमिश्र काययोगी जीवों में आयु कर्म के असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है तथा अवक्तव्य बंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सातों कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय (? तीन समय) है।

सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में छह कर्मों के ४ वृद्धि और ४ हानि का काल ओघ के समान है । अवस्थित बंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल सात समय है ।

इसप्रकार काल समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में अंतर (एक जीव की अपेक्षा)

अंतरानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश। ओघ से सात कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है। शेष दो वृद्धि, दो हानि और अवस्थित बंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परिवर्तन प्रमाण है । आयु कर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि, अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । अंत की दो वृद्धि, दो हानि और अवक्तव्य का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (१/३ पूर्वकोटी + कुछ

कम ३३ सागर)। मध्य की दो वृद्धि, दो हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

नारकियों में सात कर्मों की अंत की दो वृद्धि और दो हानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । मध्य की दो वृद्धि, दो हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर एक अंतर्मुहूर्त अधिक दो समय कम तैंतीस सागर है । (संदर्भ - पुस्तक ६, पृष्ठ ५८ - भुजगार में अंतरानुगम) । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है । आयु के अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है । इसीप्रकार सब नारकियों में अपना-अपना अंतर जानना चाहिए।

तिर्यंचों में सात कर्मों की अंत की दो वृद्धि और दो हानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । मध्य की दो वृद्धि, दो हानि और अवस्थित पद का भंग ओघ के समान है । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । अंत की दो वृद्धि, दो हानि और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य (१/३ पूर्वकोटी + अंतर्मुहूर्त कम ३ पल्य) है । मध्य की दो वृद्धि, दो हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है (ओघ के समान) ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में सात कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी अपनी कायस्थितिप्रमाण (कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक ३ पल्य) है । आयुकर्म का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है । इतनी विशेषता है कि ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी कायस्थितिप्रमाण है ।

सब अपर्याप्तकों में आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । तथा आयु कर्म के अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यों में (मनुष्यत्रिक में) आठों कर्मों का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंच के समान है । इतनी विशेषता है कि सात कर्मों के अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व प्रमाण है ।

देवों में सात कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । उनके ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तैंतीस सागर है । आयुकर्म का भंग नारकियों के समान है । इसीप्रकार सब देवों में अपना-अपना अंतर करना चाहिए ।

एकेन्द्रियों में सात कर्मों का भंग ओघ के समान है । इतनी विशेषता है कि इनमें उनका अवक्तव्य पद नहीं है । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । अंत की दो वृद्धि, दो हानि और अवक्तव्य का उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष है । मध्य की दो वृद्धि, दो हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । (मध्य की दो या तीन (?) वृद्धि-हानि)

पंचेन्द्रियद्विक और त्रसद्विक जीवों में सात कर्मों की असंख्यातगुणवद्धि और असंख्यातगुणहानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । उनकी ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी-अपनी कायस्थितिप्रमाण है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी-अपनी कायस्थितिप्रमाण है । आयु कर्म का भंग ओघ के समान है। इतनी विशेषता है कि मध्य की दो वृद्धि (? तीन), दो हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी-अपनी कायस्थितिप्रमाण है ।

५ मनोयोगी और ५ वचनयोगी जीवों में आठों कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इनके अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

काययोगी जीवों में सात कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि

का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इनके ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इनके अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है । आयु के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

औदारिक काययोगी जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम २२००० वर्ष है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है। आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और सभी पदों का उत्कृष्ट अंतर साधिक सात हजार वर्ष है ।

औदारिकमिश्र काययोगी जीवों में आठों कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म के अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (सात कर्मों में अवक्तव्य पद नहीं है) ।

वैक्रियिक काययोगी और आहारक काययोगी जीवों में मनोयोगी जीवों के समान भंग है । वैक्रियिकमिश्र काययोगी, आहारकमिश्र काययोगी, कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सातों कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि का और आहारकमिश्र काययोगी में आयुकर्म के अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

स्त्रीवेदी जीवों में सात कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कायस्थितिप्रमाण (कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व प्रमाण) है । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट

अंतर साधिक पचपन पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ५५ पल्य कुछ कम) है । शेष पदों का अंतर कायस्थिति प्रमाण है ।

पुरुषवेदी जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का भंग स्त्रीवेदी जीवों के समान है, इतनी विशेषता है कि अपनी कायस्थिति (सौ सागर पृथक्त्व) जानना चाहिए । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है। असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर) तथा शेष पदों का उत्कृष्ट अंतर कायस्थिति प्रमाण है ।

नपुंसकवेदी जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतमुहूर्त है । १ वृद्धि, १ हानि और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (१/३ पूर्वकोटी + ३३ सागर कुछ कम) तथा ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । (संदर्भ - पुस्तक ६, पृष्ठ ६२ - भुजगार का अंतर)

अपगतवेदी जीवों में सातों कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

क्रोधादि चार कषायवाले जीवों में आठों कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इनमें आयु का अवक्तव्य पद है परंतु अंतर नहीं है । लोभकषाय में मोहनीय कर्म का अवक्तव्य पद है परंतु उसका अंतर नहीं है ।

इसीप्रकार क्रोधादि तीन कषायवालों के समान सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में आठों कर्मों का भंग नपुंसकवेदी जीवों के समान है । इसीप्रकार अभव्य और मिथ्यादृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

विभंगज्ञानी जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । १ वृद्धि, १ हानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है (नारकियों के समान)। आयु का भंग नारकियों के समान है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । १ वृद्धि, १ हानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है (४ पूर्वकोटी ल ६६ सागर) । इनके अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है। १ वृद्धि, १ हानि और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है । इसीप्रकार अवधिदर्शनी और सम्यग्दृष्टि जीवों में जानना चाहिए ।

मनःपर्ययज्ञानी और संयत जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । १ वृद्धि, १ हानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य का जघन्य अंतर ज्ञानावरण के समान है । सभी का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है।

इसीप्रकार सामायिक-छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, संयतासंयत जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें सात कर्मों का अवक्तव्य पद नहीं है ।

सूक्ष्मसाम्परायसंयतों में छहों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पदों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

असंयतों में नपुंसकवेदी जीवों के समान भंग है ।

चक्षुदर्शनी जीवों में त्रस पर्याप्त जीवों के समान भंग है ।

अचक्षुदर्शनी और भव्य जीवों में ओघ के समान भंग है ।

छह लेश्याओं में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर क्रमशः साधिक ३३ सागर, साधिक १७ सागर, साधिक ७ सागर, साधिक २ सागर, साधिक १८ सागर और ३३ सागर है । कृष्णादि पांच लेश्याओं में इनका अवक्तव्य पद नहीं है और शुक्ललेश्या में अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है । आयु का भंग नारकियों के समान है (सभी पदों का उत्कृष्ट अंतर ६ महिना है) ।

उपशम सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है। १ वृद्धि और १ हानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । आयुकर्म के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त तथा सभी पदों का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । १ वृद्धि, १ हानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है । आयुकर्म का भंग सम्यग्दृष्टि के समान है । इतनी विशेषता है कि आयुकर्म के ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है ।

संज्ञी जीवों में पंचेन्द्रिय पर्याप्त के समान भंग है ।

असंज्ञी जीवों में सात कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । १ वृद्धि, १ हानि का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । आयु के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । १ वृद्धि, १ हानि और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक १ पूर्वकोटी (१/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी कुछ कम) है । शेष पदों का उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान (जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण) है ।

आहारक जीवों में सभी कर्मों का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित और सात कर्मों के अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

इसप्रकार अंतरकाल समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय

नाना जीवों का अवलम्बन लेकर भंगविचयानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश । ओघ से आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीव नियम से हैं । आयुकर्म के अवक्तव्य पद के बंधक जीव नियम से हैं; शेष सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीव भजनीय हैं, उनमें तीन भंग होते हैं। इसीप्रकार ओघ के समान सामान्य तिर्यंच, सभी एकेन्द्रिय, ५ स्थावरकायिक, काययोगी, औदारिक काययोगी, औदारिकमिश्र काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, ३ अशुभ लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी और आहारक जीवों में जानना चाहिए (सात कर्मों का अवक्तव्य पद जिन मार्गणा में पाया जाता है उसे जानकर कहना चाहिए) ।

सांतर मार्गणाओं में सभी कर्मों के सभी पद भजनीय हैं ।

शेष मार्गणाओं में सात कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिवाले बंधक जीव नियम से हैं । शेष पद भजनीय हैं । आयुकर्म के सभी पद भजनीय हैं ।

इसप्रकार नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में भागाभाग

भागाभागानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश। ओघ से आठों कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि के बंधक जीव सब जीवों के साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं । असंख्यातगुणहानि के बंधक जीव सब जीवों के कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीव सब जीवों के असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीव सब जीवों के अनंतवें भागप्रमाण हैं । आयुकर्म के अवक्तव्य पद के बंधक जीव सब जीवों के असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

इसीप्रकार अनंत संख्यावाली और असंख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य पद जानकर कथन करना चाहिए । इसीप्रकार संख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि संख्यातवें भागप्रमाण कहना चाहिए ।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में परिमाण

परिमाणानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश। ओघ से आठों कर्मों के ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीव अनंत हैं । सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीव संख्यात हैं तथा आयुकर्म के अवक्तव्य पद के बंधक जीव अनंत हैं । इसीप्रकार अनंत संख्यावाली मार्गणाओं में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि अवक्तव्य पद का कथन जानकर कहना चाहिए । कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सात कर्मों के १ वृद्धि

के बंधक जीव अनंत हैं ।

नारकियों में आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के तथा आयु के अवक्तव्य पद के बंधक जीव असंख्यात हैं । इसीप्रकार असंख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि जिन मार्गणाओं में सात कर्मों का अवक्तव्य पद पाया जाता है, उनके बंधक जीव संख्यात हैं । वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीवों में सात कर्मों के १ वृद्धि के बंधक जीव असंख्यात हैं ।

संख्यात संख्यावाली मार्गणाओं में सभी कर्मों के सम्भव सभी पदों के बंधक जीव संख्यात हैं ।

इसप्रकार परिमाण समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में क्षेत्र

क्षेत्रानुगम की अपेक्षा से निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का सर्व लोक क्षेत्र है । आयु के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का सर्वलोक क्षेत्र है तथा सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । इसीप्रकार सामान्य तिर्यंच, सभी एकेन्द्रिय, स्थावरकायिक, काययोगी, औदारिक काययोगी, औदारिकमिश्र काययोगी, कार्माण काययोगी, नपुंसकवेदवाले, क्रोधादि ४ कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनवाले, तीन अशुभ लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी, आहारक और अनाहारक जीवों में अपने-अपने संभव पदों के बंधक जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि बादर एकेन्द्रियों में आयु के सभी पदों के बंधक जीवों का क्षेत्र लोक के संख्यातवें भागप्रमाण है ।

नारकियों में सभी प्रकृतियों के सभी संभव पदों के बंधक जीवों का क्षेत्र लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार शेष सभी मार्गणाओं में जानना चाहिए ।

इसप्रकार क्षेत्र समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में स्पर्शन

स्पर्शनानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश। ओघ से आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने सर्व लोक प्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयुकर्म के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है तथा सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

इसीप्रकार सामान्य तिर्यंच, एकेन्द्रिय, पांचों स्थावरकायिक, काययोगी, औदारिक काययोगी, औदारिकमिश्र काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनवाले, ३ अशुभ लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, असंज्ञी और आहारक जीवों में अपने–अपने संभव पदों के बंधक जीवों में जानना चाहिए। कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सात कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि के बंधक जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

नारकियों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली का कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु के सब पदों के बंधक जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में सात कर्मों का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है। आयुकर्म के सभी पदों का भंग नारकियों के समान है (लोक का असंख्यातवां भाग)। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों में जानना चाहिए । इसीप्रकार सभी अपर्याप्त विकलेन्द्रिय जीवों में जानना चाहिए ।

तीनों प्रकार के मनुष्यों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सात कर्मों

के अवक्तव्य तथा आयु के सभी पदों के बंधक जीवों ने लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

देवों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम आठ और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु के सभी पदों के बंधक जीवों ने कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

पंचेन्द्रियद्विक और त्रसद्विक जीवों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । इनके अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है (लोक का असंख्यातवां भाग)। आयु के सभी पदों के बंधक जीवों का स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग और त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण है । इसीप्रकार ५ मनोयोगी, ५ वचनयोगी, चक्षुदर्शनवाले और संज्ञी जीवों में जानना चाहिए । विभंगज्ञानी जीवों में इसीप्रकार भंग है । (इनमें सात कर्मों का अवक्तव्य पद नहीं है) ।

बादर एकेन्द्रिय, बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त, बादर अग्निकायिक पर्याप्त, बादर वायुकायिक पर्याप्त और बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवों में पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त के समान भंग है – इतनी विशेषता है कि बादर एकेन्द्रिय तथा बादर वायुकायिकों में जहां आयु के सब पदों के बंधक जीवों में लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण स्पर्शन कहा है वहां लोक के संख्यातवें भागप्रमाण जानना चाहिए ।

वैक्रियिक काययोगी जीवों में आठों कर्मों का भंग देवों के समान है।

वैक्रियिकमिश्र काययोग में सात कर्मों की १ वृद्धि के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान है । आहारक काययोगी और आहारकमिश्र काययोगी जीवों में अपनें सभी पदों के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान (लोक का असंख्यातवां भाग) है ।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवों में अपने संभव पदों का भंग पंचेन्द्रिय के समान है । अपगतवेदी जीवों में सभी संभव पदों के बंधक जीवों का स्पर्शन

लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत, मनःपर्ययज्ञानी जीवों में जानना चाहिए ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में आयुकर्म के सभी पद तथा सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का स्पर्शन लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में अपने-अपने संभव पदों का स्पर्शन जानना चाहिए ।

संयतासंयतों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु के सभी पदों के बंधक जीवों का स्पर्शन लोक के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

पीत और पद्म लेश्यावाले जीवों में आठों कर्मों के सभी (संभव) पदों के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में आयु के सभी पद तथा सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र के समान (लोक का असंख्यातवां भाग) है।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम आठ और कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है । आयु के सभी पदों के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों ने त्रसनाली के कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र का स्पर्शन किया है ।

इसप्रकार स्पर्शन समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में काल (नाना जीवों की अपेक्षा)

(संदर्भ – पुस्तक ६, पृष्ठ ७४ – भुजगार)

कालानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से आठों कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि, अवस्थित पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है । आयु के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का काल सर्वदा है । सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इसप्रकार ओघ के समान काययोगी, औदारिक काययोगी, अचक्षुदर्शनी, भव्य और आहारक जीवों में जानना चाहिए । तथा इसीप्रकार सामान्य तिर्यंच, एकेन्द्रिय, पांच स्थावरकायिक, औदारिकमिश्र काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, तीन अशुभ लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि इनमें सात कर्मों का अवक्तव्य पद नहीं है । मात्र लोभकषायवालों में मोहनीय का अवक्तव्य पद है ।

आदेश से नारकियों में सात कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि का काल सर्वदा है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । आयुकर्म की १ वृद्धि, १ हानि का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है । ३ वृद्धि, ३ हानि, अवस्थित और अवक्तव्य पद का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है।

इसीप्रकार असंख्यात संख्यावाली राशियों में जानना चाहिए । जैसै पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त, सभी देव, सामान्य मनुष्य, पंचेन्द्रियद्विक, विकलेन्द्रिय, त्रसद्विक, बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त, बादर अग्निकायिक पर्याप्त, बादर वायुकायिक पर्याप्त, बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक पर्याप्त, पांचों मनोयोगी,

पांचों वचनयोगी, वैक्रियिक काययोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, विभंगज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, संयतासंयत, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीत-पद्म लेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि (आयु बिना), संज्ञी जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जिनमें सात कर्मों का अवक्तव्य पद है उसका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि और शुक्ललेश्यावाले जीवों में सात कर्मों का भंग इसीप्रकार है । आयुकर्म की १ वृद्धि, १ हानि का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवक्तव्य पद का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । इसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनी, सर्वार्थसिद्धि के देव, आहारक काययोगी, अपगतवेदी, मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में अपने-अपने पदों में जानना चाहिए ।

वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीवों में सात कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

आहारकमिश्र काययोगी जीवों में सात कर्मों के असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । आयुकर्म के असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है तथा अवक्तव्य पद का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ।

कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सात कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि का काल सर्वदा है ।

इसप्रकार काल समाप्त हुआ ।

-0-

वृद्धिबंध में अंतर (नाना जीवों की अपेक्षा)

अंतरानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है - ओघ और आदेश।

ओघ से सात कर्मों की ४ वृद्धि, ४ हानि और अवस्थित पद का अंतरकाल नहीं है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व प्रमाण है । आयुकर्म के सभी पदों का अंतर नहीं है । इसीप्रकार ओघ के समान काययोगी, औदारिक काययोगी, अचक्षुदर्शनी, भव्य और आहारक जीवों में जानना चाहिए । तथा इसीप्रकार सामान्य तिर्यंच, एकेन्द्रिय, पांच स्थावरकायिक, औदारिकमिश्र काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, तीन अशुभ लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवों में जानना चाहिए; इतनी विशेषता है कि इनमें सात कर्मों का अवक्तव्य पद नहीं है, लोभकषाय में मोहनीय कर्म का अवक्तव्य पद है ।

नारकियों में सात कर्मों की १ वृद्धि, १ हानि का अंतर नहीं है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । आयुकर्म की १ वृद्धि, १ हानि और अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर चौबीस मुहूर्त है । ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । इसीप्रकार असंख्यात राशियों में और संख्यात राशियों में जानना चाहिए – जिनमें सात कर्मों का अवक्तव्य पद है उसका अंतर ओघ के समान जानना चाहिए ।

वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीवों में सात कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर बारह मुहूर्त है । आहारकमिश्र काययोगी जीवों में आठों कर्मों की असंख्यातगुणवृद्धि का और आयु के अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है । कार्माण काययोगी और अनाहारक जीवों में सात कर्मों की असंख्यातगुवृद्धि का अंतर नहीं है ।

अपगतवेदी जीवों में सात कर्मों की १ वृद्धि, १ हानि का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर छह महिना; ३ वृद्धि, ३ हानि और अवस्थित पद के बंधक जीवों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । अवक्तव्य पद के बंधक जीवों का अंतर ओघ के समान है । इसीप्रकार सूक्ष्मसाम्परायसंयत जीवों में जानना चाहिए; इतनी विशेषता है कि इनमें अवक्तव्य पद नहीं है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों में नारकियों के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि आयुकर्म की १ वृद्धि, १ हानि और अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इसीप्रकार विकलेन्द्रिय में जानना चाहिए।

मनुष्य अपर्याप्त, सासादन सम्यक्त्व तथा सम्यग्मिथ्यात्व इन सांतर मार्गणाओं में आठों कर्मों के १ वृद्धि, १ हानि और आयु के अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण है । शेष वृद्धियों का भंग नारकियों के समान है ।

इसप्रकार अंतरकाल समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में भाव

भावानुगम की अपेक्षा सर्वत्र औदयिक भाव है । इसप्रकार अनाहारक मार्गणा तक ले जाना चाहिए ।

इसप्रकार भाव समाप्त हुआ ।

–0–

वृद्धिबंध में अल्पबहुत्व

(संदर्भ - पुस्तक ६, पृष्ठ ८१)

अल्पबहुत्व दो प्रकार का है –ओघ और आदेश ।

ओघ से सात कर्मों के अवक्तव्य पद के बंधक जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अवस्थित पद के बंधक जीव अनंतगुणे हैं । उनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । उनसे असंख्यातगुणहानि के बंधक जीव असंख्यातगुणे

हैं । उनसे असंख्यातगुणवृद्धि के बंधक जीव विशेष अधिक हैं । आयुकर्म के अवस्थित पद के बंधक जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानि के बंधक जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं । उनसे अवक्तव्य पद के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे असंख्यातगुणहानि के बंधक जीव असंख्यातगुणे हैं और उनसे असंख्यातगुणवृद्धि के बंधक जीव विशेष अधिक हैं ।

इसीप्रकार ओघ के समान काययोगी, औदारिक काययोगी, अचक्षुदर्शनवाले, भव्य और आहारक जीवों में जानना चाहिए ।

सामान्य तिर्यंच, एकेन्द्रिय, पांचों स्थावरकायिक, औदारिकमिश्र काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि तीन कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, ३ अशुभ लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवों में सात कर्मों के अवस्थित पद के बंधक जीव सबसे स्तोक हैं । आगे ओघ के समान भंग है । आयुकर्म का भंग ओघ के समान है ।

नारकियों में आठ कर्मों का भंग इसीप्रकार (सामान्य तिर्यंच के समान) है। इसीप्रकार सब असंख्यात संख्यावाली राशियों में जानना चाहिए । जैसे सभी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य अपर्याप्त, सब देव (सर्वार्थसिद्धि बिना), विकलेन्द्रिय, वैक्रियिक काययोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, विभंगज्ञानी, संयतासंयत, पीत-पद्म लेश्यावाले, वेदक सम्यग्दृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सामान्य मनुष्य, पंचेन्द्रियद्विक, त्रसद्विक, पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, आभिनिबोधिक-ज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, शुक्ललेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि (आयु बिना), क्षायिक सम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवों में आठों कर्मों का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि शुक्ललेश्यावाले और क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में आयु के भंग में संख्यातगुणा कहना चाहिए ।

संख्यात संख्यावाली राशियों में इसी बीजपद के अनुसार जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि संख्यातगुणा कहना चाहिए ।

लोभकषायवाले जीवों में मोहनीयकर्म और आयुकर्म का भंग ओघ के समान है । शेष छह कर्मों का भंग सामान्य तिर्यंच के समान है । औदारिकमिश्र काययोगी और अपगतवेदी जीवों का कथन मूल पुस्तक में हैं - पुस्तक ६, पृष्ठ ८२।

इसप्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

-0-

पुस्तक ६, पृष्ठ १५४ से त्रुटित अंश -

उत्तरप्रकृति प्रदेशबंध काल

(एक जीव अपेक्षा उत्कृष्ट प्रदेशबंध का काल)

संयतासंयतों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, आठ कषाय (प्रत्याख्यान चार, संज्वलन चार), पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, देवगति चतुष्क, तेजसशरीर, कार्माणशरीर, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, उच्चगोत्र, पांच अंतराय, तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

शेष प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

असंयतों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है।

पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिकशरीर, तेजसशरीर, कार्माणशरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गल परावर्तन प्रमाण (अनंतकाल) है ।

साता-असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, चार आयु,

नरकगतिद्विक, एकेन्द्रियादि चार जाति, पांच संस्थान, पांच संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, स्थिर आदि तीन युगल, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, तीर्थंकर, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर (३३ सागर + कुछ कम पूर्वकोटी) है।

मनुष्यगतिद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

देवगतिचतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक तीन पल्य है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक है ।

औदारिक आंगोपांग के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर (नरक में ३३ सागर + पश्चात् तिर्यंच में अंतर्मुहूर्त) है ।

दर्शनमार्गणा में अचक्षुदर्शनी का ओघ के समान भंग है । चक्षुदर्शनी में त्रस के समान भंग है । अवधिदर्शनी में आभिनिबोधिकज्ञानी के समान भंग है। (देखिए पुस्तक ६ पृष्ठ १५३)

लेश्यामार्गणा में कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, तेजसशरीर, कार्माणशरीर, औदारिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल क्रमशः साधिक ३३ सागर, साधिक १७ सागर, साधिक ७ सागर है (औदारिक शरीर-औदारिक आंगोपांग में अपनी स्थिति + एक अंतर्मुहूर्त, शेष में अपनी स्थिति + दो अंतर्मुहूर्त)।

साता-असाता, छह नोकषाय (स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक), चार आयु, नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, एकेन्द्रियादि चार जाति, पांच संस्थान, पांच

संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, स्थिरादि तीन युगल, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

पुरुषवेद, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, मनुष्यगतिद्विक, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल क्रमशः कुछ कम ३३ सागर, कुछ कम १७ सागर, कुछ कम ७ सागर है।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कृष्ण लेश्या में साधिक ३३ सागर (पश्चात् एक अंतर्मुहूर्त) तथा नील और कापोत लेश्या में अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कृष्ण और नील लेश्या में अंतर्मुहूर्त तथा कापोतलेश्या में साधिक तीन सागर है ।

पीतलेश्या में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, पांच अंतराय, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर (स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के लिए एक अंतर्मुहूर्त जाने के पहले + साधिक दो सागर अपनी स्थिति; शेष प्रकृतियों के लिए दो अंतर्मुहूर्त – सम्यक्त्व के साथ मरकर उसी लेश्या में मनुष्य में आनेपर दूसरा अंतर्मुहूर्त + साधिक दो सागर) है ।

पुरुषवेद, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, तीर्थंकर प्रकृति का भंग भी ज्ञानावरण के समान (दो अंतर्मुहूर्त + साधिक दो सागर) ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर (देव की अपनी स्थिति)।

साता-असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, तीन आयु (नरक बिना), देवगतिचतुष्क, तिर्यंचगतिद्विक, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, आतप, पांच संस्थान,

पांच संहनन, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, आहारकद्विक, नीचगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

पद्मलेश्या में इसीप्रकार भंग है, इतनी विशेषता है कि जहां साधिक दो सागर कहा था वहां साधिक अठारह सागर समझना । यहां एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप का बंध नहीं है ।

शुक्ललेश्या में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, पांच अंतराय, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर (दो अंतर्मुहूर्त + ३३ सागर) है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक ३१ सागर (३१ सागर + जाने के पूर्व एक अंतर्मुहूर्त) है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

साता-असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, दो आयु(मनुष्य, देव), देवगतिचतुष्क, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र, आहारकद्विक के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

भव्यमार्गणा में भव्यों में सभी प्रकृतियों का ओघ के समान भंग है । अभव्यों में सभी प्रकृतियों का मत्यज्ञानी के समान भंग है ।

सम्यक्त्वमार्गणा में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है ।

क्षायिक सम्यक्त्व में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम दो पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर है ।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, मनुष्यायु, देवायु, आहारकद्विक, स्थिरादि तीन युगल के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

आठ कषाय (अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान) के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

देवगतिचतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक तीन पल्य (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + तीन पल्य) है ।

वेदक सम्यक्त्व में सभी प्रकृतियों का भंग आभिनिबोधिकज्ञानियों के समान है, इतनी विशेषता है कि १) ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल ६६ सागर है (देखिए पुस्तक ६ पृष्ठ १५२)। २) देवगतिचतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्य है ।

उपशम सम्यक्त्व में सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

संज्ञीमार्गणा में संज्ञियों और असंज्ञियों में उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो समय और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है।

संज्ञियों में सभी प्रकृतियों का भंग पंचेन्द्रियों के समान है । इतनी विशेषता है कि ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल सौ सागर पृथक्त्व है ।

असंज्ञियों में पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय,

जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गल परावर्तन (अनंतकाल) है ।

साता-असाता, सात कषाय (तीन वेद, दो युगल), चार आयु, पांच जाति, नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, मनुष्यगतिद्विक, औदारिक आंगोपांग, छह संस्थान, छह संहनन, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति, त्रसादि चार युगल, स्थिरादि छह युगल, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक है ।

आहारमार्गणा में आहारकों में सभी प्रकृतियों का भंग ओघ के समान है। इतनी विशेषता है कि ध्रुवबंधी प्रकृतियों के (ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक) और तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

अनाहारकों में कार्माण काययोगी जीवों के समान भंग है । (देखिए पुस्तक ६ पृष्ठ १४७)

उत्कृष्ट प्रदेशबंध की कालप्ररूपणा समाप्त होती है ।

-0-

जघन्य प्रदेशबंध का काल

ओघ से - पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण, उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक प्रमाण (सूक्ष्म निगोद लब्धिअपर्याप्त का उत्कृष्ट अंतर) है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध

का काल ज्ञानावरण के समान है । इसीप्रकार औदारिक शरीर में जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि औदारिक शरीर के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्यकाल एक समय है ।

साता-असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, चार जाति, पांच संस्थान, पांच संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, स्थिरादि तीन युगल के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त (प्रतिपक्ष की अपेक्षा) है । इतनी विशेषता है कि सातावेदनीय के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्व कोटि प्रमाण है - ७ वें से १३ वें गुणस्थान तक का काल । (महाबंध पुस्तक १ - प्रकृतिबंध में काल)

पुरुषवेद के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है। अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (प्रतिपक्ष की अपेक्षा) और उत्कृष्ट काल साधिक दो छासठ सागर + दो पूर्वकोटी है ।

नरकगतिद्विक, दो आयु (देवायु, नरकायु), आहारक शरीर, आहारक आंगोपांग के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय है। अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल असंख्यात लोकप्रमाण है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय (सूक्ष्म निगोद में) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त कम १/३ पूर्वकोटी अधिक ३ पल्य है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य

और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल १८५ सागर है ।

समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर है । (महाबंध पुस्तक १, पृष्ठ ६३)

औदारिक आंगोपांग के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर (नरक से निकलने पर अंतर्मुहूर्त अधिक) है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त (दो उपशम श्रेणी के बीच या बंध प्रारंभ करने के बाद श्रेणी चढा), उत्कृष्ट काल वर्षपृथक्त्व कम दो पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । (देखिए स्वामित्व - पुस्तक ६, पृष्ठ ११४ - क्षुल्लकभवग्रहण के तृतीय भाग के पहले समय में आयु का बंध करनेवाला जघन्य योग से युक्त अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव उक्त दो आयुओं के जघन्य प्रदेशबंध का स्वामी है ।)

आदेश से - गतिमार्गणा में नारकियों में आयु बिना शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय (असंज्ञी से आया हुआ उपपाद में जघन्य) है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, पांच अंतराय के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम १०००० वर्ष और उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, अनंतानुबंधी चार के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, मिथ्यात्व के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और सभी

का उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

साता-असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, पांच संस्थान, पांच संहनन, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, स्थिरादि तीन युगल के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

पुरुषवेद, मनुष्यगतिद्विक, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल कुछ कम ३३ सागर है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल ३३ सागर है । इतनी विशेषता है कि पहले से छठवें नरक में अजघन्य का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम ८४००० वर्ष और उत्कृष्ट काल साधिक तीन सागर है । पहले नरक में उत्कृष्ट काल कुछ कम एक सागर, दूसरे नरक में जघन्य काल साधिक एक सागर और उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन सागर है । तीसरे नरक में जघन्य और उत्कृष्ट काल साधिक तीन सागर है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

इसीप्रकार सातवें नरक में जानना चाहिए । पहले से छठवें नरक में अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है । ज्ञानावरण दण्डक में पूर्ण स्थितिप्रमाण और पुरुषवेद दण्डक में कुछ कम पूर्ण स्थितिप्रमाण है ।

तिर्यंचों में नरकगतिद्विक, नरकायु और देवायु को छोडकर शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

ज्ञानावरण दण्डक (ओघवाला), स्त्यानगृद्धि दण्डक, तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का काल ओघ के समान है अर्थात् ज्ञानावरण दण्डक और मिथ्यात्व में जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट

काल असंख्यात लोकप्रमाण है; स्त्यानगृद्धि दण्डक में जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल असंख्यात लोकप्रमाण है; तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र में जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल असंख्यात लोकप्रमाण है ।

साता-असाता दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक, नरकायु, देवायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का काल ओघ के समान (जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय है तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त) है ।

पुरुषवेद, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल ३ पल्य है । इतनी विशेषता है कि पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क का उत्कृष्ट काल साधिक ३ पल्य है । (महाबंध पुस्तक १, पृष्ठ ५७)

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अजघन्य प्रदेशबंध का काल साता दण्डक के समान है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु का भंग ओघ के समान (जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त) है ।

इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि १) ज्ञानावरण दण्डक और स्त्यानगृद्धि दण्डक औदारिक शरीर बिना के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अपनी-अपनी कायस्थिति प्रमाण अर्थात् पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है । २) इतनी और विशेषता है कि तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, औदारिक शरीर का भंग साता दण्डक के समान है । ३) इतनी विशेषता है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती में तिर्यंचायु और मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय है (नारकी के समान)। अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट

काल अंतर्मुहूर्त है । तथा जिन प्रकृतियों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल सामान्य तिर्यंचों में एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण कहा है उनका यहां अंतर्मुहूर्त कहना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । इसी प्रकार सभी अपर्याप्त त्रसों और स्थावरों में जानना चाहिए।

मनुष्यों में सभी प्रकृतियों का भंग पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक के समान है, इतनी विशेषता है कि १) पुरुषवेद, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक तीन पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है । २) ज्ञानावरण दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (उपशम श्रेणी में दसवें गुणस्थान में उतर कर एक समय बंध करके मरकर देव में उत्पन्न हुआ) । ३) मनुष्यायु, तिर्यंचायु का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है (लब्धिअपर्याप्त मनुष्यों की अपेक्षा) । ४) साता वेदनीय का भंग ओघ के समान जानना ।

आहारकद्विक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (उपशमश्रेणी में मरण की अपेक्षा) और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

इसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनी में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि १) तिर्यंचायु और मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि २) मनुष्यनी में पुरुषवेद दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्य है ।

इतनी विशेषता है कि मनुष्यनी में तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का

जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय है, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

देवों में आयु बिना शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

ज्ञानावरण दण्डक नारकियों के समान (अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम १०००० वर्ष, उत्कृष्ट काल ३३ सागर) है ।

स्त्यानगृद्धि दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल ३१ सागर है । इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त है ।

पुरुषवेद दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

साता-असाता दण्डक नारकी के समान है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल साधिक दो सागर और उत्कृष्ट काल ३३ सागर है । (देखिए महाबंध पुस्तक १, पृष्ठ ६०)

तिर्यंचायु, मनुष्यायु का भंग नारकियों के समान है ।

इन्द्रियमार्गणा में एकेन्द्रियों में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

ध्रुवबंधी (पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय) के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक है ।

साता-असाता, सात नोकषाय (तीन वेद, दो युगल), उच्चगोत्र, मनुष्यगतिद्विक, औदारिक आंगोपांग, पांच जाति, छह संस्थान, छह संहनन, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, त्रसादि चार युगल, स्थिरादि छह युगल, प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति

के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

बादर एकेन्द्रियों में इसी प्रकार है, इतनी विशेषता है कि १) ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है । २) तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कर्मस्थितिप्रमाण (बादर अग्निकायिक, वायुकायिक की कायस्थिति) है ।

बादर पर्याप्तकों में एकेन्द्रिय के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि ध्रुवबंधी प्रकृतियों और तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवों में एकेन्द्रियों के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि ध्रुवबंधी प्रकृतियों और तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त में तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त में सभी प्रकृतियों के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

विकलेन्द्रियों में ध्रुवबंधी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष है । मनुष्यायु, तिर्यंचायु का भंग एकेन्द्रियों के समान है । शेष सभी प्रकृतियों के (तिर्यंचगतित्रिक के साथ) अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

पंचेन्द्रियों में नरकगतिद्विक, नरकायु, देवायु, आहारकद्विक छोड़कर शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के

अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक एक हजार सागर है ।

साता-असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, चार जाति, पांच संस्थान, पांच संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि साता वेदनीय के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल ओघ के समान अर्थात् कुछ कम पूर्वकोटी प्रमाण है ।

नरकगतिद्विक, नरकायु, देवायु, आहारकद्विक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर (एक अंतर्मुहूर्त अधिक - सातवें नरक से निकलने पर) है ।

मनुष्यगतिद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

देवगतिचतुष्क के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल साधिक तीन पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

पुरुषवेद के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो पूर्वकोटि अधिक दो छासठ सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल १८५ सागर है ।

समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त कम तीन

पल्य अधिक दो छासठ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल वर्षपृथक्त्व कम दो पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर है ।

पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि १) ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल सौ सागर पृथक्त्व है । २) मनुष्यायु, तिर्यंचायु का भंग देवायु के समान (जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त) है ।

कायमार्गणा में पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक जीवों में ध्रुवबंधी प्रकृतियों का भंग एकेन्द्रिय के समान है (जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण, उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक है)।

साता-असाता दण्डक का भंग एकेन्द्रियों के समान है, इतनी विशेषता है कि पृथ्वीकायिक और जलकायिकों में तिर्यंचगतिद्विक और नीचगोत्र का भंग साता दण्डक के समान है और अग्निकायिक, वायुकायिक में तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र का भंग ध्रुवबंधी के समान है । तिर्यंचायु, मनुष्यायु का भंग एकेन्द्रिय के समान है।

वनस्पतिकायिकों में एकेन्द्रियों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि तिर्यंचगतिद्विक और नीचगोत्र का भंग साता दण्डक के समान है ।

इन पांचों कायिकों के बादरों में इसीप्रकार है इतनी विशेषता है कि असंख्यात लोक के स्थान में कर्मस्थितिप्रमाण (उनकी कायस्थिति) जानना चाहिए । इनके बादर पर्याप्तों में संख्यात हजार वर्ष है । इनके सूक्ष्म जीवों में जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

त्रसकायिकों में पंचेन्द्रियों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक दो हजार सागर है और त्रसकायिक पर्याप्त जीवों में दो हजार सागर है ।

योगमार्गणा में पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के (आयु सहित) जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल

चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

काययोगी जीवों में ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, औदारिक शरीर, साता दण्डक, नरकगतिद्विक, नरकायु, देवायु, मनुष्यायु, तिर्यंचायु, आहारकद्विक का भंग ओघ के समान है । इतनी विशेषता है कि ज्ञानावरण दण्डक और स्त्यानगृद्धि दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है । शेष प्रकृतियों में – पुरुषवेद, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, वज्रवृषभनाराच संहनन, औदारिक आंगोपांग, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र, तीर्थंकर के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । (तीर्थंकर के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय – उपशम श्रेणी उतरते या चढ़ते समय काययोग में एक समय के लिए बंध करके बाद में योग पलटा या चढ़ते समय काययोग में एक समय रहकर बंधव्युच्छित्ति हुयी ।) तिर्यंचगतित्रिक का भंग ओघ के समान है।

औदारिककाययोगी जीवों में ध्रुवबंधी, ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम २२००० वर्ष है । (स्त्यानगृद्धि दण्ड़क – मिथ्यात्व में आकर एक समय में योग पलटा या एक समय बंध करके व्युच्छित्ति हुयी) । या औदारिक काययोग में आकर एक समय में मरण हुआ ।

शेष प्रकृतियों का भंग काययोगियों के समान है । इतनी विशेषता है कि तिर्यंचगतित्रिक के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन हजार वर्ष है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहण (महाबंध पुस्तक १, पृष्ठ ६४) और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है।

इसीप्रकार वैक्रियिकमिश्र और आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में जानना चाहिए।

इतनी विशेषता है कि आहारकमिश्रकाययोगी में देवायु के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

वैक्रियिककाययोगी जीवों में आयु बिना शेष प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल चार समय और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

आहारककाययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

कार्माणकाययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल तीन समय है । इतनी विशेषता है कि देवगतिचतुष्क और तीर्थंकर प्रकृति के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल दो समय है ।

वेदमार्गणा में स्त्रीवेदी जीवों में ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, साता-असाता दण्डक का तथा आहारकद्विक, तीर्थंकर, देवगतिचतुष्क, नरकगतिद्विक और चार आयु छोड़कर शेष सभी प्रकृतियों का जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

ज्ञानावरण दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (उपशमश्रेणी उतरते समय स्त्रीवेद में बंध करके मरण) और उत्कृष्ट काल सौ पल्य पृथक्त्व है। मिथ्यात्व के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट काल सौ पल्य पृथक्त्व है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, अनंतानुबंधी चार के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (सासादन में एक समय में मरकर पुरुष हुआ) और उत्कृष्ट काल सौ पल्य पृथक्त्व है ।

साता-असाता दण्डक (साता, असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, तिर्यंचगतिद्विक, चार जाति, पांच संस्थान, पांच संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावरचतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र) के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है।

आहारकद्विक, नरकगतिद्विक, चार आयु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय है तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्य है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (उपशम श्रेणी उतरकर एक समय बंध करके मरण), उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

पुरुषवेद, मनुष्यगतिद्विक, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम पचपन पल्य है ।

औदारिक शरीर, परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल साधिक पचपन पल्य है ।

पुरुषवेदी जीवों में आहारकद्विक, नरकगतिद्विक, चार आयु छोड़कर शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल सौ सागर पृथक्त्व है । इतनी विशेषता है कि स्त्यानगृद्धित्रिक और अनंतानुबंधी चार के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है।

साता-असाता दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

देवगतिचतुष्क के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल साधिक ३ पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल ३३ सागर है।

पुरुषवेद के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल दो पूर्वकोटी अधिक दो छासठ सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल १६३ सागर है ।

समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल वर्ष पृथक्त्व कम दो पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर है ।

आहारकद्विक, नरकगतिद्विक, चार आयु का भंग स्त्रीवेदी जीवों के समान है ।

नपुंसकवेदी जीवों में आहारकद्विक, नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, नरकायु, देवायु छोड़कर शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ।

ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, साता-असाता के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल ओघ के समान है ।

मिथ्यात्व के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है ।

पुरुषवेद, उच्चगोत्र, मनुष्यगतिद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम ३३ सागर है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय,

उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक (अग्निकायिक, वायुकायिक में) है ।

नरकगतिद्विक, आहारकद्विक, नरकायु, देवायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु का भंग ओघ के समान (जघन्य का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त) है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (उपशमश्रेणी में उतरकर बंध एक समय करके मरण), उत्कृष्ट काल साधिक ३ सागर (तीसरे नरक में) है ।

अपगतवेदी जीवों में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

कषायमार्गणा में क्रोध कषायवाले जीवों में आहारकद्विक, नरकगतिद्विक, नरकायु, देवायु को छोडकर शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

आहारकद्विक, नरकगतिद्विक, नरकायु, देवायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । इसीप्रकार मान, माया, लोभ कषायवाले जीवों में जानना ।

ज्ञानमार्गणा में मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, साता-असाता दण्डक, औदारिक शरीर, तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, मनुष्यायु, तिर्यंचायु, नरकायु, देवायु, नरकगतिद्विक का भंग ओघ के समान है । (नरकगतिद्विक, नरकायु, देवायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । शेष सभी के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य, उत्कृष्ट काल एक समय है। ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, औदारिक शरीर, तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक है । साता-असाता दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । मनुष्यायु, तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।)

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम ३ पल्य है ।

मनुष्यगतिद्विक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल साधिक ३१ सागर है ।

समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल कुछ कम ३ पल्य है ।

पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक आंगोपांग, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर है ।

अभव्यों में और मिथ्यादृष्टियों में इसीप्रकार जानना चाहिए ।

विभंगज्ञानी जीवों में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, तिर्यंचगतिद्विक,

नीचगोत्र, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (घोलमान योग में दो बार जघन्य के बीच में) और उत्कृष्ट काल कुछ कम ३३ सागर है ।

मनुष्यगतिद्विक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम ३१ सागर है । शेष सभी प्रकृतियों के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी जीवों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, पांच अंतराय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल साधिक ६६ सागर है ।

प्रत्याख्यानावरण चार के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट काल साधिक ४२ सागर है ।

अप्रत्याख्यानावरण चार के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर है ।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि तीन युगल के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल साधिक ३ पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

आहारकद्विक, मनुष्यायु, देवायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त (दो बार उपशम श्रेणी के बीच) उत्कृष्ट काल वर्षपृथक्त्व कम दो पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर है ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय(श्रेणी उतरते समय या दो जघन्य के बीच में) और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि तीन युगल, आहारकद्विक, देवायु के जघन्य प्रदेशबंध का भंग ज्ञानावरण के समान (एक से चार समय) अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

केवलज्ञानी में सातावेदनीय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटी प्रमाण है ।

संयममार्गणा में संयत तथा सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत में मनःपर्ययज्ञानी के समान जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि संयतों में साता वेदनीय के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटी प्रमाण जानना ।

संयतासंयत में भी इसीप्रकार जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि प्रत्याख्यानावरण चार का भंग ध्रुवबंधी प्रकृतियों के समान है ।

सूक्ष्मसाम्परायसंयत में अपगतवेदी के समान भंग है (जघन्य प्रदेशबंध का काल एक से चार समय, अजघन्य प्रदेशबंध का काल एक समय से अंतर्मुहूर्त)।

असंयतों में ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, साता-असाता दण्डक का भंग ओघ के समान है । इतनी विशेषता है कि साता का भंग असाता के समान है ।

पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, औदारिक आंगोपांग, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय के जघन्य प्रदेशबंध का भंग ज्ञानावरण के समान (जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, मनुष्यगतिद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन, देवगतिचतुष्क, औदारिक शरीर, चार आयु का भंग ओघ के समान है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल ३३ सागर अधिक कुछ कम पूर्व कोटी (वर्षपृथक्त्व कम पूर्व कोटी) है ।

दर्शनमार्गणा में अचक्षुदर्शनी जीवों में ओघ के समान भंग है । चक्षुदर्शनी जीवों में त्रसकायिक के समान भंग है । इन दोनों में साता का भंग असाता के समान है । अवधिदर्शनी जीवों में आभिनिबोधिकज्ञानी के समान भंग है ।

लेश्यामार्गणा में कृष्णलेश्या में ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर (दो अंतर्मुहूर्त + ३३ सागर) है ।

साता-असाता दण्डक का भंग तिर्यंचों के समान (जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त) है ।

तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग का भंग ज्ञानावरण के समान है । इतनी विशेषता है कि अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल एक अंतर्मुहूर्त + ३३ सागर है ।

मनुष्यगतिद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन, पुरुषवेद, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और

उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल कुछ कम ३३ सागर है ।

नरकगतिद्विक, चार आयु का भंग ओघ के समान है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

इसीप्रकार नीललेश्या और कापोतलेश्या में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल जहां कृष्णलेश्या में साधिक ३३ सागर कहा है, वहां नील और कापोत लेश्या में क्रम से साधिक १७ सागर और साधिक ७ सागर कहना चाहिए । इतनी विशेषता और है कि तिर्यंचगतिद्विक और नीचगोत्र का भंग साता-असाता दण्डक के समान है । नीललेश्या में तीर्थंकर प्रकृति का भंग कृष्ण लेश्या के समान है । कापोतलेश्या में तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट काल साधिक ३ सागर है ।

पीतलेश्या में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, निर्माण, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल साधिक २ सागर है । (दोनों ओर अंतर्मुहूर्त बढ़ाना)।

स्त्यानगृद्धि दण्डक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । स्त्यानगृद्धित्रिक, अनंतानुबंधी चतुष्क के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय है (सासादन में एक समय बंध करके मरण) । मिथ्यात्व में अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त - सबका (स्त्यानगृद्धि दण्डक के) अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर (देव में जाने के पहले एक अंतर्मुहूर्त अधिक) है ।

साता-असाता, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, उद्योत, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, आतप, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, स्थिरादि तीन युगल के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन, औदारिक आंगोपांग के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय (देव में प्रतिपक्ष) उत्कृष्ट काल साधिक २ सागर (देव की भवस्थिति) है।

पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, त्रस, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर है (दो अंतर्मुहूर्त दोनों ओर बढ़ाना) ।

औदारिक शरीर के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय (देव में उपपाद में) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल कुछ कम दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर है (देव की उत्कृष्ट भवस्थिति)।

आहारकद्विक, तीन आयु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय तथा अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर है (दोनों ओर एक-एक अंतर्मुहूर्त बढ़ाना) ।

पद्मलेश्या में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि पीतलेश्या में जहां अजघन्य का उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर कहा वहां पद्मलेश्या में साधिक अठारह सागर है । यहां एकेन्द्रिय संबंधी प्रकृतियां (एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप) नहीं बंधती तथा औदारिक आंगोपांग का भंग औदारिक शरीर के समान

है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल साधिक दो सागर, उत्कृष्ट काल साधिक अठारह सागर है ।

शुक्ललेश्या में इसीप्रकार जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि ज्ञानावरण दण्डक, पुरुषवेद दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर है तथा स्त्यानगृद्धि दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक ३१ सागर है (जाने के पूर्व एक अंतर्मुहूर्त अधिक) ।

यहां तिर्यंचगति संबंधी प्रकृतियों का बंध नहीं है, इसकारण मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल साधिक अठारह सागर, उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य, उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल ३३ सागर है ।

सातावेदनीय का भंग ओघ के समान है ।

भव्यमार्गणा में भव्यों में ओघ के समान भंग है, अभव्यों में मिथ्यादृष्टि के समान भंग है (मत्यज्ञानी के समान) ।

सम्यक्त्वमार्गणा में क्षायिक सम्यक्त्व में सभी प्रकृतियों का भंग आभिनिबोधिक ज्ञानी के समान है, इतनी विशेषता है कि १) यहां अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर है तथा २) मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय कम ८४००० वर्ष तथा उत्कृष्ट काल ३३ सागर है । ३) सातावेदनीय के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटी प्रमाण है ।

वेदक सम्यक्त्व में ध्रुवबंधी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल ६६ सागर है ।

प्रत्याख्यानावरण चार, अप्रत्याख्यानावरण चार, साता दण्डक, मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, आहारकद्विक, मनुष्यायु,

देवायु का भंग आभिनिबोधिकज्ञानी के समान है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट काल कुछ कम तीन पल्य है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट काल साधिक ३३ सागर है ।

उपशम सम्यक्त्व में ध्रुवबंधी और तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय (द्वितीयोपशम के साथ देव में उपपाद) और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

आहारकद्विक और देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का काल ध्रुवबंधी के समान है ।

साता दण्डक अर्थात् साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि तीन युगल के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

सासादन सम्यक्त्व में पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल छह आवली है ।

देवगतिचतुष्क, तीन आयु (मनुष्यायु, देवायु, तिर्यंचायु) के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

साता-असाता, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, पांच संस्थान (हुंडक बिना), पांच संहनन (असंप्राप्तासृपाटिका बिना), मनुष्यगतिद्विक, तिर्यंचगतिद्विक, प्रशस्त और अप्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि छह युगल, उद्योत, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, उच्चगोत्र, नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है।

सम्यग्मिथ्यात्व में सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है ।

मिथ्यादृष्टि जीवों में मत्यज्ञानी के समान भंग है ।

संज्ञीमार्गणा में संज्ञियों में पंचेन्द्रियों के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि ध्रुवबंधी प्रकृतियों में अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट काल सौ सागर पृथक्त्व है । सातावेदनीय का भंग असातावेदनीय के समान जानना ।

असंज्ञियों में नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, नरकायु, देवायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल चार समय; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय, उत्कृष्ट काल अंतर्मुहूर्त है । शेष प्रकृतियों का भंग एकेन्द्रियों के समान है ।

आहारमार्गणा में आहारकों में पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, तिर्यंचगतिद्विक, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, नीचगोत्र, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है, इतनी विशेषता है कि मिथ्यात्व के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है । शेष सभी प्रकृतियों का भंग ओघ के समान है ।

अनाहारक जीवों का भंग कार्माणकाययोगी जीवों के समान है ।

इसप्रकार जघन्य प्रदेशबंध की कालप्ररूपणा समाप्त हुयी ।

काल प्ररूपणा समाप्त ।

–0–

अंतरानुगम

(बाईसवां अनुयोगद्वार – उत्तरप्रकृति प्रदेशबंध में एक जीव की अपेक्षा अंतर)

अंतर दो प्रकार का है – जघन्य और उत्कृष्ट । उत्कृष्ट का प्रकरण है । निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश । ओघ से पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, साता वेदनीय, पुरुषवेद, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, हास्य–रति, अरति–शोक, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन प्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय (दो उत्कृष्ट के बीच) और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन (अनंत काल) है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर है ।

स्त्रीवेद का भंग इसीप्रकार है, इतनी विशेषता है कि अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो छासठ सागर है ।

अप्रत्याख्यानावरण चार, प्रत्याख्यानावरण चार के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन प्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय (उत्कृष्ट के बीच) और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्व कोटी है ।

नपुंसकवेद, नीचगोत्र, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अनंत काल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त कम तीन पल्य अधिक कुछ कम दो छासठ सागर है ।

मनुष्यायु, देवायु, नरकायु, नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क के उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट

प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अनंत काल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है ।

तिर्यंचायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अनंत काल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर है ।

मनुष्यगतिद्विक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

एकेन्द्रियादि चार जाति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, आतप के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन है। अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर १८५ सागर है ।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर साधिक तीन पल्य (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, अयशस्कीर्ति, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, असातावेदनीय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आहारकद्विक के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, दोनों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट

अंतर साधिक ३३ सागर है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आदेश से गतिमार्गणा में नारकियों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

दो आयु (तिर्यंचायु, मनुष्यायु) और तीर्थंकर प्रकृति बिना शेष सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगतिद्विक, मनुष्यगतिद्विक, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

साता-असाता, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, प्रशस्त विहायोगति, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

दो आयु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक तीन सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

इसीप्रकार सातवें नरक में जानना चाहिए परंतु वहां तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं है । ऊपर के (१ से ६) नरकों में भी इसीप्रकार है, इतनी विशेषता है कि जहां उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर कहा है, वहां कुछ कम अपनी-अपनी स्थितिप्रमाण समझना चाहिए । तथा मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र का भंग साता

दण्डक के समान है । (अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त) है ।

तिर्यंचों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । पांच ज्ञानावरण, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन प्रमाण है । अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

छह दर्शनावरण, आठ कषाय (प्रत्या. ४, संज्व. ४), भय, जुगुप्सा के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन प्रमाण है, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन प्रमाण, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

अप्रत्याख्यानावरण चार के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन प्रमाण है, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य है ।

नपुंसकवेद, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अप्रशस्त विहायोगति, पांच संस्थान, छह संहनन, चार जाति, स्थावर चतुष्क, आतप, उद्योत, तिर्यंचगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, नीचगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन प्रमाण है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

साता-असाता, पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति,

स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, समचतुरस्र संस्थान के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यायु, देवायु, नरकायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

तिर्यंचायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक एक पूर्वकोटी (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी) है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में सभी प्रकृतियों का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है, इतनी विशेषता है कि जहां उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन या अर्धपुद्गल परावर्तन कहा हो, वहां पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक तीन पल्य (अपनी-अपनी कायस्थिति) जानना । इतनी विशेषता है कि मनुष्यगतिद्विक का भंग नरकगतिद्विक के समान अर्थात् अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है । तथा देवगति चतुष्क और उच्चगोत्र का भंग सातादण्डक के समान है अर्थात् अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धिअपर्याप्तों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । ध्रुवबंधी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (कायस्थिति), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । (औदारिक शरीर को ध्रुवबंधी में लेना) ।

सभी प्रतिपक्ष प्रकृतियों और दो आयु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, सातावेदनीय, पुरुषवेद, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, हास्य-रति, अरति-शोक, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, यशःकीर्ति, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व (४८ पूर्वकोटी), अनुत्कृष्ट

प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशम श्रेणी में) है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक तीन पल्य, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य है ।

आठ कषाय (अप्रत्या. ४, प्रत्या. ४), नपुंसकवेद, मनुष्यगतिद्विक, तिर्यंचगतिद्विक, नरकगतिद्विक, चार जाति, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है।

साता-असाता, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक ३ पल्य और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आहारकद्विक के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम(वर्ष पृथक्त्व कम) एक पूर्वकोटी, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशम श्रेणी में) है ।

देवायु, नरकायु, तिर्यंचायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

मनुष्यायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक पूर्वकोटी (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी) है ।

मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियों में भी इसीप्रकार जानना ।

मनुष्य अपर्याप्तकों में पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त के समान भंग है ।

देवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर

एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तीर्थंकर, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, चार संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुस्वर, नीचगोत्र के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है ।

साता-असाता, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, मनुष्यगतिद्विक, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक आंगोपांग, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, सुभग, सुस्वर, आदेय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर (कुछ कम) साधिक दो सागर और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर (कुछ कम) साधिक १८ सागर है ।

एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, आतप के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर (कुछ कम) साधिक दो सागर है ।

औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक दो सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

हुंडक संस्थान, दुर्भग, अनादेय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक दो सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है ।

परघात, उच्छ्वास, स्थिरादि तीन युगल के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक दो सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

सौधर्म-ईशान में इसीप्रकार जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि आयु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक दो सागर है । स्त्यानगृद्धि दण्डक, तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत, हुंडक संस्थान, दुर्भग, अनादेय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है । (शेष भंग सामान्य देवों के समान है ।)

सनत्कुमार से सहस्रार तक के देवों में आयु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक १८ सागर है । स्त्यानगृद्धि दण्डक, हुंडक संस्थान, दुर्भग, अनादेय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक १८ सागर है । शेष प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सामान्य देवों के समान है ।

आनत से ग्रैवेयक तक के देवों में मनुष्यायु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है । स्त्यानगृद्धि दण्डक, हुंडक संस्थान, दुर्भग, अनादेय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर(सामान्य देवों के समान) है । शेष प्रकृतियों का भंग सामान्य देवों के समान है, इतनी विशेषता है कि मनुष्यगतिद्विक के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है, यहां तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत का बंध नहीं है ।

अनुदिश से सर्वार्थसिद्धि तक के देवों में आयु बिना मनुष्यायु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है । ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । प्रतिपक्षी प्रकृतियों के अर्थात् साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि तीन युगल के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

इन्द्रियमार्गणा में एकेन्द्रियों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

ध्रुवबंधी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । आयु बिना शेष सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात

लोक है ।

मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ७००० वर्ष है ।

तिर्यंचायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष (साधिक ७००० वर्ष + कुछ कम २२००० वर्ष) है ।

शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

बादर एकेन्द्रियों में इसीप्रकार जानना चहिए, इतनी विशेषता है कि जहां उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक कहा था वहां अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण जानना (इनकी कायस्थिति) तथा मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कर्मस्थितिप्रमाण (बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक में रहने का काल) है ।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तों में इसीप्रकार जानना । इतनी विशेषता है कि १) मनुष्यायु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष (कायस्थिति), २) मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रियों में इसीप्रकार है, इतनी विशेषता है कि मनुष्यायु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक (सूक्ष्म अग्निकायिक, वायुकायिक में रहने का काल) है ।

तिर्यंचायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का तथा मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त में इसीप्रकार है । इतनी विशेषता है कि सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

विकलेन्द्रियों में एकेन्द्रियों के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि यहां मनुष्यायु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष है। तथा मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र का भंग शेष प्रतिपक्षी प्रकृतियों के समान है । मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर द्वीन्द्रियादि में क्रम से कुछ कम चार वर्ष, साधिक १६ दिन, कुछ कम दो महिने है। तिर्यंचायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर क्रमशः साधिक १२ वर्ष, साधिक ४९ दिन, साधिक छह महिना (कुछ कम १/३ भव + १ भव) है ।

पंचेन्द्रियों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । तथा तीन आयु, तीर्थंकर प्रकृति बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक १००० सागर है।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, साता-असाता वेदनीय, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर है ।

स्त्रीवेद के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो छासठ सागर है ।

आठ कषाय (अप्रत्या. ४, प्रत्या ४.) के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

नपुंसकवेद, नीचगोत्र, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त कम तीन पल्य अधिक कुछ कम दो छासठ सागर है ।

तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर (ओघ के समान) है ।

देवगतिचतुष्क, मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (सातवें नरक में + दो अंतर्मुहूर्त) है ।

नरकगतिद्विक, चार जाति, स्थावरचतुष्क, आतप के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर १८५ सागर है ।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

आहारकद्विक के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व + १००० सागर है ।

तीन आयु (तिर्यंचायु, देवायु, नरकायु) के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व है ।

मनुष्यायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक १००० सागर है ।

पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों में इसीप्रकार है । इतनी विशेषता है कि जहां उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व + १००० सागर कहा था वहां सौ सागर पृथक्त्व समझना।

कायमार्गणा में पांच स्थावरकायिकों में एकेन्द्रियों के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि अग्निकायिक और वायुकायिकों में तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र ध्रुवबंधी प्रकृतियां हैं इसलिये उनके अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय (ज्ञानावरण के समान) है ।

तिर्यंचायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पांचों स्थावरकायिकों में असंख्यात लोक है । तिर्यंचायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पृथ्वीकायिकों में साधिक २२००० वर्ष (कुछ कम १/३ भव + एक भव), जलकायिकों में साधिक ७००० वर्ष, अग्निकायिकों में साधिक तीन दिन, वायुकायिकों में साधिक ३००० वर्ष, वनस्पतिकायिकों में साधिक १०००० वर्ष है ।

मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पृथ्वीकायिकों में साधिक ७००० वर्ष, जलकायिक में साधिक २००० वर्ष, अग्निकायिक में कुछ

कम १ दिन, वायुकायिक में कुछ कम १००० वर्ष, वनस्पतिकायिक में साधिक ३००० वर्ष है ।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त में पंचेन्द्रिय के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि इनकी कायस्थिति क्रमशः पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक २००० सागर और २००० सागर है ।

योगमार्गणा में पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगियों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त; ध्रुवबंधी प्रकृतियों के और चार आयु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय, शेष प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

काययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, हास्य-रति, अरति-शोक, यशस्कीर्ति, तीर्थंकर, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन है, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

अप्रत्याख्यानावरण चार, प्रत्याख्यानावरण चार के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

असातावेदनीय, नपुंसकवेद, नीचगोत्र, तिर्यंचगतिद्विक, एकेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, हुंडक संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति, निर्माण के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंत काल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (प्रतिपक्ष प्रकृति की अपेक्षा तथा ध्रुवबंधी में उपशम श्रेणी में बंध व्युच्छित्ति करके अंतर्मुहूर्त में काययोग में मरकर देव

हुआ) ।

नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, स्त्रीवेद, द्वीन्द्रियादि चार जाति, औदारिक आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, त्रस, प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, दुस्वर, साता वेदनीय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

आहारकद्विक, नरकायु, देवायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन (आयु बांधकर मनुष्य लब्धिअपर्याप्त हुआ पश्चात् एकेंद्रियों में रहा) है ।

तिर्यंचायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष (साधिक ७००० वर्ष + कुछ कम २२००० वर्ष) है ।

औदारिककाययोगियों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तीर्थंकर, पांच अंतराय, आहारकद्विक, नरकायु, देवायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार का भंग ज्ञानावरण के समान है।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ७००० वर्ष है ।

शेष सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

औदारिकमिश्रकाययोगियों में मनुष्यायु, तिर्यंचायु बिना शेष सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । ध्रुवबंधी प्रकृतियों के (पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, वैक्रियिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, देवगतिद्विक, तीर्थंकर, पांच अंतराय) के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का भी अंतर नहीं है ।

दो आयु बिना शेष सभी (साता-असाता वेदनीय, सात नोकषाय (तीनवेद, दो युगल), मनुष्यगतिद्विक, तिर्यंचगतिद्विक, औदारिक आंगोपांग, पांचों जाति (एकेन्द्रियादि), छह संहनन, छह संस्थान, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, दो विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थावरचतुष्क, स्थिरादि छह युगल, नीचगोत्र-उच्चगोत्र) के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

वैक्रियिक काययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण, तीर्थंकर, पांच अंतराय, दो आयु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । वैक्रियिककाययोगी में बताये हुये ज्ञानावरण दण्डक के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का भी अंतर नहीं है । शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आहारककाययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, पुरुषवेद, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, देवगतिचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र, पांच अंतराय, देवायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । आहारककाययोगी में लिखे हुये ज्ञानावरण दण्डक के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का भी अंतर नहीं है । शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

कार्माणकाययोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । औदारिकमिश्रकाययोगी में बताये हुये ज्ञानावरण दण्डक के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का भी अंतर नहीं है ।

शेष प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय (एकेन्द्रिय में जहां तीन समय तक कार्माणकाययोग होता है)।

वेदमार्गणा में स्त्रीवेदी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । तीर्थंकर, नरकायु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ पल्य पृथक्त्व है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ५५ पल्य है ।

नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, नीचगोत्र, तिर्यंचगतिद्विक, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, आतप, उद्योत, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ५५ पल्य है ।

नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, तीन जाति (द्वी.त्रि.चतु.), सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ५५ पल्य है । (यहां भोगभूमि की मिथ्यादृष्टि स्त्री की ३ पल्य आयु, इसमें अधिक नहीं ली क्योंकि वह भवनत्रिक में ही जन्मेगी ।)

साता-असाता, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस चतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३ पल्य है ।

आहारकद्विक के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर सौ पल्य पृथक्त्व है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

आठ कषायों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

नरकायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

देवायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व + ५८ पल्य (१/३ पूर्वकोटी पहले देवायु बांधी + ५५ पल्य की देवी + मनुष्यनी के ८ भव(८ पूर्वकोटी) + ८ पूर्वकोटी असंज्ञी तिर्यंचनी + ७ पूर्वकोटी संज्ञी तिर्यंचनी + ३ पल्य तिर्यंचनी अंतिम अंतर्मुहूर्त में देवायु बांधी) है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ पल्य पृथक्त्व है ।

पुरुषवेदी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का

जघन्य अंतर एक समय है । तीर्थंकर, नरकायु बिना शेष प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, चार संज्वलन, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

निद्रा, प्रचला, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । (उपशम श्रेणी में मरकर देव) ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर है । स्त्रीवेद के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त अधिक दो छासठ सागर है ।

नपुंसकवेद, नीचगोत्र, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर है ।

आठ कषाय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

साता-असाता, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक, तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत, आतप, चार जाति, स्थावर चतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर है ।

देवगतिचतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर एक अंतर्मुहूर्त + ३३ सागर है (उपशम श्रेणी में बंध की व्युच्छित्ति करके पुरुषवेद के अंतिम समय में मरकर देव)।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक तीन पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

आहारकद्विक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (पृथक्त्व वर्ष कम दो पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है ।

नरकायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

देवायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + (३३ सागर-१ समय) + कुछ कम १ पूर्वकोटी) ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

नपुंसकवेदी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, पांच अंतराय, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अर्धपुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

आठ कषाय (अप्र.४, प्रत्या.४) के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अर्धपुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अर्धपुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

साता, असाता, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, मनुष्यायु, नरकायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल है ।

तिर्यंचायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व (नपुंसकवेद के साथ नारकी, मनुष्य के भव) है ।

देवायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

एकेन्द्रियादि चार जाति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, आतप के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

आहारकद्विक के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अर्धपुद्गल परावर्तन है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ सागर (मनुष्य में कुछ कम पूर्वकोटी और तीसरे नरक में ३ सागर + पल्य का असंख्यातवां भाग ।); अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

अपगतवेदी जीवों में पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता वेदनीय, चार संज्वलन, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

कषायमार्गणा में क्रोधकषाय में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट का जघन्य अंतर एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, सात दर्शनावरण (निद्रा, प्रचला बिना), मिथ्यात्व, सोलह कषाय, पांच अंतराय, चार आयु, आहारकद्विक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

शेष सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

इसीप्रकार मान, माया, लोभ में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि मान में ज्ञानावरण दण्डक में संज्वलन क्रोध बिना पंद्रह कषाय लेना, माया में ज्ञानावरण दण्डक में संज्वलन क्रोध, मान बिना चौदह कषाय लेना, लोभ में चारों संज्वलन बिना बारह कषाय लेना ।

ज्ञानमार्गणा में मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल है ।

ध्रुवबंधी (पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय) के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

मनुष्यायु, नरकायु, देवायु. नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल है ।

तिर्यंचायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

विभंगज्ञानी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा,

तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

तीन जाति (द्वी,त्री,चतु), सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (क्योंकि मनुष्य और तिर्यंच में विभंगज्ञान अंतर्मुहूर्त तक रहता है, ये प्रकृतियां मनुष्य, तिर्यंच में बंधती हैं) ।

एकेन्द्रिय जाति, स्थावर आतप के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर (कुछ कम) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (प्रतिपक्षी की अपेक्षा) है ।

देवायु, नरकायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

शेष सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, हास्य-रति, अरति-शोक, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, स्थिरादि तीन युगल, निर्माण, साता-असाता, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आठ कषाय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर एक पूर्वकोटी है ।

देवगतिद्विक, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । (उपशमश्रेणी में बंध व्युच्छित्ति करके अंतर्मुहूर्त पश्चात् मरकर ३३ सागर का देव हुआ, मरकर मनुष्य में आनेपर बंध प्रारंभ किया) ।

आहारकद्विक के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (वर्षपृथक्त्व कम दो पूर्वकोटी + ३३ सागर), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है ।

मनुष्यायु, देवायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

(मनुष्यायु - छह महिना + पूर्वकोटी + (३३ सागर-अंतर्मुहूर्त))।

(देवायु - १/३ पूर्वकोटी + (३३ सागर-एक समय)+(पूर्वकोटी-अंतर्मुहूर्त))।

मनःपर्ययज्ञानी जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, देवायु बिना सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्व कोटी और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । देवायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

संयममार्गणा में संयतों में इसीप्रकार जानना चाहिए ।

सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत , संयतासंयत जीवों में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि ध्रुवबंधी और तीर्थंकर प्रकृतियों

के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

सूक्ष्मसाम्परायसंयतों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

असंयतों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगतिद्विक, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, उद्योत, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल; अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अर्धपुद्गल परावर्तन, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

एकेन्द्रियादि चार जाति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, आतप के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, समचतुरस्र संस्थान, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, साता-असाता वेदनीय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल,

अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क, देवायु, नरकायु, मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल है ।

तिर्यंचायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक तीन पल्य (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

दर्शनमार्गणा में चक्षुदर्शनी में त्रस पर्याप्त के समान, अचक्षुदर्शनी में ओघ के समान, अवधिदर्शनी में अवधिज्ञानी के समान भंग है ।

लेश्यामार्गणा में सभी लेश्याओं में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

कृष्णलेश्या में पांच ज्ञानावरण, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (नरक में जाने के पहले एक अंतर्मुहूर्त अधिक), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, नपुंसकवेद, अप्रशस्त विहायोगति, दुस्वर, नीचगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर; अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है।

पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, साता वेदनीय, वज्रवृषभनाराच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर; अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

स्त्रीवेद, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ

कम ३३ सागर है ।

असातावेदनीय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक, देवगतिद्विक, एकेन्द्रियादि पांच जाति, स्थावरचतुष्क, त्रसचतुष्क, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति-अयशकीर्ति, निर्माण के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात निर्माण के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

तिर्यंचगतिद्विक, मनुष्यगतिद्विक, हुंडक संस्थान, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर २२ सागर है ।

चार संस्थान, चार संहनन के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

देवायु, नरकायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

नील और कापोत लेश्या में इसीप्रकार है । इतनी विशेषता है कि जहां ३३ सागर लिखा है वहां क्रमसे १७ सागर और ७ सागर समझना । इतनी विशेषता और है कि मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट

अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

पीतलेश्या में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार अप्रत्याख्यानावरण, भय, जुगुप्सा, पांच अंतराय (जाने के पूर्व अंतर्मुहूर्त + साधिक दो सागर), तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण (इनका उत्कृष्ट प्रदेशबंध देव एकेन्द्रियजातियुत २५ के साथ करेंगे इसलिए अंतर्मुहूर्त कम साधिक दो सागर) के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर(+अंतर्मुहूर्त) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक दो सागर है ।

नपुंसकवेद, तिर्यंचगतिद्विक, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, पांच संस्थान, पांच संहनन, नीचगोत्र के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है (अनुत्कृष्ट के लिये सम्यक्त्व में रखकर अंत में मिथ्यात्व में लाना) ।

पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, साता-असाता वेदनीय, मनुष्यगतिद्विक, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, स्थिरादि तीन युगल, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

देवगतिचतुष्क के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, प्रशस्त विहायोगति, समचतुरस्र संस्थान, सुभग, सुस्वर, आदेय, त्रस के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।(क्योंकि उत्कृष्ट प्रदेशबंध के स्वामी मनुष्य, तिर्यंच हैं । अनुत्कृष्ट का उत्कृष्ट अंतर देवों में प्रतिपक्षी प्रकृतियों की अपेक्षा होता है ।)

तीर्थंकर, आहारकद्विक, चार प्रत्याख्यानावरण, चार संज्वलन, देवायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर

कुछ कम छह महिना है ।

पद्मलेश्या में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार अप्रत्याख्यानावरण, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, पांच अंतराय के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक १८ सागर (+अंतर्मुहूर्त), औदारिक शरीर और औदारिक आंगोपांग में अंतर्मुहूर्त कम साधिक १८ सागर है तथा अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक १८ सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, तीर्थंकर, आहारकद्विक, प्रत्याख्यानावरण चार, संज्वलन चार, देवायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (क्योंकि मनुष्य, तिर्यंच स्वामी है) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, पांच संस्थान, पांच संहनन, नीचगोत्र के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक १८ सागर है ।

पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, साता-असाता वेदनीय, मनुष्यगतिद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक १८ सागर और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

देवगतिचतुष्क के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक १८ सागर है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

शुक्ललेश्या में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता वेदनीय, चार प्रत्याख्यानावरण, चार संज्वलन, पुरुषवेद, तीर्थंकर, आहारकद्विक, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, उच्च गोत्र, पांच अंतराय के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

निद्रा, प्रचला, हास्य-रति, अरति-शोक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३१ सागर (जाने के पहले एक अंतर्मुहूर्त अधिक), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है ।

अप्रत्याख्यानावरण चार, मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

देवगतिचतुष्क के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।(उपशमश्रेणी में बंध व्युच्छित्ति करके अंतर्मुहूर्त बाद मरकर देव हुआ) ।

स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है ।

असातावेदनीय, वज्रवृषभनाराच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

देवायु के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का अंतर दो समय है ।

मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

भव्यमार्गणा में भव्यों में ओघ के समान भंग है, अभव्यों में मत्यज्ञानी

के समान भंग है ।

सम्यक्त्वमार्गणा में वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । तीर्थंकर प्रकृति बिना शेष सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है।

पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

अप्रत्याख्यानावरण चार, प्रत्याख्यानावरण चार के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि तीन युगल के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर एक पूर्वकोटी है ।

देवगतिचतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर ३३ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

मनुष्यायु, देवायु और आहारकद्विक के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (देखिए महाबंध पुस्तक १, पृष्ठ १०८)। देवायु का अंतर (१/३ पूर्वकोटी - अंतर्मुहूर्त)+(३३ सागर - एक समय)+(पूर्वकोटी - अंतर्मुहूर्त)। मनुष्यायु का अंतर छह महिना + एक पूर्वकोटी + (३३ सागर - अंतर्मुहूर्त)।

औपशमिक सम्यग्दृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय तथा उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, इतनी विशेषता है कि मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध

का जघन्य अंतर एक समय है । पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, सात नोकषाय, साता-असाता, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, समचतुरस्र संस्थान, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, पांच अंतराय, उच्चगोत्र के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

अप्रत्याख्यानावरण चार, प्रत्याख्यानावरण चार के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (कुछ कम दो पूर्वकोटी अधिक) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर, अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है ।

देवगतिचतुष्क के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (कुछ कम दो पूर्वकोटी + ३३ सागर), अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त अधिक ३३ सागर (उपशमश्रेणी में बंध व्युच्छित्ति के बाद अंतर्मुहूर्त के बाद मरकर देव हुआ) है ।

आहारकद्विक के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर (कुछ कम दो पूर्वकोटी + ३३ सागर) और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है। (अंतर्मुहूर्त + ३३ सागर + कुछ कम पूर्वकोटी) ।

देवायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

मनुष्यायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (दो समय कम छह आवली) है ।

ध्रुवबंधी प्रकृतियों के और मनुष्यायु, तिर्यंचायु, देवायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है । शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में आयु का बंध नहीं है, शेष सभी प्रकृतियों के भंग सासादन सम्यग्दृष्टि के समान है ।

मिथ्यादृष्टि जीवों में मत्यज्ञानी के समान भंग है ।

संज्ञीमार्गणा में संज्ञियों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का भंग पंचेन्द्रिय के समान है । इतनी विशेषता है कि उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व है ।

असंज्ञियों में सभी प्रकृतियों के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, मनुष्यायु, देवायु, नरकायु बिना शेष प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल है ।

ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर दो समय है।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

नरकगतिद्विक, देवगतिचतुष्क के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल है ।

मनुष्यायु, देवायु, नरकायु के उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

तिर्यंचायु के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी+ एक पूर्वकोटी (साधिक एक पूर्वकोटी) है ।

शेष सभी प्रकृतियों के अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है।

आहारमार्गणा में आहारक जीवों में ओघ के समान भंग है, इतनी विशेषता है कि जहां उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन या अर्धपुद्गल परावर्तन या असंख्यात लोक कहा है वहां कुछ कम अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना

चाहिए ।

अनाहारकों में कार्माणकाययोगी जीवों के समान जानना चाहिए ।

जघन्य प्रदेशबंध का अंतर

ओघ में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, साता-असाता, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, हास्य-रति, अरति-शोक, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण, उत्कृष्ट अंतर असंख्यातलोक प्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । इनके अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर है । इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेद में अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो छासठ सागर है ।

नपुंसकवेद, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीच गोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त कम ३ पल्य अधिक कुछ कम दो छासठ सागर है ।

आठ कषाय का जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

देवायु, नरकायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात पुद्गल परावर्तन है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व प्रमाण है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम दो क्षुल्लकभवग्रहण

प्रमाण, उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है ।

तिर्यंचगतित्रिक (तिर्यंचगतिद्विक+उद्योत) के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है ।

मनुष्यगतित्रिक (मनुष्यगतिद्विक+उच्चगोत्र) के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है ।

नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर है ।

चार जाति, स्थावर, आतप, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर १८५ सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस चतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य

अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक तीन पल्य (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + तीन पल्य) है ।

आहारकद्विक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर एक पूर्वकोटी का कुछ कम त्रिभाग (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन प्रमाण है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

जघन्य प्रदेशबंध का अंतर मार्गणाओं में –

नारकियों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, पंचेन्द्रिय जाति, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, मनुष्यगतिद्विक, तिर्यंचगतिद्विक, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, उद्योत, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, उच्चगोत्र, नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है । इतनी विशेषता है कि सातवें नरक में मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है तथा मनुष्यगतिद्विक, तिर्यंचगतिद्विक, उच्चगोत्र और नीचगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । (देखिए महाबंध पुस्तक १, पृष्ठ ८३)

साता-असाता, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यशकीर्ति-अयशकीर्ति, सुभग, सुस्वर, आदेय -इनके जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध

का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

एक से छह नरक तक स्त्यानगृद्धि दण्डक और स्त्रीवेद दण्डक में अजघन्य का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण है तथा मनुष्यगतिद्विक और उच्चगोत्र के प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । दूसरे और तीसरे नरक में जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है । (देखिए पुस्तक ६, पृष्ठ ११६, स्वामित्व) अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

तिर्यंचों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, प्रत्याख्यान चार, संज्वलन चार, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय, के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोकप्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य है ।

नपुंसकवेद, अप्रत्याख्यान चार, तिर्यंचगतिद्विक, चार जाति, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, उद्योत, स्थावरचतुष्क, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर

एक अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है । (अग्निकायिक, वायुकायिक की अपेक्षा) ।

नरकायु, देवायु के जघन्य, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी का त्रिभाग है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी का त्रिभाग है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक एक पूर्वकोटी (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी) है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में ज्ञानावरण दण्डक (सामान्य तिर्यंचों में देखो) के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व प्रमाण है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । इतनी विशेषता है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और योनिमती में जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (एक समय कम एक भव) है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य है ।

नपुंसकवेद दण्डक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

साता-असाता दण्डक तथा उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । इतनी विशेषता है कि तिर्यंचनी में जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

नरकायु, देवायु का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच में मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त और तिर्यंचनी में जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है ।

पंचेन्द्रियतिर्यंचत्रिक में अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी का त्रिभाग है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच में तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक एक पूर्वकोटी (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी) है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और तिर्यंचनी में तिर्यंचायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व है । अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक पूर्वकोटी (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी) है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त में ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, औदारिक शरीर के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (कुछ कम कायस्थिति) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है ।

नपुंसकवेद दण्डक, साता-असाता दण्डक, मनुष्यगतिद्विक, तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र, उच्चगोत्र, औदारिक आंगोपांग के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यों में ज्ञानावरण दण्डक (पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय,) के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है (क्योंकि असंज्ञी से आया हुआ)। अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (उपशमश्रेणी में) ।

स्त्यानगृद्धि दण्डक के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य है ।

नपुंसकवेद, नीचगोत्र, पांच संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, उद्योत, आतप, चार जाति, स्थावरचतुष्क, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग के जघन्य

प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

आठ कषाय (अप्रत्या., प्रत्या.) के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है। अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है। जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी का त्रिभाग (१/३ पूर्वकोटी), अजघन्य का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है। (प्रतिपक्ष की अपेक्षा)

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आहारकद्विक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी का त्रिभाग है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

नरकायु, देवायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी का त्रिभाग है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (दो अपकर्ष के बीच) और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी का त्रिभाग है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण

प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक पूर्वकोटी है (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी) ।

इसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनी में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि तिर्यंचायु और मनुष्यायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । तिर्यंचायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी का त्रिभाग है । मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी पृथक्त्व और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक पूर्वकोटी है (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + १ पूर्वकोटी)।

देवों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम इकतीस सागर है ।

स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, आतप, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अप्रशस्त विहायोगति, पांच संस्थान, पांच संहनन, नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम इकतीस सागर है । इतनी विशेषता है कि तिर्यंचगतिद्विक और उद्योत के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक अठारह सागर है तथा एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम साधिक दो सागर है।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक आंगोपांग, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर

एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

इसीप्रकार सौधर्म-ईशान तक जानना । सभी देवों में अपनी अपनी स्थिति कहना ।

सनत्कुमारादि देवों में पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक आंगोपांग और त्रस का भंग ज्ञानावरण के समान है (जघन्य और अजघन्य का अंतर नहीं) ।

आनतादि देवों में मनुष्यद्विक का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

इन्द्रियमार्गणा में एकेन्द्रियों में पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर ओघ के समान है (जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है)। इनके अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक (ज्ञानावरण के समान) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक (अग्नि, वायु की अपेक्षा) है ।

शेष प्रकृतियों (साता-असाता, तीन वेद, हास्य-रति, अरति-शोक, तिर्यंचगतिद्विक, पांच जाति, औदारिक आंगोपांग, छह संस्थान, छह संहनन, दो विहायोगति, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, त्रसादि चार युगल, स्थिरादि छह युगल, नीचगोत्र) के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अंतर साधिक सात हजार वर्ष है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक २२ हजार वर्ष है (साधिक ७००० वर्ष + अंतर्मुहूर्त कम २२००० वर्ष) ।

विकलेन्द्रियों में इसीप्रकार है, इतनी विशेषता है कि जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष है तथा मनुष्यगतिद्विक और उच्चगोत्र का भंग शेष प्रकृतियों के समान है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर द्वीन्द्रियादि में क्रमशः कुछ कम चार वर्ष, साधिक सोलह दिन, कुछ कम दो महिना है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर संख्यात हजार वर्ष है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक अपनी अपनी भवस्थिति प्रमाण है (१/३ भव + कुछ कम एक भव) ।

पंचेन्द्रियों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, साता-असाता, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक एक हजार सागर है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में) है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर है । इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेद के अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो छासठ सागर है (ओघ के समान - साधिक में अंतर्मुहूर्त)।

नपुंसकवेद, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट

अंतर अंतर्मुहूर्त कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर है ।

आठ कषायों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी प्रमाण है ।

देवायु, नरकायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्ल्कभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटी पृथक्त्व अधिक एक हजार सागर (ज्ञानावरण के समान) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (एक समय कम दो क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण) और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक एक हजार सागर है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व + १००० सागर है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व (क्योंकि असंज्ञी पंचेन्द्रिय के नरकायु के साथ जघन्य बंध होगा) और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर १८५ सागर है ।

तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर (६६+६६+३१ सागर) है ।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

देवगतिद्विक, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट

अंतर साधिक ३३ सागर है (उपशमश्रेणी में बंध व्युच्छित्ति के अंतर्मुहूर्त बाद मरण करके ३३ सागर के देव में पश्चात् मनुष्यभव में दुबारा बंध किया या सातवें नरक की अपेक्षा)।

चार जाति, स्थावरचतुष्क (स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त), आतप के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर १८५ सागर है ।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक तीन पल्य (१/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है ।

आहारकद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है। जघन्य का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटी का त्रिभाग (१/३ पूर्वकोटी क्योंकि देवायु के साथ ३१ प्रकृतियों का बंध करनेवाला अप्रमत्त जीव स्वामी है)। अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व + १००० सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, प्रशस्त विहायोगति के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । (उपशमश्रेणी में तथा द्वितीयादि नरक के सन्मुख) ।

इसीप्रकार पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों में जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि (१) ज्ञानावरण दण्डक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (क्योंकि जघन्य प्रदेशबंध असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त के उपपाद में होता है और उसका जघन्य एक भव अंतर्मुहूर्त प्रमाण है) और उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है (कायस्थिति)। (२) तिर्यंचायु, मनुष्यायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, दोनों का उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व(कायस्थिति), (३) आहारकद्विक के

अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व (कायस्थिति) है।

कायमार्गणा में पांच स्थावरकायिकों में आयु बिना सभी प्रकृतियों का भंग एकेन्द्रियों के समान है । इतनी विशेषता है कि अग्निकायिक और वायुकायिकों में तिर्यंचगतिद्विक, नीचगोत्र ध्रुवबंधी प्रकृतियां है इसलिए उनका ज्ञानावरण दण्डक के समान भंग है । आयु - तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एकेन्द्रिय के समान है अर्थात् जघन्य अंतर क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अंतर पृथ्वीकायिकों में साधिक २२००० वर्ष (कुछ कम १/३ भव + १ भव), जलकायिकों में साधिक ७००० वर्ष, अग्निकायिकों में साधिक ३ दिन, वायुकायिकों में साधिक ३००० वर्ष और वनस्पतिकायिकों में साधिक १०००० वर्ष है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर पृथ्वीकायिकों में साधिक ७००० वर्ष, (कुछ कम १/३ भव), जलकायिकों में साधिक २००० वर्ष, वनस्पतिकायिकों में साधिक ३००० वर्ष है ।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त में पंचेन्द्रिय के समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनकी कायस्थिति क्रमशः पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक दो हजार सागर और दो हजार सागर है ।

योगमार्गणा में पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी जीवों में सभी प्रकृतियों के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय; जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है।

काययोगी जीवों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय, स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है, उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरणादि में अंतर्मुहूर्त है और स्त्यानगृद्धित्रिक आदि में एक समय है ।

साता-असाता, सात नोकषाय (स्त्रीवेद, पुरुषवेद, दो युगल), तिर्यंचगतिद्विक,

पांच जाति, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, छह संस्थान, छह संहनन, दो विहायोगति, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क, स्थावरचतुष्क, स्थिरादि छह युगल, नीचगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (अजघन्य की अपेक्षा) और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (प्रतिपक्ष की अपेक्षा) है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (प्रतिपक्ष की अपेक्षा) है।

मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण, उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय (प्रतिपक्ष की अपेक्षा) और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक (अग्निकायिक, वायुकायिक की अपेक्षा) है ।

आहारकद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय (जघन्य की अपेक्षा या उपशमश्रेणी की अपेक्षा) और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में मरकर देव हुआ) है ।

नरकायु, देवायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, जघन्य का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अजघन्य का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

मनुष्यायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम दो क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण (अंतर्मुहूर्त) और उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन) है। अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (दो अपकर्षकाल के बीच) और उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक २२००० वर्ष (२२००० का १/३ + २२००० वर्ष + लब्धिअपर्याप्त मनुष्य के आठ भव उसके अंतर्मुहूर्त में असंक्षेपाद्धाप्रमाण कम) है ।

औदारिककाययोगी जीवों में (देखिए स्वामित्व पुस्तक ६, पृष्ठ १२४) ज्ञानावरण दण्डक (काययोगवाला), स्त्यानगृद्धि दण्डक, नपुंसकवेद दण्डक, मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है (क्योंकि शरीरपर्याप्ति पूर्ण होने के समय में इनका जघन्य बंध होता है और आयु समाप्त होनेपर वह औदारिकमिश्र या अन्य योग में जाता है)। ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । नपुंसकवेद दण्डक, मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (प्रतिपक्ष की अपेक्षा)।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आहारकद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है। जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

नरकायु, देवायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है, जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त तथा अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ७००० वर्ष (२२००० वर्ष के त्रिभाग में कुछ कम) है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों में ज्ञानावरण दण्डक, स्त्यानगृद्धि दण्डक, नपुंसकवेद दण्डक, मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ज्ञानावरण दण्डक और स्त्यानगृद्धि दण्डक के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है । नपुंसकवेद दण्डक, मनुष्यगतिद्विक, उच्चगोत्र के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (प्रतिपक्ष की अपेक्षा) है ।

देवगतिचतुष्क, तीर्थंकर के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

मनुष्यायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (जघन्य - एक समय कम दो क्षुल्लकभव), दोनों का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (औदारिकमिश्र का उत्कृष्ट काल) है ।

तिर्यंचायु के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (दो अपकर्ष के बीच) और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (मनुष्य के लब्धिअपर्याप्त के आठ भव) ।

वैक्रियिककाययोगी में ज्ञानावरण दण्डक अर्थात् पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण, तीर्थंकर, पांच अंतराय के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

सात नोकषाय, साता-असाता, नीचगोत्र, उच्चगोत्र, औदारिक आंगोपांग, तिर्यंचगतिद्विक, मनुष्यगतिद्विक, छह संस्थान, छह संहनन, एकेन्द्रिय जाति, पंचेन्द्रिय जाति, आतप, उद्योत, दो विहायोगति, त्रस-स्थावर, स्थिरादि छह युगल के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है; अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (प्रतिपक्ष की अपेक्षा) है ।

तिर्यंचायु और मनुष्यायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर

एक समय, जघन्य का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (अजघन्य की अपेक्षा) और अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी में सभी प्रकृतियों में वैक्रियिककाययोगी के समान भंग है। यहां आयु का बंध नहीं है ।

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, देवगतिद्विक, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र, पांच अंतराय के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । (क्योंकि आहारककाययोग में शरीरपर्याप्ति पूर्ण होने के प्रथम समय में और आहारकमिश्रकाययोग के प्रथम समय में जघन्य योग के साथ जघन्य प्रदेशबंध का होता है । देखिए स्वामित्व पुस्तक ६, पृष्ठ १२५,१२६)

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि तीन युगल के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है (प्रतिपक्ष की अपेक्षा)।

देवायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है ।

कार्माणकाययोगी जीवों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । स्त्यानगृद्धि दण्डक में भी ज्ञानावरण के समान है ।

शेष सभी प्रकृतियों के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । इनके अजघन्य प्रदेशबंध का भी अंतर नहीं है, इतनी विशेषता है कि साता-असाता, चार नोकषाय (हास्य-रति, अरति-शोक), आतप, उद्योत, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यशस्कीर्ति के अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है (प्रतिपक्ष की अपेक्षा जहां एकेन्द्रिय में विग्रहगति में तीन समय घटित होते हैं)।

वेदमार्गणा में स्त्रीवेदी जीवों में पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन,

भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (एक समय कम असंज्ञी पंचेन्द्रिय स्त्रीवेदी का एक छोटा भव) और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक समय है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ५५ पल्य है ।

नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, नीचगोत्र, तिर्यंचगतिद्विक, पांच संस्थान, पांच संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ५५ पल्य है ।

तीन जाति (द्वी.त्रि.चतु.), सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ५५ पल्य है ।

साता-असाता, पुरुषवेद, हास्य-रति, अरति-शोक, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी (क्योंकि नरकायु के साथ असंज्ञी पंचेन्द्रिय के जघन्य प्रदेशबंध होता है), अजघन्य प्रदेशबंध का

उत्कृष्ट अंतर साधिक ५५ पल्य है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व है। अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ५५ पल्य है ।

आहारकद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है । अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है । अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर चार समय है ।

आठ कषायों के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

नरकायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है। दोनों प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

देवायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व है । अजघन्य का उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक ५८ पल्य है । (१/३ पूर्वकोटी पहले देवायु बांधी + ५५ पल्य की देवी + पूर्वकोटी के ८ भव मनुष्यनी के + ८ पूर्वकोटी असंज्ञी स्त्रीवेदी + ७ पूर्वकोटी संज्ञी तिर्यंचनी + ३ पल्य भोगभूमी की तिर्यंचनी, अंतिम अंतर्मुहूर्त में देवायु बांधी ।)

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । दोनों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ पल्य पृथक्त्व है ।

पुरुषवेदी जीवों में पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, चार संज्वलन, पांच अंतराय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर एक

समय है ।

निद्रा, प्रचला, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर ज्ञानावरण के समान (जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व) है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशमश्रेणी में मरण की अपेक्षा) है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान, अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर (ओघ के समान) है। स्त्रीवेद का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो छासठ सागर है ।

नपुंसकवेद, नीच गोत्र, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर (ओघ के समान) है ।

आठ कषाय के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है ।

साता-असाता, पांच नोकषाय (पुरुषवेद, हास्यादि चार), पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, स्थिरादि तीन युगल, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है। जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है । अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर है ।

तिर्यंचगतिद्विक, उद्योत, चार जाति, स्थावरचतुष्क, आतप के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक तीन पल्य (अंतर्मुहूर्त कम १/३ पूर्वकोटी + तीन पल्य) है ।

देवगतिचतुष्क के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (उपशम श्रेणी की अपेक्षा अंतर्मुहूर्त अधिक) ।

आहारकद्विक के जघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर सौ सागर पृथक्त्व है ।

तीर्थंकर प्रकृति के जघन्य प्रदेशबंध का अंतर नहीं है । अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त (उपशम श्रेणी की अपेक्षा) है।

नरकायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । दोनों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

देवायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । जघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व है । अजघन्य प्रदेशबंध का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (अंतर्मुहूर्त कम १/३ पूर्वकोटी + एक समय कम ३३ सागर + अंतर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी) ।

तिर्यंचायु, मनुष्यायु के जघन्य और अजघन्य प्रदेशबंध का जघन्य अंतर एक समय है । दोनों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम सौ सागर पृथक्त्व है ।

(आगे की मार्गणा पुस्तक ६, पृष्ठ १५४ से उपलब्ध है ।)

पुस्तक ६, पृष्ठ १८२ से त्रुटित अंश –

उत्तरप्रकृतियों में उत्कृष्ट प्रदेशबंध का स्वस्थान सन्निकर्ष

हास्य के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क का कदाचित् बंधक होता है, यदि बंधक होता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । प्रत्याख्यानावरण चतुष्क का कदाचित् बंधक होता है, यदि

बंधक होता है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का भी बंधक होता है(पांचवा गुणस्थान) और अनुत्कृष्ट प्रदेशों का भी बंधक होता है (चौथा गुणस्थान), यदि अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है तो नियम से अनंतभाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । क्रोध संज्वलन का नियम से बंधक होता है जो नियम से दो भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । मान संज्वलन का नियम से बंधक होता है जो नियम से साधिक डेढ़ भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है। माया संज्वलन और लोभ संज्वलन का नियम से बंधक होता है जो नियम से संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । पुरुषवेद का नियम से बंधक होता है जो नियम से संख्यात गुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है । रति, भय, जुगुप्सा का नियम से बंधक है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । इसीप्रकार रति की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए। अरति, शोक की मुख्यता से भी इसीप्रकार जानना चाहिए । यहां अरति के साथ शोक नियम से बंधेगा जो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है। भय और जुगुप्सा की मुख्यता भी इसीप्रकार सन्निकर्ष जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि हास्य, रति और शोक, अरति का कदाचित् बंधक है, यदि बंधक है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है ।

नामकर्म का स्वस्थान सन्निकर्ष

तिर्यंचगति का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला जीव (२३ का बंधस्थान) – महाबंध पुस्तक ६, पृष्ठ ९४ पर लिखी हुई अन्य २४ प्रकृतियों का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । (बादर, सूक्ष्म, प्रत्येक, साधारण कदाचित् बंधती हैं) ।

नरकगति का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला जीव नरकगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, अप्रशस्त विहायोगति, दुस्वर का नियम से बंध करता है और नियम से उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । शेष २२ प्रकृतियों का अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है ।

मनुष्यगति का (२५ का बंधस्थान) उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला जीव मनुष्यगत्यानुपूर्वी, औदारिक आंगोपांग, पंचेन्द्रिय जाति, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, त्रस का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । वही जीव औदारिक

शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, हुंडक संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, बादर, अपर्याप्त, प्रत्येक, अस्थिरादि पांच, निर्माण का नियम से बंधक है जो अनुत्कृष्ट संख्यातवें भाग हीन प्रदेशबंध करता है ।

देवगति का उत्कृष्ट प्रदेशबंध (२८, ३० का बंधस्थान) करनेवाला जीव वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, समचतुरस्र संस्थान, देवगत्यानुपूर्वी, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय का नियम से बंधक है जो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इतनी विशेषता है कि वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपाग का संख्यातवेंभाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध भी करता है । पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण का नियम से बंधक है, जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । स्थिरादि दो युगल का कदाचित् बंधक है, यदि बंधक है तो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । यशस्कीर्ति का कदाचित् बंधक है, यदि बंध करता है तो संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

एकेन्द्रिय जाति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाले जीवों में तिर्यंचगति के सन्निकर्ष के समान भंग है ।

इसीप्रकार तिर्यंचगति दण्डक (२३ प्रकृतिक बंधस्थान) के शेष प्रकृतियों में सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति के उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला जीव (२५ प्रकृतिवाला बंधस्थान) औदारिक आंगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, त्रस प्रकृतियों का नियम से बंधक है, जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । तिर्यंचगति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, हुंडक संस्थान, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, बादर, अपर्याप्त, प्रत्येक, अस्थिर आदि पांच और निर्माण का नियम से बंधक होता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक होता है ।

इसीप्रकार पंचेन्द्रिय जाति के उत्कृष्ट प्रदेशों के बंधक जीवों में सन्निकर्ष जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि तिर्यंचगतिद्विक का कदाचित् बंधक है, यदि बंधक है तो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । तथा

मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी का कदाचित् बंधक है और यदि बंधक है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । इसीप्रकार औदारिक आंगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, त्रस प्रकृतियों में भी जानना चाहिए । उसमें द्वीन्द्रियादिक चार जाति का कदाचित् बंधक है, यदि बंधक है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर का सन्निकर्ष तिर्यंचगति के सन्निकर्ष के समान है ।

वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव दो गति (न.दे.), दो गत्यानुपूर्वी, दो विहायोगति, सुस्वर, दुस्वर, सुभग, आदेय, समचतुरस्र संस्थान का कदाचित् बंधक है, यदि बंधक है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । हुंडक संस्थान, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति का कदाचित् बंधक है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण का नियम से बंधक है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । यशस्कीर्ति का कदाचित् बंधक है, यदि बंधक है तो संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है ।

आहारक शरीर, आहारक आंगोपांग के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव (३० प्रकृतियों का बंधस्थान) देवगतिद्विक, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय का नियम से बंधक है, जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, स्थिर, शुभ, निर्माण का नियम से बंधक है, जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है । यशस्कीर्ति का नियम से बंधक है जो नियम से संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक है ।

समचतुरस्र संस्थान के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव देवगतिद्विक, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है (२८, ३० का बंधस्थान) । वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग का नियम से बंध करता है, जो उत्कृष्ट प्रदेशबंध भी करता है और अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है, यदि अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है तो संख्यातवें भाग

हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । आहारक शरीर, आहारक आंगोपांग का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण का नियम से बंध करता है, जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अयशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है, जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है जो संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है ।

न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव (२९ का बंधस्थान) दो गति (म.ति.), दो गत्यानुपूर्वी, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, दो विहायोगति, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, अयशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है। यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण का नियम से बंध करता है जो नियम से संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । पांच संहनन का (असम्प्राप्ता. बिना) कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । इसीप्रकार स्वाति, कुब्जक, वामन संस्थान में जानना चाहिए ।

इसीप्रकार पांच संहनन के उत्कृष्ट प्रदेशबंध में सन्निकर्ष जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि वह चार संस्थान (न्यग्रोध, स्वाति, कुब्जक, वामन) का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । हुंडक संस्थान, समचतुरस्र संस्थान का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है ।

परघात का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला जीव (एकें. पर्याप्तयुत २५ का बंधस्थान), उच्छ्वास, पर्याप्त का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । स्थिर, शुभ प्रकृतियों का कदाचित् बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है । तिर्यंचगतिद्विक, एकेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, हुंडक संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, स्थावर,

दुर्भग, अनादेय, निर्माण का नियम से बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । बादर, सूक्ष्म, प्रत्येक, साधारण, अस्थिर, अशुभ, अयशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है जो संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

इसीप्रकार उच्छ्वास, पर्याप्त, स्थिर, शुभ प्रकृतियों में जानना चाहिए ।

आतप के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव (एकेन्द्रिय, पर्याप्त, आतपयुत २६ का बंधस्थान) यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है, जो संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । शेष नियम से बंधनेवाली या कदाचित् बंधनेवाली प्रकृतियों का संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है।

उद्योत में भी इसीप्रकार जानना चाहिए ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव देवगति आदि २५ प्रकृतियों का नियम से बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है। स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अयशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है जो संख्यातगुणा हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध करता है ।

यशस्कीर्ति का उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव नामकर्म की एक ही प्रकृति बांधता है इसलिए वहां सन्निकर्ष घटित नहीं होता ।

सभी मार्गणाओं में ज्ञानावरण, वेदनीय, आयु, गोत्र और अंतराय कर्मों का भंग ओघ के समान है ।

नारकियों में निद्रानिद्रा के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव स्त्यानगृद्धि, प्रचलाप्रचला का नियम से बंध करता है जो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है। छह दर्शनावरण का नियम से बंध करता है जो अनंतवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार स्त्यानगृद्धि और प्रचलाप्रचला का सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

निद्रा के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक जीव शेष पांच दर्शनावरण का नियम

से बंध करता है जो उत्कृष्ट प्रदेशों का करता है । इसीप्रकार अन्य पांच दर्शनावरण का एक-एक को मुख्य करके सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

मिथ्यात्व के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक जीव अनंतानुबंधी चतुष्क का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । बारह कषाय, भय, जुगुप्सा का नियम से बंधक होता है जो नियम से अनंतवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । स्त्रीवेद, नपुंसकवेद का कदाचित् बंध करता है, जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक का कदाचित् बंध करता है जो नियम से अनंतवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार अनंतानुबंधी चतुष्क, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

अप्रत्याख्यानावरण क्रोध के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंधक जीव ग्यारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । चार नोकषायों का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार ग्यारह कषाय और सात नोकषाय में एक-एक की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

तिर्यंचगति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव (२९ का बंधस्थान) पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, औदारिक आंगोपांग, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण का नियम से बंध करता है, जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । दो विहायोगति, छह संस्थान, छह संहनन, स्थिरादि छह युगल का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार तिर्यंचगत्यानुपूर्वी का सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

इसीप्रकार मनुष्यगति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाले जीवों में सन्निकर्ष जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि यहां मनुष्यगत्यानुपूर्वी जानना । मनुष्यगत्यानुपूर्वी का सन्निकर्ष इसीप्रकार जानना चाहिए ।

इसीप्रकार शेष सत्ताईस प्रकृतियों की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए इतनी विशेषता है कि दो गति, दो गत्यानुपूर्वी का कदाचित् बंध करता है और

यदि बंध करता है तो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

उद्योत के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव तिर्यंचगति आदि उनतीस प्रकृतियों का बंध करता है जो नियम से संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव (३० प्रकृति का बंधस्थान) मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण का नियम से बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । स्थिरादि तीन युगल का बंध करता है, यदि बंध करता है तो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

तिर्यंचों में दर्शनावरण का भंग नारकियों के समान है ।

मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चार, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद का सन्निकर्ष नारकियों के समान है ।

अप्रत्याख्यानावरण क्रोध के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव अप्रत्याख्यानावरण मान, माया, लोभ, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । हास्य-रति, अरति-शोक का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । आठ कषाय (प्रत्या.४, संज्व.४) का नियम से बंध करता है, जो अनंतवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार अप्रत्याख्यानावरण मान, माया, लोभ की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

प्रत्याख्यानावरण क्रोध के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव प्रत्याख्यानावरण मान, माया, लोभ, संज्वलन चार, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद का नियम से बंध करता है, जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । चार नोकषाय का कदाचित् बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार प्रत्याख्यानावरण तीन और संज्वलन चार में से एक-एक की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

पुरुषवेद के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव अप्रत्याख्यानावरण चार, चार नोकषाय का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । प्रत्याख्यानावरण चार, संज्वलन चार का नियम से बंध करता है, उत्कृष्ट प्रदेशों का भी बंध करता है, अनुत्कृष्ट प्रदेशों का भी बंध करता है । यदि अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है तो अनंतवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । भय, जुगुप्सा का नियम से बंध करता है, जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार शेष छह नोकषाय में से एक-एक की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

तिर्यंचगति, नरकगति, मनुष्यगति, एकेन्द्रियादि पांच जाति का भंग ओघ के समान है ।

देवगति का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि १) वैक्रियिक शरीर और वैक्रियिक आंगोपांग का नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है। २) यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक आंगोपांग का भंग ओघ के समान है ।

वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग का भंग भी ओघ के समान है इतनी विशेषता है कि यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

समचतुरस्र संस्थान का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि वैक्रियिक शरीर और वैक्रियिक आंगोपांग का नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है।

न्यग्रोधपरिमंडल आदि पांच संस्थानों, छह संहनन, आतप, उद्योत का भंग ओघ के समान है ।

परघात, उच्छ्वास, पर्याप्त, स्थिर, शुभ प्रकृतियों का भंग ओघ के समान

है, इतनी विशेषता है कि यशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

यशस्कीर्ति का भंग परघात के समान जानना (एकेन्द्रिय पयाप्तयुत २५ का बंधस्थान)।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिक में इसीप्रकार जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तों में निद्रानिद्रा के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव शेष आठ दर्शनावरण का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार शेष आठ में से एक-एक की मुख्यता से जानना चाहिए ।

मिथ्यात्व के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । सात नोकषायों का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार शेष प्रकृतियों में से एक-एक की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

नामकर्म की सभी प्रकृतियों का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है इतनी विशेषता है कि १) पांच संस्थान, पांच संहनन का उत्कृष्ट प्रदेशबंध करनेवाला जीव सुस्वर-दुस्वर, प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति, सुभग, आदेय का कदाचित् बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

इसीप्रकार एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, पांच स्थावरकायिक, सभी अपर्याप्त जीवों में (मार्गणाओं में) जानना चाहिए ।

मनुष्यों में ओघ के समान भंग है ।

देवों में दर्शनावरण और मोहनीय का भंग नारकियों के समान है ।

तिर्यंचगति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव एकेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, हुंडक संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, स्थावर, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, दुर्भग, अनादेय, निर्माण का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । स्थिर, अस्थिर,

शुभ, अशुभ, यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार इन एक-एक प्रकृति की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

मनुष्यगति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध (२९ का बंधस्थान) करनेवाला जीव पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक आंगोपांग, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, त्रस का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । पांच संस्थान (हुंडक बिना), छह संहनन, दो विहायोगति, दो स्वर, सुभग, आदेय का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण का नियम से बंध करता है जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । हुंडक संस्थान, स्थिरादि तीन युगल, दुर्भग, अनादेय का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार मनुष्यगत्यानुपूर्वी की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय जाति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव औदारिक आंगोपांग और त्रस का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी का कदाचित् बंध करता है, यदि बंध करता है तो नियम से संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । शेष प्रकृतियों का भंग मनुष्यगति के सन्निकर्ष के समान है । इसीप्रकार औदारिक आंगोपांग और त्रस की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

उद्योत के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति आदि २५ प्रकृतियों का नियम से संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । (स्थिरादि तीन युगल का कदाचित् बंध करता है । शेष प्रकृतियों का नियम से बंध करता है ।)

तीर्थंकर प्रकृति का भंग नारकियों के समान है ।

इसीप्रकार सौधर्म-ईशान तक जानना चाहिए ।

सनत्कुमार से सहस्रार तक के देवों में - तिर्यंचगति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध(२९ का बंधस्थान) करनेवाला जीव पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, औदारिक आंगोपाग, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । छह संस्थान, छह संहनन, दो विहायोगति, स्थिरादि छह युगल का कदाचित् बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार तिर्यंचगत्यानुपूर्वी का सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी में भी इसीप्रकार जानना चाहिए ।

पंचेन्द्रिय जाति का उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाले जीव में इसीप्रकार जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि दो गति, दो गत्यानुपूर्वी का स्थिरादि युगल के समान भंग है । शेष प्रकृतियों का सन्निकर्ष इसीप्रकार है ।

तीर्थंकर प्रकृति का भंग सामान्य देवों के समान है ।

आनतादि ग्रैवेयक तक के देवों में इसीप्रकार सन्निकर्ष जानना चाहिए, इतनी विशेषता है कि यहां मनुष्यगतिद्विक का ही नियम से बंध होता है ।

अनुदिश, अनुत्तरों में निद्रा के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव शेष पांच दर्शनावरण का नियम से बंध करता है, जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है। इसीप्रकार शेष पांच में से एक-एक की मुख्यता से जानना चाहिए।

अप्रत्याख्यानावरण क्रोध के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव ग्यारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा का नियम से बंध करता है तथा चार नोकषाय का कदाचित् बंध करता है जो उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार ग्यारह कषाय और सात नोकषाय में एक-एक का सन्निकर्ष जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि हास्य के साथ रति का ही बंध है और शोक के साथ अरति का ही बंध है ।

नामकर्म का भंग आनतादि के समान है ।

पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस, त्रस पर्याप्त, पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी

और काययोगी जीवों में ओघ के समान भंग है ।

औदारिककाययोगी जीवों में मनुष्यों के समान भंग है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों में निद्रा निद्रा के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाले जीव स्त्यानगृद्धि, प्रचलाप्रचला का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । छह दर्शनावरण का नियम से बंध करता है, जो नियम से अनंतवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार स्त्यानगृद्धि और प्रचलाप्रचला की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

निद्रा के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव पांच दर्शनावरण का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार पांच दर्शनावरण में से एक-एक की मुख्यता से सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

मोहनीय की प्रकृतियों का नारकियों के समान भंग है ।

नामकर्म की प्रकृतियों का तिर्यंचों के समान भंग है इतनी विशेषता है कि यहां नरकगति का बंध नहीं है । तथा तीर्थंकर प्रकृति के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव देवगति आदि २५ प्रकृतियों का नियम से बंध करता है, जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । स्थिरादि तीन युगल का कदाचित् बंध करता है, जो संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवों में सामान्य देवों के समान भंग है ।

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में सर्वार्थसिद्धि के देवों के समान भंग है; इतनी विशेषता है कि अपनी-अपनी प्रकृतियां कहनी चाहिए।

कार्माणकाययोगी जीवों में औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों के समान भंग है।

स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी जीवों में ओघ के समान भंग है ।

अपगतवेदी जीवों में ओघ के समान भंग है ।

क्रोध कषायवाले जीवों में ओघ के समान भंग है इतनी विशेषता है कि संज्वलन क्रोध के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव तीन संज्वलन का

नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । मिथ्यात्व का उत्कृष्ट बंध करनेवाला जीव चारों संज्वलनों का नियम से बंध करता है जो नियम से दो भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । इसीप्रकार संज्वलन चार बिना मोहनीय की शेष प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध के साथ संज्वलन चार का सन्निकर्ष जानना चाहिए ।

मान कषायवाले जीवों में भी इसीप्रकार जानना चाहिए इतनी विशेषता है कि संज्वलन क्रोध के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव तीन संज्वलन का नियम से बंध करता है, जो नियम से संख्यातवें भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । संज्वलन मान के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव संज्वलन माया और संज्वलन लोभ का नियम से बंध करता है जो नियम से उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है । मिथ्यात्व तथा संज्वलन बिना शेष प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव संज्वलन क्रोध का नियम से बंध करता है जो दो भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है, संज्वलन मान-माया-लोभ का नियम से बंध करता है जो नियम से साधिक डेढ़ भाग हीन अनुत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करता है ।

माया कषायवाले जीवों में मिथ्यात्व के उत्कृष्ट प्रदेशों का बंध करनेवाला जीव अनंतानुबंधी चार का नियम से बंधक है जो...यहां से आगे पुस्तक ६ पृ. १८२ पर पढ़ना - पेरेग्राफ २७८ ।

-0-

महाबंध पुस्तक ७वी पृ. १५० के त्रुटित अंश - भुजगार बंध में अंतरानुगम

(उत्तरप्रकृति प्रदेशबंध में)

विभंगज्ञानी जीवों में ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों के भुजगार और अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है । दो वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, ३ वेद (७ नोकषाय), तिर्यंचगतित्रिक (तिर्यंचगतिद्विक,

नीचगोत्र), पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक आंगोपांग, छह संस्थान, छह संहनन, दो विहायोगति, उद्योत, स्थिरादि छह युगल के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । दो आयु (तिर्यंचायु, मनुष्यायु) के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है । देवायु और नरकायु के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है । (क्योंकि मनुष्य और तिर्यंचों में विभंगज्ञान का काल अंतर्मुहूर्त होता है ।) इसीप्रकार वैक्रियिकषटक्, ३ जाति(द्वी,त्री,चतु), सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त में जानना चाहिए ।

मनुष्यगतित्रिक (मनुष्यगतिद्विक, उच्च गोत्र) के भुजगार, अल्पतर, अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है । अवक्तव्यपद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । औदारिक शरीर, परघात, उच्छ्वास, त्रसचतुष्क के तीन पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त; अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, त्रसचतुष्क, निर्माण, ५ अंतराय, उच्चगोत्र के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर (६६ सागर + ४ पूर्वकोटी) है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है ।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिरादि ३ युगल के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

८ कषायों के भुजगार, अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी है । अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (कुछ कम १ पूर्वकोटी अधिक ३३ सागर)।

दो आयु (मनुष्यायु, देवायु) के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर तथा अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर मनुष्यायु का साधिक ६६ सागर (यथायोग्य कम करना)। देवायु का कुछ कम ६६ सागर (संदर्भ के लिए देखिए पुस्तक ५, पृ. २६५)।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर साधिक एक पूर्वकोटी (अंतर्मुहूर्त अधिक – भुजगार के लिये देव में मरण के पूर्व एक अंतर्मुहूर्त अल्पतर किया, अल्पतर के लिये दोनों ओर अंतर्मुहूर्त बढ़ाना) । अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है । अवक्तव्य का जघन्य अंतर साधिक एक पल्य (देव का एक छोटा भव = साधिक पल्य + मनुष्य का एक छोटा भव वर्षपृथक्त्व), अवक्तव्य का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (३३ सागर – १ समय + १ पूर्वकोटी)।

देवगतिद्विक, वैक्रियिकद्विक के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (उपशमश्रेणी में अंतर शुरु करना) । अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (दो बार उपशमश्रेणी से उतरा) और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (१ पूर्वकोटी + ३३ सागर) है ।

आहारकद्विक के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर

एक समय है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ६६ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति (का भंग ओघ के समान है) के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार, अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । (३३ सागर + कुछ कम दो पूर्वकोटी)। अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (पहले भव में बंध प्रारंभ इसलिए कुछ कम पूर्वकोटी + ३३ सागर + पूर्वकोटी में से तीर्थंकर पद का काल और दो अंतर्मुहूर्त (क्षपक + उपशम श्रेणी के कम करना) । इसीप्रकार अवधिदर्शनी जीवों में जानना चाहिए ।

मनःपर्ययज्ञानी में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, अगुरुलघुचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, त्रसचतुष्क, निर्माण, तीर्थंकर, ५ अंतराय, उच्चगोत्र के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्व कोटी है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्व कोटी है ।

साता, असाता, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिरादि ३ युगल, आहारकद्विक के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

देवायु के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

इसीप्रकार संयत, सामायिक-छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयतों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सामायिक-छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि संयतों

में ध्रुवबंधी प्रकृतियों के अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

सूक्ष्मसाम्परायसंयतों में सब प्रकृतियों के तीनों पदों का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

संयतासंयतों में (परिहारविशुद्धि के समान) ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, प्रत्याख्यान ४, संज्वलन ४ (८ कषाय), भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, ५ अंतराय, उच्चगोत्र के भुजगार, अल्पतर, अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्व कोटी है । तीर्थंकर प्रकृति को छोड़कर शेष प्रकृतियों में अवक्तव्य पद नहीं है, तीर्थंकर प्रकृति के अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है । साता दण्डक और देवायु का भंग मनःपर्ययज्ञानी के समान है ।

असंयतों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, १२ कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और ५ अंतराय के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर जगत्श्रेणी का असंख्यातवां भागप्रमाण है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चतुष्क के भुजगार और अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है । अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन प्रमाण है । स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, ५ संस्थान, ५ संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, उद्योत, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र के भुजगार और अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है । अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी और नीचगोत्र के अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक है । शेष प्रकृतियों के अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

साता दण्डक का भंग ओघ के समान है ।

पुरुषवेद, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेय के तीन पदों का भंग सातावेदनीय के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है ।

४ आयु और वैक्रियिकषट्क का भंग ओघ के समान है । मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र का भंग ओघ के समान है ।

४ जाति, आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण के भुजगार, अल्पतर का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येक के तीन पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है ।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग और वज्रवृषभनाराच संहनन के भुजगार और अल्पतर का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य है । अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर औदारिक शरीर के लिए अनंतकाल और औदारिक आंगोपांग के लिये साधिक ३३ सागर और वज्रवृषभनाराच संहनन के लिए कुछ कम ३३ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार, अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है ।

चक्षुदर्शनी जीवों में त्रस पर्याप्तकों के समान भंग है । अचक्षुदर्शनी जीवों में ओघ के समान भंग है ।

कृष्ण, नील, कापोत लेश्यावाले जीवों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, १२ कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्ण चतुष्क, अगुरुलघु, उपघात,

निर्माण और ५ अंतराय के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर क्रमशः साधिक (अंतर्मुहूर्त अधिक) ३३ सागर, साधिक १७ सागर और साधिक ७ सागर है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चतुष्क, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, उद्योत, ५ संस्थान, ५ संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर क्रमशः कुछ कम ३३ सागर, कुछ कम १७ सागर और कुछ कम ७ सागर है । इतनी विशेषता है कि स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, नपुंसकवेद, हुंडक संस्थान, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के पद का अवस्थित भंग ज्ञानावरण के समान है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र का भंग तिर्यंचगति के समान जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि नील और कापोत लेश्यावाले जीवों में इनके भुजगार और अल्पतर पद का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

पुरुषवेद, समचतुरस्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय के तीन पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर क्रमशः कुछ कम ३३ सागर, कुछ कम १७ सागर, कुछ कम ७ सागर है ।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि ३ युगल के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार, अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर अप्रशस्त प्रकृतियों में ज्ञानावरण के समान है और प्रशस्त प्रकृतियों में स्त्रीवेद के समान जानना । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

नरकगतिद्विक, देवगतिद्विक, ४ जाति, स्थावरचतुष्क, आतप, देवायु, नरकायु का भंग मनोयोगी जीवों के समान है । इतनी विशेषता है कि इनके अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

वैक्रियिक शरीर और वैक्रियिक आंगोपांग के भुजगार, अल्पतर, अवस्थित पद का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार का उत्कृष्ट अंतर क्रमशः साधिक २२ सागर, साधिक १७ सागर और साधिक ७ सागर है (संदर्भ पुस्तक ७, पृष्ठ २६३, २६५)। अल्पतर और अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पदका कृष्णलेश्या में जघन्य अंतर साधिक १७ सागर, उत्कृष्ट अंतर साधिक २२ सागर है; नीललेश्या में जघन्य अंतर साधिक ७ सागर, उत्कृष्ट अंतर साधिक १७ सागर है; कापोतलेश्या में जघन्य अंतर १०००० वर्ष, उत्कृष्ट अंतर साधिक ७ सागर है।

औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर क्रमशः कुछ कम ३३ सागर, कुछ कम १७ सागर और कुछ कम ७ सागर है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक के ३ पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर क्रमशः साधिक ३३ सागर, साधिक १७ सागर, साधिक ७ सागर है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

मनुष्यायु, तिर्यंचायु के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

तीर्थंकर प्रकृति के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है इतनी विशेषता है कि कापोत लेश्या में अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ सागर है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

पीतलेश्यावाले जीवों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, भय, जुगुप्सा, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, निर्माण, ५ अंतराय के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त तथा अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है। इनके अवक्तव्य पद नहीं है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय जाति, उद्योत, ५ संस्थान, ५ संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, स्थावर, आतप, नीचगोत्र के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर साधिक २ सागर है (देव की ढ़ाई सागर में से कुछ कम) ।

८ कषाय (अप्रत्याख्यान ४, प्रत्याख्यान ४), औदारिक शरीर, तीर्थंकर के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर साधिक २ सागर है (एक अंतर्मुहूर्त + देव की आयु) । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

साता वेदनीय, असाता वेदनीय, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि ३ युगल के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार, अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

पुरुषवेद, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, पंचेन्द्रिय जाति, समचतुरस्र संस्थान, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, सुभग, सुस्वर, आदेय, उच्चगोत्र के तीनों पदों का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार, अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है ।

देवायु, आहारकद्विक के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

देवगतिचतुष्क के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार का उत्कृष्ट अंतर साधिक २ सागर, अल्पतर और अवस्थित का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है । मनुष्यायु, तिर्यंचायु के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त, चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छह महिना है ।

इसीप्रकार पद्मलेश्यावाले जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि पंचेन्द्रिय जाति और त्रस का भंग ध्रुवबंधी के समान है । औदारिक आंगोपांग

का भंग औदारिक शरीर के समान है तथा पीतलेश्या में जहां साधिक २ सागर कहा है वहां साधिक १८ सागर जानना ।

शुक्ललेश्यावाले जीवों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, त्रसचतुष्क, निर्माण, तीर्थंकर, ५ अंतराय के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (जानेके पूर्व अंतर्मुहूर्त पहले अवस्थित करके, देव में मरण के समय), अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

८ कषाय, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है। अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चतुष्क, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, ५ संस्थान, ५ संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है । अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर स्त्यानगृद्धित्रिक, मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी ४ में साधिक ३१ सागर (जाने के पहले अंतर्मुहूर्त) तथा शेष प्रकृतियों में कुछ कम ३१ सागर है । इनके अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है ।

साता-असाता, ४ नोकषाय, स्थिरादि ३ युगल के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार, अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त; अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साता, हास्य-रति, स्थिर, शुभ, यशस्कीर्ति में साधिक ३३ सागर, शेष में कुछ कम ३३ सागर है ।

पुरुषवेद, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय है । भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त; अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अतंर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३१ सागर है ।

वज्रवृषभनाराच संहनन के तीन पदों का भंग मनुष्यगति आदि के समान

है तथा अवक्तव्य पद का भंग पुरुषवेद के समान है ।

मनुष्यायु, देवायु और आहारकद्विक का भंग पीतलेश्या के समान है ।

देवगतिचतुष्क के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर; अल्पतर और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर एक समय अधिक १८ सागर और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त अधिक ३३ सागर (उपशमश्रेणी उतरते समय देवगति का बंध प्रारंभ करके मरण करके देव हुआ - जघन्य के लिए एक समय में मरकर १८ सागर + १ समय आयुवाले आनत स्वर्ग में उत्पन्न हुआ और उत्कृष्ट के लिए अंतर्मुहूर्त बाद मरकर ३३ सागर आयुवाले देव में उत्पन्न हुआ - जब मनुष्य में जन्म हुआ तब प्रथम समय में देवगति चतुष्क का बंध प्रारंभ किया । इसतरह अवक्तव्य का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर घटित हुआ) ।

अभव्य जीवों में मत्यज्ञानी जीवों के समान जानना । इतनी विशेषता है कि यहां मिथ्यात्व का अवक्तव्य पद नहीं है, मत्यज्ञानी में अवक्तव्य पद है परंतु उसका अंतर नहीं है ।

सम्यक्त्वमार्गणा में वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु ४, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, ५ अंतराय, उच्चगोत्र के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है ।

साता-असाता, हास्य-रति, अरति-शोक, स्थिरादि ३ युगल के तीन पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

८ कषायों के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम एक पूर्वकोटी, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (३३ सागर + कुछ कम १ पूर्वकोटी) ।

दो आयु (मनुष्यायु, देवायु) के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है ।

मनुष्यगतिपंचक (मनुष्यगतिद्विक, औदारिक शरीरद्विक, वज्रवृषभनाराच संहनन) के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार और अल्पतर पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक (+ १ अंतर्मुहूर्त) १ पूर्वकोटी और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर साधिक १ पल्य (देव का एक छोटा भव साधिक पल्य + वर्षपृथक्त्व मनुष्य का भव), अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (३३ सागर-१ समय + १ पूर्वकोटी)।

देवगतिचतुष्क के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (१ अंतर्मुहूर्त अधिक - भुजगार, अल्पतर के प्रतिस्पर्धी के कारण), अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर साधिक १ पल्य और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर है (१ पूर्वकोटी + ३३ सागर) ।

आहारकद्विक के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय है; अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (३३ सागर + कुछ कम १ पूर्वकोटी) है । अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६६ सागर है ।

तीर्थंकर प्रकृति के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार, अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त और अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (३३ सागर+ कुछ कम २ पूर्वकोटी) है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में ध्रुवबंधी और तीर्थंकर प्रकृतियों के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय; भुजगार और अल्पतर पदों का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (३३ सागर + कुछ कम २ पूर्वकोटी) है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (३३ सागर + कुछ कम २ पूर्वकोटी) है । यह दो उपशम श्रेणी का अंतर है ।

साता दण्डक के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

८ कषायों के भुजगार और अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १ पूर्वकोटी है । अवस्थित और अवक्तव्य पद का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

मनुष्यायु के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ६ महिना है ।

देवायु के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है।

मनुष्यगतिपंचक के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, भुजगार और अल्पतर का उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३३ सागर है । अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

देवगतिचतुष्क और आहारकद्विक के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त (दो बार उपशमश्रेणी से उतरा), चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (देवगति के अवक्तव्य में कुछ कम पूर्वकोटी + ३३ सागर, आहारकद्विक में ३३ सागर + कुछ कम पूर्वकोटी है)।

उपशम सम्यक्त्व में ५ ज्ञानावरण, ६ दर्शनावरण, ४ संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, चार शरीर, समचतुरस्र संस्थान, दो आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, वर्णचतुष्क, दो आनुपूर्वी, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त विहायोगति, त्रसचतुष्क, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और ५ अंतराय के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है। अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

साता-असाता, ८ कषाय, ४ नोकषाय, आहारकद्विक और स्थिरादि ३ युगल के तीन पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । (८ कषाय - उपशम श्रेणी उतरते हुए ६ ठे से ४ में आनेपर बंध प्रारंभ फिर ७ वे में जाकर मरकर देव में जानेपर दुबारा

बंध प्रारंभ हुआ इसतरह दो बार अवक्तव्य)।

सासादन सम्यक्त्व में सभी प्रकृतियों के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ध्रुवबंधी प्रकृतियों में अवक्तव्य पद ही नहीं है तथा शेष प्रकृतियों में अवक्तव्य पद का अंतर नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों में सभी प्रकृतियों के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । ध्रुवबंधी बिना शेष प्रकृतियों में (साता आदि में) अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

मिथ्यादृष्टियों का भंग अभव्य जीवों के समान है ।

संज्ञीमार्गणा में संज्ञी जीवों में पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों के समान भंग है ।

असंज्ञी जीवों में ध्रुवबंधवाली प्रकृतियों में भुजगार और अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद का भंग ओघ के समान है ।

दो वेदनीय, सात नोकषाय, पांच जाति, छह संस्थान, औदारिक आंगोपांग, छह संहनन, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, दो विहायोगति, त्रसादि ४ युगल, स्थिरादि ६ युगल के तीन पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है ।

चार आयु, वैक्रियिक छह और मनुष्यगतित्रिक का भंग सामान्य तिर्यंचों के समान है । (दे.म.न. आयु में तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम १/३ पूर्वकोटी है। तिर्यंचायु के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर १/३ पूर्वकोटी + कुछ कम १ पूर्वकोटी है । मनुष्यगति के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक प्रमाण है । वैक्रियिकषटक् के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल (असंख्यात पुद्गल परावर्तन)) है ।

तिर्यंचगतित्रिक (तिर्यंचगतिद्विक + नीचगोत्र) के तीन पदों का भंग ज्ञानावरण

के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर असंख्यातलोक प्रमाण (ओघ के समान) है ।

औदारिक शरीर के तीन पदों का भंग सातावेदनीय के समान है । अवक्तव्य पद का भंग ओघ के समान है (जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल)।

आहारकों में पांच ज्ञानावरणादि दण्डक का भंग ओघ के समान है; इतनी विशेषता है कि अवस्थित पद और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

स्त्यानगृद्धि दण्डक के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । भुजगार और अल्पतर पदों का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर प्रमाण है । अवस्थित और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

सातावेदनीय दण्डक का भंग ओघ के समान है; इतनी विशेषता है कि अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

आठ कषायों के भुजगार और अल्पतर पदों का भंग ओघ के समान है तथा अवस्थित और अवक्तव्य पदों का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

स्त्रीवेद के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतमुहूर्त है । भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य का उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो छासठ सागर, अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है (अंगुल का असंख्यातवां भाग) ।

पुरुषवेद का भंग ओघ के समान है, मात्र अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

नपुंसकवेद, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेय के भुजगार और अल्पतर पदों का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर है । अवस्थितपद का भंग ज्ञानावरण के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य अधिक दो छासठ सागर है ।

तीन आयु (मनुष्य, देव, नारक), वैक्रियिक छह, मनुष्यगतित्रिक, आहारकद्विक के तीन पदों का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पदका जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है, चारों पदों का उत्कृष्ट अंतर अंगुल के संख्यातवें भागप्रमाण है ।

तिर्यंचायु का भंग ओघ के समान है, इतनी विशेषता है कि अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

तिर्यंचगतित्रिक के भुजगार और अल्पतर पदों का भंग ओघ के समान है (उत्कृष्ट अंतर १६३ सागर) । अवस्थित और अवक्तव्य पद का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

चार जाति, आतप, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित का जघन्य अंतर एक समय, अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है । भुजगार, अल्पतर और अवक्तव्य पद का उत्कृष्ट अंतर एकसौ पचासि सागर है । अवस्थित पद का उत्कृष्ट अंतर ज्ञानावरण के समान है ।

पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास और त्रसचतुष्क के भुजगार और अल्पतर का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर एकसौ पचासि सागर है । अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

औदारिक शरीर के भुजगार और अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३ पल्य (कुछ कम १/३ पूर्वकोटी + ३ पल्य) है । अवस्थित और अवक्तव्य पद का भंग ज्ञानावरण के समान है ।

समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेय के भुजगार और अल्पतर पद का जघन्य अंतर एक समय, उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । अवस्थित पद का भंग ज्ञानावरण के समान (१ समय से अंगुल का असंख्यातवां भाग) है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम ३ पल्य अधिक दो छासठ सागर है ।

औदारिक आंगोपांग और वज्रवृषभनाराच संहनन के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित का भंग औदारिक शरीर के समान है । अवक्तव्य पद का जघन्य अंतर अंतर्मुहुर्त और उत्कृष्ट अंतर साधिक ३३ सागर (३३ सागर-१ समय +

१ पूर्वकोटी) है ।

तीर्थंकर प्रकृति का भंग ओघ के समान है ।

अनाहारक जीवों में कार्माणकाययोगियों के समान भंग है ।

इसप्रकार अन्तरानुगम समाप्त हुआ ।

–0–

नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचयानुगम

(उत्तरप्रकृति प्रदेशबंध के भुजगारबंध में; संदर्भ पुस्तक ५, पृष्ठ २७६)

नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और ५ अंतराय के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद के बंधक जीव नियम से हैं । कदाचित् ये अनेक जीव हैं और एक अवक्तव्य पद का बंधक जीव है । कदाचित् ये अनेक जीव हैं और अनेक अवक्तव्य पद के बंधक जीव हैं ।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, सात नोकषाय, तिर्यंचायु, दो गति (मनु. ति.), पांच जाति, छह संस्थान, औदारिक आंगोपांग, छह संहनन, दो आनुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, दो विहायोगति, त्रसादि दस युगल और दो गोत्र के भुजगार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य पद के बंधक जीव नियम से हैं।

तीन आयु के सब पद भजनीय हैं ।

वैक्रियिक छह, आहारकद्विक, तीर्थंकर के भुजगार और अल्पतर पद के बंधक जीव नियम से हैं । अवस्थित और अवक्तव्य पद भजनीय हैं ।

इसप्रकार ओघ के समान काययोगी, औदारिक काययोगी, अचक्षुदर्शनी, भव्य और आहारक जीवों में जानना चाहिए ।

आदेश से नारकियों में ध्रुवबंधी प्रकृतियों के भुजगार और अल्पतर पद

के बंधक जीव नियम से हैं । कदाचित् ये अनेक जीव हैं और एक अवस्थित पद का बंधक जीव है । कदाचित् ये अनेक जीव हैं और अनेक अवस्थित पद के बंधक जीव हैं । शेष सभी प्रकृतियों के भंग ध्रुवबंधी के समान है। इतनी विशेषता है कि अवस्थित और अवक्तव्य पद भजनीय हैं । दोनों आयु के सब पद भजनीय हैं ।

इसीप्रकार सब नारकी, सब पंचेन्द्रिय तिर्यंच, देव, विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, त्रस अपर्याप्त, बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त, बादर अग्निकायिक पर्याप्त, बादर वायुकायिक पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त, वैक्रियिक काययोगी, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, विभंगज्ञानी, सामायिक और छेदोपस्थापनासंयत, परिहारविशुद्धिसंयत, संयतासंयत, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और वेदकसम्यग्दृष्टि जीवों के जानना चाहिए ।

तिर्यंचों में ध्रुवबंधी प्रकृतियों के भुजगार, अल्पतर और अवस्थित पद के बंधक जीव नियम से हैं । शेष प्रकृतियों का भंग ओघ के समान है ।

इसी प्रकार औदारिकमिश्र काययोगी, कार्माण काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, ३ अशुभ लेश्यावाले, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी और अनाहारक जीवों में जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि औदारिकमिश्र-काययोगी, कार्माणकाययोगी और अनाहारक जीवों में देवगतिपंचक के सब पद भजनीय हैं ।

मनुष्यों में सब प्रकृतियों के भुजगार और अल्पतर पद के बंधक जीव नियम से हैं । शेष पद (अवस्थित, अवक्तव्य) भजनीय हैं । चारों आयुओं के सब पद भजनीय हैं । इसीप्रकार सब मनुष्य, पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस, त्रस पर्याप्त, पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, संयत, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, शुक्ललेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवों के जानना चाहिए ।

मनुष्य अपर्याप्तकों में सब प्रकृतियों के सब पद भजनीय हैं । इसीप्रकार वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारककाययोगी, आहारकमिश्रकाययोगी, अपगतवेदी, सूक्ष्मसाम्पराय-संयत, उपशम सम्यग्दृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों के जानना

चाहिए ।

सब एकेन्द्रिय, पृथ्वीकायिक तथा इनके बादर और बादर अपर्याप्त जीवों में मनुष्यायु का भंग ओघ के समान है (सब पद भजनीय हैं) । शेष प्रकृतियों के सब पदवाले जीव नियम से हैं । इसीप्रकार जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक तथा इनके बादर और बादर अपर्याप्त तथा सब सूक्ष्म, सब वनस्पतिकायिक, निगोद और बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवों के जानना चाहिए ।

इसीप्रकार नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

–0–

भागाभागानुगम

(उत्तरप्रकृति प्रदेशबंध के भुजगारबंध में)

(संदर्भ – पुस्तक ५, पृष्ठ २७८ तथा पुस्तक ६, पृष्ठ ६६)

भागाभागानुगम की अपेक्षा निर्देश दो प्रकार का है – ओघ और आदेश।

ओघ से ५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक शरीर, तेजस शरीर, कार्माण शरीर, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और ५ अंतराय के भुजगार पद के बंधक जीव सब जीवों के कितने भागप्रमाण हैं ? साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं । अल्पतर पद के बंधक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण है । अवस्थित पद के बंधक जीव सब जीवों के असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । अवक्तव्य पद के बंधक जीव सब जीवों के अनंतवें भागप्रमाण हैं ।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, सात नोकषाय, चार आयु, चार गति, ५ जाति, वैक्रियिक शरीर, छह संस्थान, औदारिक आंगोपांग, वैक्रियिक आंगोपांग, छह संहनन, ४ आनुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, दो विहायोगति, त्रसादि दस युगल, तीर्थंकर और दो गोत्र के भुजगार पद के बंधक जीव सब जीवों के साधिक द्वितीय भागप्रमाण हैं । अल्पतर पद के बंधक जीव कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण हैं । अवस्थित और अवक्तव्य पद के बंधक जीव असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

इसीप्रकार आहारकद्विक का भंग है, इतनी विशेषता है कि अवस्थित और अवक्तव्य पद के बंधक जीव संख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

इसीप्रकार ओघ के समान सामान्य तिर्यंच, काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधादि चार कषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, तीन अशुभ लेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी और आहारक जीवों के जानना चाहिए । इन मार्गणाओं में जो कुछ विशेषता है वह जान लेना चाहिए । औदारिकमिश्रकाययोगी जीवों में देवगतिपंचक का भागाभाग नहीं है । औदारिककाययोगी जीवों में तीर्थंकर प्रकृति का भंग आहारक शरीर के समान है ।

शेष नरकगति आदि से लेकर संज्ञी तक जो असंख्यात और अनंत जीवों के बंधनेवाली प्रकृतियां हैं उनका भंग ओघ से सातावेदनीय के समान है तथा जो संख्यात जीवों के बंधनेवाली प्रकृतियां है उनका भंग ओघ से आहारक शरीर के समान है ।

इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारकमिश्रकाययोगी जीवों में भागाभाग नहीं है । कार्माणकाययोगी और अनाहारक जीवों में वैक्रियिकमिश्र (काययोगी) के समान भंग है ।

आगे पुस्तक में –

इसप्रकार इस बीजपद के अनुसार अनाहारक मार्गणा तक जान लेना चाहिए।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त होता है ।

–0–

इसप्रकार महाबंध के त्रुटित अंशों का कथन समाप्त होता है ।

*****